सत्यमेव जयते

सोनार बांग्ला

20 वां अंक
(2025-2026)

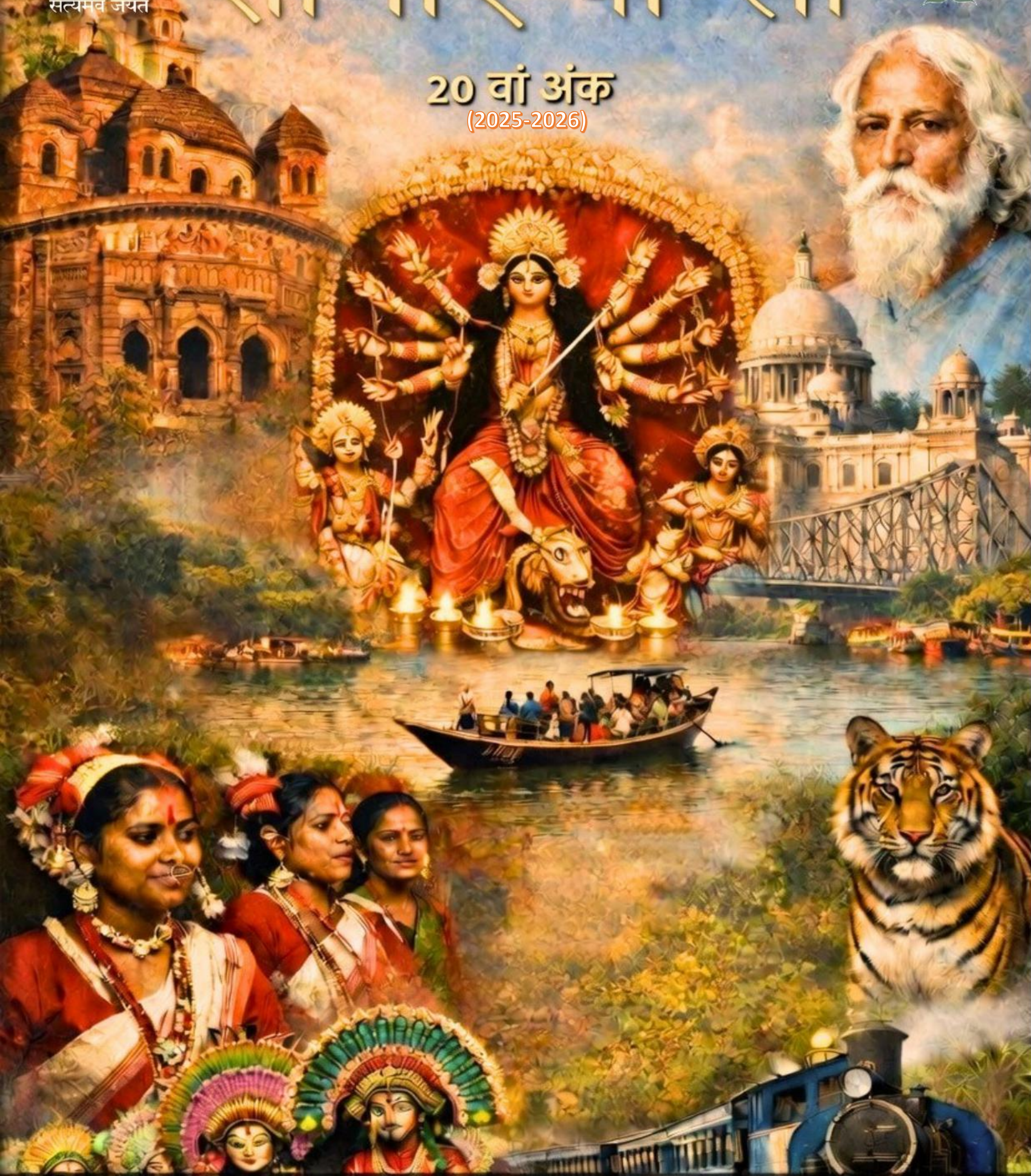

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल, कोलकाता

एवं स्थानीय लेखापरीक्षा विभाग

'सोनार बांग्ला' परिवार

संरक्षक

श्री विभुदत्त बसंतिया

प्रधान महालेखाकार

परामर्शदात्री समिति

श्री अवनीन्द्र कुमार राय, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं ए.एम.जी.-I, II एवं III/नॉन-एल.ए.डी.)

श्री श्रीराज मधुकर वाणी, उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-III, IV/स्था.ले.प.विभाग)

संपादक मंडल

संपादक

सुश्री प्रियदर्शिनी सिंह, सहायक निदेशक (राजभाषा)

राजभाषा परिवार

श्री शंकर लाल सरकार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

सुश्री राजलक्ष्मी गांगुली, वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री अन्नपूर्णा वर्मा, वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री गुंजा कुमारी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्री प्रमोद कुमार दास, कनिष्ठ अनुवादक

श्री रवि पासवान, कनिष्ठ अनुवादक

श्री किशन राम, कनिष्ठ अनुवादक

श्री राहुल चौधरी, कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री प्रिया साव, कनिष्ठ अनुवादक

श्री विवेक कुमार साव, कनिष्ठ अनुवादक

श्री धर्मेन्द्र कुमार, आंकड़ा प्रविष्टी संचालक

लेख जांच एवं पुनरीक्षण समिति के सदस्य

श्री शंकर लाल सरकार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

श्री कल्लोल घोष, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री गौरव कुमार मिश्र, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सुश्री प्रियदर्शिनी सिंह, सहायक निदेशक (रा.भा.)

डिजाइनिंग और लेआउट

श्री धर्मेन्द्र कुमार, आंकड़ा प्रविष्टी संचालक

अस्वीकरण

लेखक/रचनाकारों के विचार उनके निजी विचार हैं। उनके विचारों से मुख्य संरक्षक/संरक्षक/लेख जांच एवं पुनरीक्षण समिति/संपादन मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मुख्य आवरण एवं अन्य पृष्ठः (इंटरनेट से साभार)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचनाओं के नाम	रचनाकार (श्री/सुश्री/श्रीमती)	पृष्ठ संख्या
1	टेराकोटा का महाकाव्य-विष्णुपुर	अवनीन्द्र कुमार राय, वरिष्ठ उप महालेखाकार	06
2.	महालेखाकार कार्यालयों में AuditOnline, VAS एवं OIOS	ज़की अहमद, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	09
3.	भारत में लोक नीति और शासन पर नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक प्रतिवेदन का प्रभाव	शिबेंदू कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	13
4.	एक राष्ट्रः एक ई-एच.आर.एम.एस.	शुभ्रा दास, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	17
5.	अर्पिता माँ और मेरी यादें	चंदन कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	19
6.	पारंपरिक टोटोपारा	शंकर लाल सरकार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	22
7.	कार्यालय परिसर में धूम्रपान की समस्या और उसके दुष्परिणाम	पंकज कुमार सिंहा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	25
8.	दिल से दिल तक	प्रियदर्शिनी सिंह, सहायक निदेशक (रा.भा.)	27
9.	सरकारी दफ्तर	अन्नपूर्ना वर्मा, वरिष्ठ अनुवादक	30
10.	जोखिम और उसके प्रभाव	अर्जुन मंडल, लेखापरीक्षक	32
11.	कृत्रिम बुद्धिमता (ए.आई.) मित्र या शत्रु	शिलादित्य सिन्हा, लेखापरीक्षक	36
12.	सीख देने वाली कविता	सुबाष प्रसाद, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	41
13.	उड़ान	प्रमोद कुमार दास, कनिष्ठ अनुवादक	42
14.	अरावली	धर्मेंद्र कुमार, आंकड़ा प्रविष्टि संचालक	47
15.	देश की विविधता में एकता	अयन दास, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	51
16.	प्रगति की परछाई	अभय कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	55
17.	वो बचपन के दिन	किशन राम, कनिष्ठ अनुवादक	57
18.	देख ऐसा लगता है	अमरेश कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	62
19.	बदलाव जीवन और संतुलन	रवि पासवान, कनिष्ठ अनुवादक	65
20.	जीवन असफलता और सीख	अस्मिता तिवारी, लेखापरीक्षक	69
21.	यदि तुम	शुभजीत रॉय, लेखापरीक्षक	73
22.	मेरी पहली तैनाती, एक अविस्मरणीय यात्रा	राहुल चौधरी, कनिष्ठ अनुवादक	74
23.	रिटायरमेंट	विवेक कुमार साव, कनिष्ठ अनुवादक	78
24.	मक्खन नहीं मेहनत से मान बढ़ाएं हम	संदीप कुमार, सहायक पर्यवेक्षक	81
25.	कामकाजी महिला के लिए कार्य-जीवन संतुलन का महत्व	प्रिया साव, कनिष्ठ अनुवादक	82
26.	आई.सी.सी. महिला क्रिकेट टीम वर्ल्ड कप फाइनल 2025	गुंजा कुमारी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	85
27.	शतरंज का रोमांच	रौनक राय, लेखापरीक्षक	88

श्री विभुदत्त बसंतिया

प्रधान महालेखाकार का संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि इस कार्यालय की छमाही हिंदी पत्रिका **'सोनार बांग्ला'** का 20वाँ अंक प्रकाशित हो रहा है। इस अवसर पर मैं समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

विभागीय पत्रिका का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति स्नेह, उत्साह एवं रुचि उत्पन्न करना है। यह पत्रिका न केवल सृजनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्ति देने का सशक्त माध्यम है, बल्कि कार्यालय की विविध गतिविधियों से सभी को अवगत कराने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मैं सभी रचनाकारों तथा संपादक मंडल के सदस्यों के समर्पित प्रयासों की सराहना करता हूँ, जिनके सहयोग से यह अंक उत्कृष्ट स्वरूप में प्रकाशित हो सका है।

मुझे विश्वास है कि **'सोनार बांग्ला'** भविष्य में भी इसी प्रकार निरंतर प्रगति करती रहेगी और राजभाषा हिंदी के संवर्धन में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती रहेगी।

आप सभी को इस अंक के सफल प्रकाशन पर पुनः हार्दिक बधाई।

शुभकामनाओं सहित,

श्री विभुदत्त बसंतिया

प्रधान महालेखाकार

श्री अवनीन्द्र कुमार राय

वरिष्ठ उप महालेखाकार का संदेश

इस कार्यालय की हिंदी पत्रिका '**सोनार बांग्ला**' के 20वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका में राजभाषा हिंदी में रचित लेख, कहानियाँ, कविताएँ आदि अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा हिंदी भाषा के संवर्धन एवं प्रसार के लिए किए जा रहे सराहनीय प्रयास को प्रतिबिंबित करते हैं।

पत्रिका के निरंतर प्रकाशन से यह स्पष्ट है कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रुचि निरंतर बढ़ रही है।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी की प्रगति में सहायक सिद्ध होगी तथा कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को और अधिक प्रोत्साहन प्रदान करेगी।

पत्रिका के सफल एवं सतत प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्री अवनीन्द्र कुमार राय

वरिष्ठ उप महालेखाकार

(प्रशासन एवं ए.एम.जी.-I, II एवं III/नॉन-एल.ए.डी.)

श्री श्रीराज मधुकर वाणी

उप महालेखाकार का संदेश

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष एवं गर्व हो रहा है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "सोनार बांग्ला" 2026 का 20वां अंक प्रकाशित हो रहा है। यह केवल एक पत्रिका नहीं बल्कि हमारे कार्यालय परिवार के सहकर्मियों के विचारों, अनुभवों और रचनात्मक लेखन का संकलन है। कार्यालयीन कार्यों और निजी जीवन की व्यस्तताओं से समय निकालते हुए कर्मचारियों ने अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है जो कि प्रशंसनीय है। इस पत्रिका की रचनाएँ कभी हंसाएंगी, तो कभी ज्ञानवर्धन करेगी, तो कभी-कभी सहृदय पाठकों को स्वयं से जोड़ लेंगी, क्योंकि रचनाओं के मूल में प्रेम है...! भावना है...! यर्थाथ है...!

वर्ष 2026 का यह विशेष अंक न केवल हमारी उपलब्धियों को संजोए हुए है, बल्कि भविष्य की नई संभावनाओं और संकल्पों की झलक हमारे कार्यालय के समावेशी परिचय को दर्शाती है। आशा है कि यह अंक सभी पाठकों को प्रेरित करेगा और हमारे कार्य संस्कृति को और अधिक सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

धन्यवाद सहित।

श्री श्रीराज मधुकर वाणी

उप महालेखाकार

(ए.एम.जी.- III, IV / स्था.ले.प.विभाग,)

संपादकीय

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) 1, पश्चिम बंगाल एवं स्थानीय लेखा परीक्षा विभाग की संयुक्त पत्रिका “सोनार बांग्ला” के 20वें अंक के प्रकाशन के पावन अवसर पर हम सभी हर्ष, गर्व और आत्मसंतोष का अनुभव कर रहे हैं।

पश्चिम बंगाल हिंदीतर भाषी क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद हिन्दी भाषा के प्रति जो आत्मीयता, सम्मान और प्रेम हमारे कार्यालय परिवार ने निरंतर प्रदर्शित किया है, वह वास्तव में प्रेरणास्पद है। “सोनार बांग्ला” का प्रत्येक अंक इस बात का सशक्त प्रमाण है कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि भावनाओं, संस्कारों और राष्ट्रीय एकता का सेतु है।

हमारा कार्यालय जहाँ एक ओर अपने दायित्वों–लेखापरीक्षा, वित्तीय अनुशासन और पारदर्शिता–का निर्वहन पूर्ण निष्ठा एवं दक्षता के साथ करता है, वहीं दूसरी ओर अपने भावात्मक, साहित्यिक और रचनात्मक पक्ष को भी समान महत्व देता है। यह संतुलन ही हमारी विशिष्ट पहचान है। सरकारी कार्यों की गंभीरता के बीच साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिए समय निकालना हमारे कर्मियों की संवेदनशीलता और बहुआयामी प्रतिभा को दर्शाता है।

“सोनार बांग्ला” का 20वाँ अंक इस दीर्घ साहित्यिक यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। इन वर्षों में पत्रिका ने न केवल हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया है, बल्कि कार्यालय परिवार के सदस्यों को अपनी लेखनी के माध्यम से कविता, कहानी, संस्मरण, लेख और विचार साझा करने का सशक्त पटल भी प्रदान किया है।

इस विशेष अवसर पर हम उन सभी रचनाकारों, संपादकीय मंडल के सदस्यों और सहयोगियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं, जिनके निरंतर प्रयासों से यह अंक संभव हो सका। उनकी सृजनशीलता और समर्पण ही इस पत्रिका की वास्तविक शक्ति है।

आप सभी को इस गौरवपूर्ण अवसर की हार्दिक शुभकामनाएँ।

-सुश्री प्रियदर्शिनी सिंह
सहायक निदेशक (राजभाषा)

आपके पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग
एम.जी.रोड, सचिवालय हिल्स, गवर्नर हाउस के सामने, पिन–793001
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) MEGHALAYA, SHILLONG
MG Road, Secretariat Hills, Opposite to Governor House, PIN-793001

संख्या/हिंदीप्रकोष्ठ/35/पत्रिका से संबंधित सराहना/2021/626 दिनांक: 03.02.2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
पश्चिम बंगाल का कार्यालय,
कोलकाता - 700 001.

विषयः- हिंदी पत्रिका - **'सोनार बांग्ला'** के 19वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषय पर पत्र सं. रा.भा.अनु./सोनार बांग्ला/खंड-II/212 दिनांक 02.12.2025 द्वारा आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका - **'सोनार बांग्ला'** के 19वें अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, एतद् धन्यवाद। पत्रिका का बाह्य आवरण अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख एवं रचनाएँ ज्ञानवर्धक, प्रेरक तथा प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन के लिए संपादक मंडल, लेखकों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका - **'सोनार बांग्ला'** के अग्रिम अंक तथा इसके निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल
Indian Audit & Accounts Department
Accountant General (A & E), West Bengal

संख्या/No. रा. अ/पत्रिका प्रतिभाव/**2025-26/163** **दिनांक: 06 .02.2026**

सेवा में,

सहायक निदेशक, (राजभाषा)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)

पश्चिम बंगाल- 700 001

विषय: छमाही हिन्दी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के 19 वें अंक के प्रतिभाव प्रेषित करने के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित छमाही हिन्दी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के 19 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका कि साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ हमेशा की तरह मनोहक है। पत्रिका की सभी रचनाएं पठनीय, उच्च कोटी के एवं ज्ञानवर्धक हैं।

इसमें तकनीक (AI, Digital India) से लेकर स्वास्थ्य (Mental Health) और पर्यावरण (Climate Change) तक के विषयों को समाहित किया गया है।

अकादमिक और रचनात्मक संगम: जहाँ एक ओर ऑडिटिंग में AI जैसे गंभीर विषय हैं, वहीं दूसरी ओर 'कल्पित आस्था' और 'माँ ही गुरु है' जैसी रचनात्मक रचनाएँ भी हैं।

लेखकों में उप महालेखाकार, सहायक निदेशक (राजभाषा) और वरिष्ठ अनुवादक शामिल हैं, जो सामग्री की गुणवत्ता और प्रमाणिकता को दर्शाते हैं।

समग्र रूप से, यह पत्रिका न केवल ज्ञानवर्धन करती है, बल्कि पाठकों को आधुनिक तकनीक (AI) से जोड़ते हुए अपनी सांस्कृतिक जड़ों और सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति भी जागरूक करती है।

भवदीय,

सहायक निदेशक(राजभाषा)

ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2 गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता, पश्चिम बंगाल, पीन -700001
Treasury Buildings,2 Government Place(West), Kolkata, West Bengal, PIN -700001
Phone No (033) 2213-8000 :: FAX (033) 2248-7849
e-Mail: agaewestbengal@cag.gov.in :: Website: https://cag.gov.in/ae/west-bengal/en

Digitally signed by
Arun Kumar
Date: 09-02-20
13:23:53

लय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ
तृतीय तल, ऑडिट भवन, टीसी–35–वी–1,
विभूति खंड, गोमती नगर,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश - 226 010

Office of the Principal Director of Audit (Central), Lucknow
III[rd] Floor, Audit Bhawan, TC-35-V-1,
Vibhuti Khand, Gomti Nagar,
Lucknow, Uttar Pradesh - 226 010

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक सं.: प्र.म.नि.(के.)/प्रशासन/रा.भा.हि./फा.सं. **82047/2025-26/I/1287283/2026**

दिनांक:**23-01-2026**

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल

ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता- 700001

विषय - राजभाषा पत्रिका "सोनार बांग्ला" के 19वें अंक की ई-प्रति के सम्बन्ध में।

आदरणीय महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका "सोनार बांग्ला" के 19वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद | पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है |

पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर **"पृथ्वी की पुकार"**, **"तैयारी- जीत की"** एवं **"मंजिल अभी दूर है"** अत्यंत सारगर्भित एवं सराहनीय हैं| पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Rajesh Kumar Swyambhu
Date: 23-01-2026
17:22:03

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /प्रशासन

Phone: 0522-2970789, 2989000 Fax: 0522-2970780 Email: pdaclucknow@cag.g

---

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, झारखण्ड, राँची
Office of the Principal Accountant General (Audit), Jharkhand, Ranchi

संख्या- रा.भा.अनु./ले.प./90/पत्रिका पावती/2025-26/241 दिनांक:09-01-2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) पश्चिम बंगाल का कार्यालय,
ट्रेज़री बिल्डिंग्स, 2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता- 700001.

विषयः अर्ध-वार्षिक हिंदी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के 19वें अंक की ई-प्रति की पावती का प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के 19वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं आंतरिक पृष्ठ बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक है एवं मुद्रण कार्य उच्च स्तरीय है। साथ ही, पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक प्रकृति की हैं।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Shailendra Kumar
Date: 09-01-2026
12:35:19

सहायक निदेशक (राजभाषा)

दूरभाष/Telephone: 0651-2411670/2413690 फैक्स/Fax: 0651-2412517/2413701 ई-मेल/e-mail: agaujharkhand@cag

टेराकोटा का महाकाव्य - बिष्णुपुर

श्री अवनीन्द्र कुमार राय
वरिष्ठ उपमहालेखाकार

बिष्णुपुर न केवल बंगाल बल्कि भारतीय संस्कृति का भी एक अनूठा उदाहरण है। एक समय यह राज्य मल्लाभूम के नाम से जाना जाता था, जो मल्लाभूमि की राजधानी थी और इसमें बांकुरा, मेदिनीपुर और बर्दवान के विशाल क्षेत्र शामिल थे। बिष्णुपुर, जो समय के साथ प्राचीन बंगाल की कला और संस्कृति का उद्गम स्थल बन गया है, आज भी अपनी अनूठी विशेषताओं के साथ चमक रहा है।

बिष्णुपुर का रसमंच

मंदिर नगर बिष्णुपुर का रसमंच में प्रवेश करते ही आप इसकी स्थापत्य विशेषताओं से चकित हो जाएंगे। मल्लवज वंश के सबसे प्रसिद्ध पुरुष योद्धा बीर हम्बी द्वारा निर्मित रसमंच पर कोई शिलालेख नहीं है। इतिहासकारों का अनुमान है कि इसका निर्माण 1587 और 1600 ईस्वी के बीच हुआ था। लाल ईंटों से बनी यह संरचना मकरा पत्थर से बने एक वर्गाकार वेदी पर निर्मित है, जिसकी ऊंचाई 1.6 मीटर और परिधि 24.6 मीटर है। सीढ़ीदार पिरामिडनुमा छत और गर्भगृह के चारों ओर तीन चौड़ाई वाले मेहराबदार आंगन रसमंच को एक विशिष्ट रूप प्रदान करते हैं। संपूर्ण मंदिर 10.7 मीटर की ऊंचाई तक उठता है और एक छोटी सपाट छत से जुड़ा हुआ है। रसमंच पर कोई भी मूर्ति स्थायी रूप से स्थापित नहीं थी। रास उत्सव के दौरान राजमहल से राधा कृष्ण, महाप्रभु और जगन्नाथ देव की 108 मूर्तियाँ यहाँ लाई जाती थीं। 108 द्वारों को 108 घी के दीयों से रोशन किया गया था। इस उत्सव में 108 ब्राह्मणों और 108 सेबैत ने भाग लिया।

सूर्योदय की पहली किरण में श्यामराई मंदिर सोने की तरह चमकता है। शानदार स्थापत्य विशेषताओं के साथ-साथ, टेराकोटा की सजावट की अंतहीन और आश्चर्यजनक प्रचुरता और इसकी नाजुक सुंदरता पहली नजर में ही आगंतुक को मोहित कर लेती है। श्यामराई मंदिर पंचरत्न या पांच शिखर वाले मंदिरों में सर्वश्रेष्ठ है। ईंटों से बना यह विशाल मंदिर 11.4 मीटर लंबा और चौड़ा है और 10.7 मीटर ऊंचा है, जो एक वर्गाकार नींव पर निर्मित है। बंगाल के चार-चाला की छत के चारों ओर ढलान हैं और बीच में एक ऊँचा शिखर है। बीच का शिखर एक अष्टभुज पर बना

गुंबद है। मंदिर की ढलान वाली छत मंदिर की खूबसूरत टेराकोटा कलाकृतियों को बारिश के पानी से बचाती है और साथ ही मेहराबों के माध्यम से छत का भार जमीन पर स्थानांतरित करती है। मंदिर के चारों ओर तीन मेहराबों वाले चार प्रवेश द्वार हैं। हर जगह की लयबद्ध टेराकोटा नक्काशी किसी महाकाव्य कविता की सिम्फनी की तरह लगती है। बाहरी और भीतरी दीवारें, मेहराबों के किनारे, तल और यहाँ तक कि छत के नीचे का फर्श भी मूर्तियों से सजा हुआ है। कलाकार का हाथ हर जगह पहुँच चुका है, चाहे नज़र उस पर पड़े या न पड़े।

श्यामराई मंदिर

श्यामराई मंदिर की टेराकोटा की मूर्तियां मंत्रमुग्ध करती हैं। उत्तरी मेहराब की दीवार पर रामायण और महाभारत के युद्धों को दर्शाया गया है और अंदर के प्रांगण में महामाया के विभिन्न रूप मौजूद हैं। सुंदर टेराकोटा मूर्तियां बिष्णुपुर की मशहूर बालूचरी साड़ियों की याद दिलाती है। बालूचरी साड़ी के निचले हिस्से पर यह टेराकोटा मूर्ति बनी हुई है। पश्चिमी मेहराब में राजस्थानी शैली में निर्मित एक नकली दरवाजा है। इसमें सीता की अग्नि परीक्षा की एक मूर्ति स्थापित है। दक्षिणी मेहराब को लायन गेट कहा जाता है। मेहराब के दोनों ओर दो रस चक्र हैं। एक गोलाकार पदक के आकार की मूर्ति में भगवान कृष्ण को चौंसठ गोपियों से घिरा हुआ दर्शाया गया है। यह रस-लती कलाकार की असाधारण कलात्मक प्रतिभा और कौशल का प्रतीक है।

राम और रावण का युद्ध

सीता की अग्निपरीक्षा

जोरबंगला मंदिर, श्यामराई मंदिर के समकालीन है फिर भी इन दोनों मंदिरों की स्थापत्य शैली एक दूसरे से बहुत अलग है। एक ऊंचे वर्गाकार आधार पर दो-दो मंजिला मंदिर भवन साथ ही साथ बनाए गए हैं, जिनके ऊपर एक चार मंजिला शिखर बनाया गया है। दक्षिणमुखी वर्गाकार नींव पर निर्मित इस मंदिर की लंबाई और चौड़ाई 11.8 मीटर और ऊंचाई 11.7 मीटर है, जो श्यामराई मंदिर के समान है। 1655 ईस्वी में रघुनाथ सिंह द्वारा निर्मित, मंदिर की पूरी दीवारें श्यामराई की तरह टेराकोटा की मूर्तियों से ढकी हुई हैं। टेराकोटा की मूर्तियों की सुंदरता सचमुच विस्मयकारी है। दीवारें टेराकोटा की पट्टियों की पंक्तियों से सजी हैं जिन्हें लंबवत, समानांतर और तिरछे रूप से व्यवस्थित किया गया है। यह उस समय के सामाजिक जीवन, पौराणिक कथाओं, रामायण और महाभारत की विभिन्न घटनाओं और ज्यामितीय और पुष्प डिजाइनों का एक शोरूम जैसा है। मंदिरों को देखते समय एक बात पर्यटक के मन में आती है कि उस युग के कलाकार ईंटों पर टेराकोटा की इन छवियों को कैसे चित्रित करते थे। किसी चमत्कार की तरह पांच सौ साल बाद भी टेराकोटा की ये पट्टियाँ बरकरार हैं और पर्यटकों का मनोरंजन करती रहती हैं।

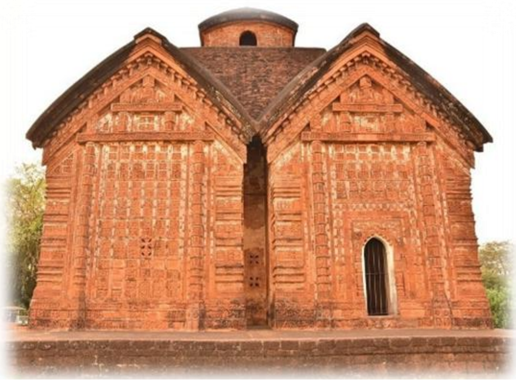

जोर बांग्ला मंदिर

"हिंदी हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान की भाषा है।"

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

<u>महालेखाकार कार्यालयों में AuditOnline, VAS एवं OIOS</u>

- **<u>भूमिका:-</u>**

श्री ज़की अहमद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने शासन, वित्तीय प्रबंधन तथा सार्वजनिक जवाबदेही के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन लाया है। सरकारी लेखापरीक्षा, जो परंपरागत रूप से कागजी अभिलेखों, भौतिक वाउचरों तथा मैनुअल परीक्षण पर आधारित रही है, अब डिजिटल साधनों के माध्यम से अधिक सुदृढ़, पारदर्शी एवं परिणामोन्मुखी होती जा रही है। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (CAG) के अधीन कार्यरत भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग (IA&AD) ने इस परिवर्तनशील परिदृश्य में तकनीक को अपनाकर अपनी कार्यप्रणाली को आधुनिक स्वरूप प्रदान किया है।

महालेखाकार कार्यालयों में लागू किए गए AuditOnline, Virtual Audit System (VAS) तथा One IA&AD One System (OIOS) इसी दिशा में महत्वपूर्ण पहल हैं। ये तीनों अनुप्रयोग लेखापरीक्षा प्रक्रिया के विभिन्न चरणों - योजना, निष्पादन, अनुवर्ती कार्रवाई तथा कार्यालयीन प्रबंधन - को डिजिटल मंच पर लाते हैं। इन प्रणालियों का समन्वित उपयोग लेखापरीक्षा व्यवस्था को एकरूप बनाते हुए IA&AD के 'One Indian Audit & Accounts Department - One System' के दृष्टिकोण को साकार करता है।

- **<u>डिजिटल लेखापरीक्षा की आवश्यकता एवं पृष्ठभूमि :</u>**

पारंपरिक लेखापरीक्षा प्रणाली में समय की अधिक खपत, सूचना के विलंबित आदान-प्रदान, अभिलेखों के सुरक्षित रख-रखाव की समस्या तथा अनुवर्ती कार्रवाई की सीमित निगरानी जैसी चुनौतियाँ विद्यमान थीं। इसके अतिरिक्त, बड़े पैमाने पर व्यय एवं जटिल वित्तीय लेन-देन के कारण मैनुअल पद्धति से प्रभावी जोखिम-आधारित लेखापरीक्षा करना कठिन हो गया था। डिजिटल अनुप्रयोगों ने इन चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करते हुए लेखापरीक्षा को अधिक विश्लेषणात्मक, डेटा-आधारित एवं समयबद्ध बनाया है।

IA&AD द्वारा अपनाए गए डिजिटल प्लेटफॉर्म न केवल आंतरिक दक्षता बढ़ाते हैं, बल्कि लेखापरीक्षित इकाइयों के साथ संवाद को भी पारदर्शी बनाते हैं। इन प्रणालियों के माध्यम से लेखापरीक्षा टिप्पणियों की ट्रैकिंग, अनुपालन की स्थिति की निगरानी तथा रिपोर्टिंग प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया जा सका है।

- **AuditOnline : लेखापरीक्षा अनुवर्ती एवं संवाद का सशक्त मंच :**

AuditOnline एक वेब-आधारित अनुप्रयोग है, जिसका उद्देश्य महालेखाकार कार्यालय और लेखापरीक्षित इकाइयों के मध्य लेखापरीक्षा से संबंधित संवाद को सुव्यवस्थित करना है। इस मंच के माध्यम से निरीक्षण टिप्पणियाँ, ड्राफ्ट पैरा, अनुपालन रिपोर्ट तथा उत्तरों का आदान-प्रदान ऑनलाइन किया जाता है।

AuditOnline की प्रमुख विशेषता इसकी पारदर्शिता है। सभी संबंधित पक्ष एक ही प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध जानकारी को देख सकते हैं, जिससे भ्रम की स्थिति कम होती है और उत्तरदायित्व सुनिश्चित होता है। इसके अतिरिक्त, समय-सीमा आधारित अनुस्मारक लेखापरीक्षित इकाइयों को समय पर उत्तर प्रस्तुत करने हेतु प्रेरित करते हैं।

लेखापरीक्षा की दृष्टि से AuditOnline अनुवर्ती कार्रवाई को सुदृढ़ बनाता है। प्रत्येक टिप्पणी की स्थिति - लंबित, आंशिक अनुपालन या पूर्ण अनुपालन - स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होती है। इससे महालेखाकार कार्यालय को न केवल व्यक्तिगत इकाइयों बल्कि समग्र विभागीय स्तर पर अनुपालन की स्थिति का आंकलन करने में सुविधा होती है।

- **Virtual Audit System (VAS): वित्तीय परीक्षण की तकनीकी आधारशिला :**

Virtual Audit System (VAS) व्यय से संबंधित वाउचरों की गहन एवं मानकीकृत जाँच के लिए विकसित एक आंतरिक प्रणाली है। इसका मुख्य उद्देश्य लेखापरीक्षा प्रक्रिया को वस्तुनिष्ठ बनाना तथा मानवीय त्रुटियों की संभावना को कम करना है।

VAS के माध्यम से वाउचर-स्तरीय जाँच को डिजिटल स्वरूप प्रदान किया गया है। विभिन्न चेकलिस्ट, वैधता परीक्षण तथा गणनात्मक सत्यापन स्वचालित रूप से किए जा सकते हैं। इससे लेखापरीक्षक को जोखिमपूर्ण मामलों की पहचान करने में सहायता मिलती है और लेखापरीक्षा का फोकस अधिक महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर केंद्रित होता है।

VAS का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह लेखापरीक्षा निष्कर्षों के दस्तावेजीकरण को सुदृढ़ बनाता है। प्रणाली में प्रत्येक टिप्पणी का स्पष्ट आधार, संदर्भित नियम एवं प्रमाण सुरक्षित रूप से उपलब्ध रहते हैं, जो बाद में समीक्षा या उच्च स्तर पर परीक्षण के समय उपयोगी सिद्ध होते हैं।

- **One IA&AD One System (OIOS): One Indian Audit & Accounts Department - One System:**

One IA&AD One System (OIOS) IA&AD की उस परिकल्पना का प्रत्यक्ष उदाहरण है, जिसका उद्देश्य विभागीय कार्यप्रवाह को एकीकृत करना है। 'One Indian Audit & Accounts Department - One System' के सिद्धांत पर आधारित यह अनुप्रयोग कार्यालयीन प्रशासन, मानव संसाधन प्रबंधन, अवकाश, स्थानांतरण, प्रशिक्षण तथा अन्य आंतरिक प्रक्रियाओं को एक मंच पर लाता है।

OIOS के माध्यम से विभागीय कार्यों में एकरूपता सुनिश्चित होती है। विभिन्न कार्यालयों में अपनाई जाने वाली प्रक्रियाएँ मानकीकृत डिजिटल प्रारूप में उपलब्ध होने से नीति-निर्देशों के अनुपालन में समानता आती है। इससे न केवल प्रशासनिक दक्षता बढ़ती है, बल्कि पारदर्शिता और जवाबदेही भी सुदृढ़ होती है।

लेखापरीक्षा के संदर्भ में OIOS अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक सुव्यवस्थित कार्यालयीन तंत्र लेखापरीक्षकों को मुख्य पेशेवर दायित्वों पर अधिक ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाता है। मानव संसाधन एवं प्रशासनिक प्रक्रियाओं के सुचारु संचालन से लेखापरीक्षा कार्यों की गुणवत्ता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

- **तुलनात्मक विश्लेषण : AuditOnline, VAS एवं OIOS :**

यदि इन तीनों प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक का उद्देश्य भिन्न होते हुए भी इनका सामूहिक प्रभाव लेखापरीक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना है। AuditOnline वाह्य संवाद एवं अनुवर्ती कार्रवाई पर केंद्रित है, VAS वित्तीय परीक्षण को तकनीकी मजबूती प्रदान करता है, जबकि OIOS आंतरिक प्रशासनिक ढाँचे को एकीकृत करता है।

इन प्रणालियों का समन्वित उपयोग लेखापरीक्षा प्रक्रिया को एंड-टू-एंड डिजिटल स्वरूप प्रदान करता है। योजना से लेकर निष्कर्ष और अनुपालन तक, प्रत्येक चरण में सूचना की उपलब्धता, ट्रैकिंग एवं विश्लेषण संभव हो पाता है।

- **चुनौतियाँ एवं भावी संभावनाएँ :**

डिजिटल प्रणालियों के व्यापक लाभों के बावजूद कुछ चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। तकनीकी अवसंरचना, उपयोगकर्ता प्रशिक्षण तथा साइबर सुरक्षा जैसे मुद्दों पर निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न प्रणालियों के बीच डेटा एकीकरण को और अधिक सुदृढ़ करने की संभावना बनी हुई है।

भविष्य में उन्नत डेटा एनालिटिक्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा जोखिम-आधारित मॉडल इन प्रणालियों के साथ एकीकृत किए जा सकते हैं। इससे लेखापरीक्षा और अधिक पूर्वानुमानात्मक एवं प्रभावी बन सकेगी।

- **निष्कर्ष :**

AuditOnline, Virtual Audit System (VAS) तथा One IA&AD One System (OIOS) ने मिलकर महालेखाकार कार्यालयों में एक आधुनिक, पारदर्शी एवं उत्तरदायी डिजिटल लेखापरीक्षा व्यवस्था की नींव रखी है। इन प्रणालियों का एकरूप उपयोग IA&AD को 'One Indian Audit & Accounts Department - One System' के लक्ष्य के और निकट ले जाता है। निरंतर सुधार एवं तकनीकी उन्नयन के साथ ये अनुप्रयोग भविष्य में सार्वजनिक लेखापरीक्षा की गुणवत्ता एवं विश्वसनीयता को और अधिक सुदृढ़ करेंगे।

"हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।" - मैथिलीशरण गुप्त।

भारत में लोक नीति और शासन पर नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक प्रतिवेदन का प्रभाव

श्री शिबेन्दु कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत के संविधान के अनुच्छेद 148 के तहत नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (CAG) की स्थापना की गई है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने संविधान सभा में इसे "संविधान के अंतर्गत सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी" कहा था, क्योंकि यह लोक धन की सुरक्षा और सही उपयोग की निगरानी करता है। लोकतांत्रिक शासन में सरकार को कर वसूलने और सार्वजनिक धन खर्च करने का अधिकार दिया गया है, परंतु इसके साथ यह जिम्मेदारी भी जुड़ी है कि वह जनता को बताए कि धन का उपयोग कैसे और किस उद्देश्य से किया गया। इसी जवाबदेही को सुनिश्चित करने के लिए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की व्यवस्था की गई। अनुच्छेद 151 के अनुसार सी.ए.जी. अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति या राज्यपाल को देता है, जिन्हें बाद में संसद या राज्य विधानमंडल के सामने प्रस्तुत किया जाता है। समय के साथ सी.ए.जी. की रिपोर्टें केवल लेखा संबंधी त्रुटियों तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि इसने नीति, प्रशासन और सुशासन पर भी गहरा प्रभाव डाला है। इस प्रकार सी.ए.जी. केवल एक लेखापरीक्षक ही नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक जवाबदेही का एक सशक्त माध्यम बन चुका है। इसका ध्येय वाक्य "लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा" उसकी कार्यप्रणाली की भावना को दर्शाता है।

नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की शक्तियाँ और कार्य, संविधान एवं कर्तव्य, शक्तियाँ एवं सेवा की शर्तें (डी.पी.सी.) अधिनियम, 1971 द्वारा निर्धारित किए गए हैं। अनुच्छेद 149 संसद को सी.ए.जी. के कर्तव्यों और शक्तियों को परिभाषित करने का अधिकार देता है, जबकि अनुच्छेद 150 संघ और राज्यों के खातों के प्रारूप से संबंधित है। डी.पी.सी. अधिनियम की धारा 13 के अंतर्गत संघ एवं राज्य सरकारों के व्यय की लेखापरीक्षा, धारा 16 के अंतर्गत राजस्व प्राप्तियों की लेखापरीक्षा, धारा 14 के अंतर्गत सरकारी सहायता प्राप्त निकायों की लेखापरीक्षा तथा धारा 19 एवं 20 के अंतर्गत सरकारी कंपनियों और निगमों की लेखापरीक्षा का प्रावधान है। धारा 18 सी.ए.जी. को अभिलेखों और सूचनाओं की मांग करने की व्यापक शक्ति प्रदान करती है।

इन संवैधानिक प्रावधानों के कारण सी.ए.जी. की स्वतंत्रता और निष्पक्षता सुनिश्चित होती है, जो उसकी प्रतिवेदन की विश्वसनीयता और प्रभाव को बढ़ाती है।

सी.ए.जी. प्रतिवेदन का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव संसदीय जवाबदेही को मजबूत करना है। जब ये रिपोर्टें संसद या विधानमंडल में रखी जाती हैं, तो उनकी जाँच लोक लेखा समिति (पी.ए.सी.) और लोक उपक्रम समिति (सी.ओ.पी.यू.) द्वारा की जाती है। ये समितियाँ संबंधित मंत्रालयों और विभागों से स्पष्टीकरण मांगती हैं और सुधार के सुझाव देती हैं। इससे विधायिका को कार्यपालिका के खर्च पर नियंत्रण रखने का अवसर मिलता है। परिणामस्वरूप सार्वजनिक धन के उपयोग में पारदर्शिता बढ़ती है और यह सुनिश्चित होता है कि धन स्वीकृत उद्देश्यों के अनुसार खर्च हो। इस प्रकार सी.ए.जी. लोकतंत्र में उत्तरदायित्व की भावना को व्यवहारिक रुप से लागू करता है।

वित्तीय अनुशासन बनाए रखने में भी सी.ए.जी. की भूमिका महत्वपूर्ण है। लेखापरीक्षा के दौरान बिना अनुमति अधिक व्यय, निधियों का गलत उपयोग, अनुदान का अधूरा उपयोग, राजस्व की कम वसूली और लेखांकन की त्रुटियाँ सामने आती हैं। इन कमियों को उजागर करने से विभागों को नियमों और बजटीय प्रक्रियाओं का सही पालन करने की प्रेरणा मिलती है। आंतरिक नियंत्रण प्रणाली को मजबूत किया जाता है और वित्तीय प्रबंधन में सुधार लाया जाता है। इससे बजट अधिक वास्तविक और संतुलित बनता है तथा सार्वजनिक संसाधनों का बेहतर उपयोग संभव होता है। इस दृष्टि से सी.ए.जी. सुधारात्मक के साथ-साथ निवारक भूमिका भी निभाता है।

संघीय व्यवस्था में भी सी.ए.जी. का योगदान उल्लेखनीय है। भारत में केंद्र और राज्यों के बीच वित्तीय लेन-देन व्यापक स्तर पर होता है, विशेषकर केंद्र प्रायोजित योजनाओं के माध्यम से। सी.ए.जी. दोनों स्तरों की सरकारों के खातों की जाँच करता है, जिससे जवाबदेही के समान मानक बने रहते हैं। इससे यह सुनिश्चित होता है कि अनुदानित धनराशि का उपयोग निर्धारित उद्देश्यों के लिए ही किया जाए और सहकारी संघवाद को मजबूती मिले। सी.ए.जी. प्रतिवेदन का प्रभाव नीतिगत सुधारों में भी दिखाई देता है। दूरसंचार स्पेक्ट्रम के आवंटन से संबंधित टिप्पणियों के बाद संसाधनों के वितरण में पारदर्शी और प्रतिस्पर्धी नीलामी प्रणाली अपनाई गई। इसी प्रकार कोयला खदानों के आवंटन पर की गई जाँच ने नीति की कमियों को उजागर किया, जिसके बाद प्रतिस्पर्धात्मक बोली प्रक्रिया लागू की गई। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि सी.ए.जी. की रिपोर्टें प्रशासन को अधिक पारदर्शी और जवाबदेह बनाने में सहायक होती हैं।

कल्याणकारी योजनाओं में भी सी.ए.जी. (CAG) की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पी.डी.एस.) की जाँच में लाभार्थियों की पहचान, निधियों के उपयोग और निगरानी तंत्र में कमियाँ सामने आईं तथा फर्जी प्रविष्टियों की समस्या उजागर हुई। इसके बाद प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डी.बी.टी.), आधार आधारित प्रमाणीकरण और डिजिटल भुगतान प्रणाली को मजबूत किया गया। इससे पारदर्शिता बढ़ी और भ्रष्टाचार की संभावना कम हुई। इस प्रकार सी.ए.जी. की रिपोर्टें केवल त्रुटियों को उजागर नहीं करतीं, बल्कि सुधार के लिए मार्ग भी दिखाती हैं।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वर्तमान समय में अनुपालन लेखापरीक्षा के महत्व के साथ-साथ, प्रदर्शन लेखापरीक्षा को विशेष महत्व दिया जा रहा है। प्रदर्शन लेखापरीक्षा मितव्ययिता (Economy), दक्षता (Efficiency) तथा प्रभावशीलता (Effectiveness) के आधार पर योजनाओं और कार्यक्रमों का समग्र मूल्यांकन करती है। इसका उद्देश्य केवल यह देखना नहीं है कि धन नियमानुसार व्यय हुआ या नहीं, बल्कि यह भी आंकलन करना है कि व्यय से अपेक्षित परिणाम प्राप्त हुए या नहीं। उदाहरणार्थ, राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM) पर की गई प्रदर्शन लेखापरीक्षा में स्वास्थ्य अवसंरचना, मानव संसाधन की उपलब्धता तथा सेवाओं की गुणवत्ता से संबंधित कमियों को रेखांकित किया गया, जिससे राज्यों में निगरानी तंत्र और संसाधन आवंटन में सुधार के प्रयास किए गए। इसके अतिरिक्त, स्वच्छ भारत मिशन की लेखापरीक्षा में शौचालय निर्माण के साथ-साथ उनके वास्तविक उपयोग और व्यवहार परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित किया गया, जिससे नीति-निर्माताओं का ध्यान मात्र भौतिक उपलब्धियों के बजाय वास्तविक परिणामों पर केंद्रित हुआ।

सी.ए.जी. की रिपोर्टें सार्वजनिक दस्तावेज होती हैं, इसलिए मीडिया और नागरिक समाज इनके निष्कर्षों को व्यापक रूप से लोगों तक पहुँचाते हैं। इससे नागरिकों को जानकारी मिलती है कि सार्वजनिक धन का उपयोग कैसे हो रहा है और कहाँ सुधार की आवश्यकता है। जन-जागरूकता से सरकार पर सुधारात्मक कदम उठाने का नैतिक दबाव बनता है और शासन अधिक सहभागी तथा पारदर्शी बनता है।

समग्र रूप से देखा जाए तो सी.ए.जी. की रिपोर्टें भारतीय शासन व्यवस्था पर गहरा प्रभाव डालती हैं। ये संसदीय नियंत्रण को मजबूत करती हैं, नीतिगत सुधारों को प्रेरित करती

हैं, वित्तीय अनुशासन बनाए रखती हैं और पारदर्शिता को बढ़ावा देती हैं। आज जब सार्वजनिक व्यय और प्रशासनिक जटिलताएँ लगातार बढ़ रही हैं, तब सी.ए.जी. की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। यदि उसकी सिफारिशों पर समयबद्ध और प्रभावी कार्रवाई के साथ सुनिश्चित की जाए, तो सी.ए.जी. (CAG) सुशासन और उत्तरदायी लोक नीति निर्माण का सशक्त आधार बना रहेगा।

"मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता।"

- विनोबा भावे।

एक राष्ट्र : एक ई-एच.आर.एम.एस

सुश्री शुभा दास
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हाल ही में ई-एच.आर.एम.एस 2.0 ने नई ऊंचाइयों को छुआ, जिसमें प्रमुख ऑनबोर्डिंग लाभ, व्यापक प्रशिक्षण और नए एकीकरण शामिल हैं। सुशासन सप्ताह के उपलक्ष्य में, सुरक्षित, पारदर्शी और स्मार्ट मानव संसाधन सेवा वितरण को सुदृढ़ करने के लिए मोबाइल ऐप लॉन्च किया गया।

पुनर्विकसित प्री-लॉगिन लैंडिंग पेज और मोबाइल ऐप सुशासन दिवस (25 दिसंबर 2025) को लॉन्च किए गए।

ई-एच.आर.एम.एस 2.0 मोबाइल ऐप (डी.ओ.पी.टी.) ई-एच.आर.एम.एस 2.0 प्लेटफॉर्म के लिए आधिकारिक मोबाइल गेटवे के रूप में कार्य करता है, जो एंड्रॉइड और आई.ओ.एस. दोनों उपकरणों पर उपलब्ध है। यह कर्मचारियों को वेतन पर्ची, छुट्टी के आवेदन और ट्रैकिंग, प्रतिपूर्ति, घोषणाएँ आदि जैसी प्रमुख मानव संसाधन सेवाएं आसानी से उपलब्ध कराता है, जिससे कागजी कार्रवाई कम होती है, पारदर्शिता बढ़ती है और निर्णय लेने की प्रक्रिया तेज होती है। यह ऐप ई-एच.आर.एम.एस 2.0 इकोसिस्टम के साथ सहजता से एकीकृत हो जाता है, जो भर्ती से लेकर सेवानिवृत्ति तक, संपूर्ण कर्मचारी जीवनचक्र में शुरु से अंत मानव संसाधन प्रक्रियाओं का समर्थन करता है। पिछले तीन महीनों के दौरान ई-एच.आर.एम.एस की ऑनबोर्डिंग उपलब्धियां बहुत अच्छी रही हैं। कर्मचारियों की भर्ती की संख्या अक्टूबर 2025 में 7.1 लाख से बढ़कर दिसंबर 2025 में 7.6 लाख हो गई, जिसमें 50,000 की वृद्धि हुई। इसमें 61 मंत्रालय, 90 विभाग और 8 राज्य/केंद्र शासित प्रदेश शामिल हैं। आई.जी.ओ.टी. एकीकरण: पूर्ण कार्यक्षमता के लिए आई.जी.ओ.टी. पाठ्यक्रम/प्रमाणपत्रों का समावेश, भविष्य एकीकरण: विशेषताएं और सुधार लाइव हो गए हैं। 283 पेंशन मामलों को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया गया।

148 पेंशन भुगतान आदेश (पी.पी.ओ.) जारी किए गए। 103 मामले एच.ओ.ओ. स्तर पर अनुमोदन के लिए लंबित हैं। 32 मामले भविष्य स्तर पर प्रक्रियाधीन हैं।

मोबाइल ऐप में उपलब्ध सभी सेवाओं की एक झलक

ई-एच.आर.एम.एस में नया लैंडिंग पेज लॉगिन यू.आर.एल. - https://e-hrms.gov.in है। ई-एच.आर.एम.एस मॉड्यूल का उपयोग छुट्टियां, समाचार पत्र, टेलीफोन, चिकित्सा, बाल शिक्षा भत्ता, एल.टी.सी., जी.पी.एफ., ब्रीफकेस आदि के आवेदन हेतु किया जाता है। 61 मंत्रालयों, 90 विभागों और 8 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों सहित 7.6 लाख से अधिक कर्मचारियों को शामिल करने के साथ, ई-एच.आर.एम.एस. 2.0 मानव संसाधन प्रबंधन में निरंतर परिवर्तन ला रहा है। दिसंबर 2025 में सुशासन दिवस के शुभारंभ से विस्तारित पेंशन प्रक्रिया और उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की गई। आगामी तिमाही में सेवा पुस्तिका के विस्तार, कार्यप्रवाह में सुधार और पी.एफ.एम.एस. भविष्य, सी.जी.एच.एस. और आई जी.ओ.टी. के साथ गहन एकीकरण पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा, जिससे एक अधिक स्मार्ट और प्रतिक्रियाशील शासन प्रणाली का निर्माण होगा।

"हिंदी को जीवन की भाषा बनाओ। यह केवल बोलचाल की भाषा नहीं, बल्कि विचारों की अभिव्यक्ति की भाषा है।"- मुंशी प्रेमचंद

"अर्पिता माँ और मेरी यादें"

श्री चंदन कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक सिलसिला यादों का,
शुरू हुआ था बहुत पहले,
जब दूर आया था मैं,
माँ की ममता से भरे आशियाने से।

वो माँ के आँचल तले बिताए एक-एक पल,
जब भी गुजरे मेरी नजरों से,
तो गिरे दिल के दर्द बनके आंसू,
इन मासूम आँखों के जहानों से।

पहली शाम ऐसे कटी,
जैसे कोई विरहा की शाम हो,
दिल तो किया लौट जाऊँ इस शहर से,
पर करके आया था वादा,
माँ की आशा भरी रुझानों से।

पल-पल संभालता रहा खुद को मैं,
खुदा की एक बक्शीश की तरह,
और दुआ करता रहा माँ से मिलने की हर पल,
उन फिजाओं संग ऊंचे आसमानों से।

पहली बार जब देखा आपको,
तो लगा माँ मिलने आई है मुझसे,
महसूस किया फिर अपनापन का,
चमन में खिले फूलों के गुलिस्तानों से।

पहली बार जब पुकारा आपने,
तो अपने होने का एहसास मिला,
फिर माँ की यादें आपसे जुड़ी,
और बढ़ चली आगे मेरी दुनिया,
नाहक ही रूठे हुए मेरे अरमानों से।

इस माँ के दुलार के भूखे को,
आपने ममता का आहार दिया,
वरना भूख तो मिटती थी इसकी,
अपने माँ के हाथों से मिले,
प्यार भरे निवालों से।

जब भी माँ से मिलने की बेचैनी होती,
गम के पनघट की ओर चल पड़ता ये दिल,
पर दिल आखिर लौटा ये आपकी ओर,
जैसे लौटती हैं लहरें पथरीले समंदर के किनारों से।

फिर धीरे-धीरे हमने भी सीखा,
इस उफ़ान भरती जिंदगी में,
आपसे मिली ममता को,
मोतियों की तरह संजोना,
विशाल समंदर की पनाहों से।

आज मुखर हूँ मैं ये मालूम है लेकिन,
एक वक़्त मेरे शर्मीलेपन का ऐसा भी था,
जब मैं देखता रहा आपको छुप-छुप कर,
कांच की बनी उन अनित्य दीवारों से।

जो पूछा अचानक इसकी वजह किसी ने,
तो उस उलझन में मैं किसी तरह,
भटकाता रहा खुद से उनका ध्यान ,
अपने बनाये अनोखे बहानों से।

कि आज सोचता हूँ जब भी,
तो ऐसा लगता है मानो,
भरा हुआ है उन यादों का सागर,
अपने किए नादान कारनामों से।

कुछ के बदले बहुत कुछ मिला,
मुझे ममता स्वरूप माँ अर्पिता से,
कि शिकायत नहीं है अब मुझे,
अपने मासूमियत से भरे अफसानों से ।

एक रिश्ता हमेशा बना रहा,
माँ-बेटे का मेरा आपसे,
जैसे हो रिश्ता किशन का,
उसकी बांसुरी के तरानों से ।

नहीं टूटेगा अब ये अद्भुत बंधन,
जो बंधा है ममता और स्नेह की डोर में,
चाहे तो कर ले इसे तोड़ने का,
कोई कितना भी फरियाद,
बाइबल कुरान या पुराणों से ।

जो भी पल अर्पण किए आपने,
मेरी जिंदगी के अनमोल खजानों में,
संजोए रखूंगा हर पल मैं उनको,
क्योंकि अतुल्य है वो मेरे लिए,
दानवीरों के दानों से ।

पर बता न सका आपको इससे पहले मैं,
जो दिल में जागी थी एक बंदगी,
अफ़सोस रहेगा मुझे हमेशा इसका,
जैसे कभी नाराज़ हो जाती है राहें भी,
रुके हुए मंजिल के दीवानों से ।

<u>पारंपरिक टोटोपारा</u>

श्री शंकर लाल सरकार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

टोटो समुदाय टोटोपारा में रहता है, जो एक प्रमुख पर्यटन स्थल है और हाल ही में पर्यटकों के बीच लोकप्रिय हुआ है। टोटोपारा अलीपुरद्वार जिले में मदारीहाट से 23 किलोमीटर दूर स्थित है। इसके पूर्व में तोर्षा नदी, पश्चिम में पाड़ुआ पहाड़ी, उत्तर में हिप्सा पहाड़ी और दक्षिण में जलदापारा आरक्षित वन तथा लंकापारा है। भारत के सबसे आखिरी छोर पर बसा यह गाँव भौगोलिक विविधता से परिपूर्ण है। इसकी सीमा के उस पार पड़ोसी देश भूटान है।

टोटो लोग मंगोलॉयड समुदाय से संबंधित हैं। यह निश्चित तौर पर कहना कठिन है कि यहां बसने से पहले वे कहां से आए थे। टोटो लोगों की परंपरा के अनुसार, वे "हिमाशा" यानी हिमालय क्षेत्र से आए थे और बाद में "हिमाणु", यानी मैदानी इलाकों में बस गए। टोटो जनजाति का प्राचीन मूल स्थान भूटान है। इससे भी पहले, वे संभवतः चीन या मंगोलिया में रहते थे। भूटान से आने के बाद वे कूचबिहार ज़िले में शमुकतला के पास सालसाबाड़ी टोटोपारा में बस गए। बाद में उन्हें वहाँ से भी विस्थापित कर दिया गया।

मुझे यह जानकर काफी हैरानी हुई कि टोटोपारा की मौजूदा आबादी सिर्फ पंद्रह सौ है। 1901 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार, उस समय टोटो लोगों की आबादी 172 थी। तब से, उनकी संख्या धीरे-धीरे बढ़कर अभी पंद्रह सौ हो गई है। हालांकि इस जगह का नाम टोटोपारा है, लेकिन अभी यहां नेपाल, गोरखा समुदाय और यहां तक कि बिहार के लोग भी रहते हैं। इस जनसांख्यिकी बदलाव के पीछे धोखे, अभाव और गुलामी का एक लंबा इतिहास छिपा है।

1901 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार, उस समय टोटोपारा में सिर्फ़ टोटो लोग रहते थे; वहाँ किसी और समुदाय का कोई भी व्यक्ति नहीं रहता था। अंग्रेज मिस्टर मिलिगन ने टोटो जनजाति के मुखिया के नाम पर 2000 एकड़ ज़मीन रिकॉर्ड की थी। उस समय, बिना अनुमति के इस इलाके में प्रवेश करना मना था। धनपति टोटो समुदाय का मुखिया था। इसलिए, सारी ज़मीन उसके नाम पर रजिस्टर्ड थी। हालाँकि, वह ज़मींदार नहीं था। टोटो परिवार उस ज़मीन पर खेती करते थे और मुखिया को नकद धनराशि देते थे। गांव का मुखिया उस पैसे को कर के तौर पर जमा करता था। लेकिन देश को आज़ादी मिलने के बाद, ज़मीन से जुड़ा बिल पास हुआ और कानून बन गया। इस कानून का परिणाम गरीब, छोटे, आदिवासी समुदायों के लिए बहुत बुरे थे। उस समय, टोटोपारा गांव में न तो अखबार थे, न बिजली, न सड़कें, और न ही चुने हुए प्रतिनिधि। उन्हें तो यह भी पता नहीं चला कि कानून की नज़र में उनकी ज़मीन अब उनकी नहीं रही। उन्होंने सुना कि अब उन्हें किराया नहीं देना पड़ेगा। सीधे-साधे आदिवासी लोगों ने सोचा कि सरकार ने उनका किराया माफ कर दिया है। उस दिन उनमें से किसी को भी भाग्य की क्रूर विडंबना समझ

में नहीं आई। 1968 में अतिरिक्त खास भूमि के वितरण के दौरान, 2000 एकड़ भूमि में से केवल 333 एकड़ भूमि ही 72 टोटो परिवारों के बीच वितरित की गई थी।

1950 में, भूटान से 12 नेपाली परिवार पहली बार टोटोपारा आए थे। मुखिया की मौखिक सहमति से वे टोटोपारा में रहने लगे। उसके बाद, नेपाल से कई मजदूर स्थायी रूप से टोटोपारा में रहने लगे। 1970 और 1980 के दशक से टोटोपारा में अवैध प्रवासन बढ़ रहा है। वर्तमान में, टोटो लोग अपने ही देश में अप्रवासी बन रहे हैं। टोटो समुदाय द्वारा दर्ज की गई भूमि का एक महत्वपूर्ण हिस्सा नेपाली समुदाय के हाथों में चला गया है। विभिन्न बहाने बनाकर टोटो लोगों की जमीन उन्हें वापस नहीं की गई। टोटो जनजाति के पास वर्तमान कुआपानी में, टोटोपारा के पूर्व में लगभग 1,000 बीघा धान की भूमि थी। यहां 1964 में भी धान की खेती की जाती थी। परंतु एक दिन वन विभाग ने इस क्षेत्र को आरक्षित वन घोषित कर दिया। सभी मकान ध्वस्त कर दिए गए और टोटो परिवार को बेदखल कर दिया गया। विरोध प्रदर्शन व्यर्थ साबित हुए।

नाममात्र की टोटोपारा ग्राम पंचायत कुछ वर्षों तक अस्तित्व में रही। आदिवासी आरक्षण के कारण, राजनीतिक कार्यकर्ताओं को टोटो समुदाय के किसी व्यक्ति को उम्मीदवार बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा। लेकिन बाद में कई आयोगों के गठन और नई जनजातियों के निर्माण के साथ, टोटो का प्रतिनिधित्व समाप्त हो गया। कुल 1,574 की आबादी में से केवल 650 टोटो ही मतदाता हैं। परिणामस्वरूप, ग्राम पंचायत में भी टोटो वास्तव में अल्पसंख्यक हैं। यह आश्चर्यजनक है कि आज देश में गैर-टोटो जातीय समूह बहुसंख्यक बन गए हैं, जबकि 1930-40 तक जनसंख्या अभिलेखों में वहां टोटो के अलावा कोई और नहीं था! टोटो परिवार को शायद फिर कभी राजनीतिक स्वतंत्रता का अनुभव न हो पाए।

फिलहाल, टोटो बस्ती में रहने वाले टोटो लोगों के केवल दो या तीन पारंपरिक बांस के घर ही पर्यटकों के लिए आरक्षित हैं। टोटो भाषा में, बांस से बने इस प्रकार के घर को 'देइसा' कहा जाता है। घर के अलग-अलग हिस्सों के अलग-अलग नाम हैं। घर की छत को 'केत्रैबू', फर्श को 'चिपेई', शहतीरों को 'मुइतेन', खिड़कियों को 'चिबोयांग' और दरवाजों को 'लापुन' कहा जाता है। यह देइसा टोटो लोगों के बीच सामाजिक जिम्मेदारी का प्रतीक है।

टोटो जनजाति के लिए बांस से घर बनाना एक महान सामाजिक उत्सव है। बांस का घर बनाने के लिए किसी मजदूर की जरूरत नहीं होती। घर का मालिक धीरे-धीरे घर बनाने के लिए आवश्यक सामग्री इकट्ठा करना शुरू करता है। सारी सामग्री इकट्ठा हो जाने पर, पड़ोसियों को सूचित किया जाता है कि अमुक तारीख को घर का निर्माण शुरू होगा। उस निर्धारित दिन मोहल्ले के सभी लोग आते हैं। एक बुजुर्ग बांस की छड़ी से उसका आकार मापता है। घर का आकार निर्धारित करने के बाद, जमीन पर एक विशिष्ट निशान बनाया जाता है ताकि यह पता चल सके कि खंभे कहाँ लगाए जाएंगे। गांव की महिलाएं लोहे की कुल्हाड़ियों से उस क्षेत्र की खुदाई शुरू करती हैं और लगभग ढाई से तीन फीट गहरे गड्ढे बनाए जाते हैं। तंदुरुस्त पुरुष ने माप-जोख शुरू करते हैं और यह तय किया कि कौन से खंभे किस कोने में स्थापित किए जाएंगे। फिर, सभी एक साथ चिल्लाते हुए खंभों को गड्ढे में फेंकते हैं। दो मंजिला मकान बनाने के लिए नौ बड़े और नौ छोटे खंभों की आवश्यकता होती है। बरामदे के लिए नौ और छोटे खंभों की आवश्यकता होती है। एक टोटो घर लगभग 22 फीट लंबा और 15 फीट चौड़ा होता है। तीस से चालीस लोग एक दिन में एक घर बना सकते हैं। जब दोपहर में घर तैयार हो जाता है, तो बुजुर्ग टोटो पुजारी पानी का एक बर्तन लेकर स्वाधीनपा देवता के लिए मंत्रों का जाप करता है। यदि स्वाधीनपा देवता प्रसन्न हों, तो घर में प्रवेश करना आवश्यक है। घर में प्रवेश करने की इस रस्म को चांगपितयावा कहा जाता है। इसके बाद, दिन भर काम करने वाले सहायकों को चावल, मांस और शोरबे की दावत परोसी जाती है।

टोटो लोगों के पारंपरिक घर देइसा में रात भर रुकने का एक अनूठा अनुभव होता है। यह घर काफी हद तक बांस और भूसे से बना होता है। इसमें आधुनिक कीलों की कोई जरूरत नहीं है। लेकिन टोटो परिवार अब आधुनिक होता जा रहा है। अब कोई भी बांस से बने घर में रहना नहीं चाहता।

कई सदियों पहले रहने वाले टोटो लोगों ने एक अत्यंत उन्नत और विचारशील समाज की स्थापना की थी। टोटो समाज दहेज जैसे सामाजिक अभिशाप से मुक्त है। विद्यासागर के आगमन से बहुत पहले से ही, प्राचीन काल से ही टोटो समाज में विधवा विवाह प्रचलित रहा है। टोटो जनजाति के लोग सौ वर्षों से टोटोपारा में रह रहे हैं, लेकिन आज तक किसी भी टोटो व्यक्ति को किसी भी अपराध के लिए आजीवन कारावास या मृत्युदंड नहीं दिया गया है। यह तथ्य अपने आप में अत्यंत आश्चर्यजनक है।

पश्चिम बंगाल में हाशिए पर पड़े अल्पसंख्यक आदिवासी समूहों की संस्कृति आज विलुप्त होने के कगार पर है। यदि टोटोपारा के टोटो लोग भी लुप्त हो जाते हैं, तो यह हमारी सांस्कृतिक विविधता के लिए बहुत बड़ी क्षति होगी।

कार्यालय परिसर में धूम्रपान की समस्या और इसके दुष्परिणाम

श्री पंकज कुमार सिन्हा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

धूम्रपान आज केवल एक व्यक्तिगत आदत नहीं रह गया है, बल्कि कार्य-स्थलों, सार्वजनिक स्थानों और कार्यालय परिसरों में यह एक गंभीर सामाजिक एवं स्वास्थ्य समस्या का रूप ले चुका है। यद्यपि सिगरेट एवं अन्य तंबाकू उत्पाद अधिनियम (COTPA), 2003 के अंतर्गत कार्यालय परिसरों तथा सार्वजनिक भवनों पर धूम्रपान निषेध है, फिर भी कई स्थानों पर इस नियम का पालन प्रभावी रूप से नहीं हो पा रहा है। इस प्रवृत्ति का नकारात्मक प्रभाव सरकारी कार्यालयों के आसपास भी देखा गया है जिससे कार्यालय का पारिस्थितिक वातावरण प्रभावित होता है।

1. **कार्यालय परिसरों में धूम्रपान :**

   कार्यालय परिसरों में कर्मचारियों द्वारा गोपनीयता में धूम्रपान, मुख्य द्वार, पार्किंग क्षेत्र और सीढ़ियों पर धूम्रपान, शौचालय या अंधेरी जगहों पर सिगरेट जलाना जैसी घटनाएँ अब सामान्य हो चुकी हैं, जिनसे कार्यालय का स्वास्थ्य एवं नियमबद्ध वातावरण प्रभावित होता है।

2. **धूम्रपान के नकारात्मक प्रभाव :**

(क) **स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव:** धूम्रपान केवल व्यक्ति विशेष के स्वास्थ्य को ही नहीं प्रभावित करता बल्कि परोक्ष धूम्रपान के कारण आस-पास के लोगों, विशेषकर महिलाओं, वृद्धों और बच्चों का स्वास्थ्य भी भारी रूप से प्रभावित होता है। धूम्रपान से श्वसन, हृदय रोग, फेफड़ों का कैंसर, एलर्जी और सांस की जटिलताएँ जैसे रोगों का खतरा बढ़ जाता है।

(ख) **कानून का उल्लंघन:** COTPA 2003 तथा सरकारी कार्यालयों के आचार-संहिता नियम स्पष्ट रूप से निर्धारित करते हैं कि कार्यालय परिसर में धूम्रपान वर्जित है। इसका उल्लंघन न केवल नियमों का हनन है, बल्कि निरीक्षण तथा अनुशासनात्मक कार्रवाई के दौरान विभाग की छवि पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

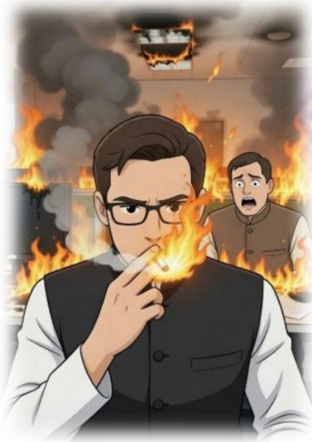

(ग) **आग तथा सुरक्षा जोखिम:** कार्यालय परिसर में अधबुझी सिगरेट या बीड़ी से आग लगने का जोखिम बना रहता है। कागज़ों, रिकॉर्ड रूम तथा इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में आग लगने का खतरा अधिक होता है जिससे मानव जीवन व सरकारी संपत्ति को नुकसान हो सकता है।

(घ) **कार्यसंस्कृति एवं अनुशासन पर प्रभाव:** धूम्रपान करने के लिए बार-बार कार्यालय के बाहर जाने से कार्य समय का नुकसान, कार्यस्थल पर असामयिक भाग-दौड़,

अनुशासनहीनता आदि जैसे परिणाम उत्पन्न होते हैं जिससे कार्यालय की कार्यक्षमता और सकारात्मक वातावरण प्रभावित होते हैं।

(ङ) **<u>सरकारी छवि पर प्रभाव:</u>** सरकारी कार्यालयों को अनुशासन, स्वच्छता तथा ज़िम्मेदारी की पहचान माना जाता है। परंतु कार्यालय परिसर में धूम्रपान की घटनाएँ मूल्य-क्षितिजों को कमज़ोर करती जा रही है और आम जनता में विभाग के प्रति नकारात्मक धारणा उत्पन्न करती है।

3. रोकथाम एवं सुधारात्मक उपाय

✓ **धूम्रपान निषेध बोर्डों की स्थापना**

प्रवेश द्वार, लिफ्ट क्षेत्र, गलियारे तथा प्रत्येक सामान्य स्थान पर "धूम्रपान वर्जित" बोर्ड प्रदर्शित किए जाने चाहिए।

✓ **नियमों का पालन एवं कड़ाई**

धूम्रपान करते हुये अधिकारी/कर्मचारी पकड़ में आने पर उचित चेतावनी, अनुशासनात्मक कार्रवाई तथा आवश्यकतानुसार दंड का प्रावधान होना चाहिए ताकि नियमों का प्रभावी अनुपालन सुनिश्चित हो सके।

✓ **जागरूकता कार्यक्रम**

स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से धूम्रपान के दुष्प्रभावों पर कार्यशालाएँ, स्वास्थ्य शिविर एवं पोस्टर अभियान नियमित रूप से आयोजित किए जाने चाहिए।

✓ **धूम्रपान क्षेत्र का सीमित निर्धारण**

जहां तक उपयुक्त हो, कार्यालय परिसर से दूर एक नियंत्रित धूम्रपान क्षेत्र का निर्धारण किया जा सकता है ताकि मुख्य परिसर में धूम्रपान की घटनाएँ कम हों।

✓ **धूम्रपान त्याग समर्थन**

धूम्रपान छोड़ने के इच्छुक कर्मचारियों के लिए परामर्श, हेल्पलाइन तथा सहायता कार्यक्रम उपलब्ध कराये जाने चाहिए ताकि वे स्वस्थ जीवन की ओर अग्रसर हो सकें।

निष्कर्ष

धूम्रपान केवल एक व्यसन नहीं है बल्कि यह सार्वजनिक स्वास्थ्य, कार्यालय अनुशासन, कानून का सम्मान और सरकारी प्रतिष्ठा से जुड़ा गंभीर विषय है।

एक धूम्रपान-मुक्त कार्यस्थल न केवल कर्मचारियों तथा आगुंतकों की भलाई को सुनिश्चित करता है बल्कि यह एक सकारात्मक, स्वस्थ और सुव्यवस्थित कार्यालय-संस्कृति का भी आधार तैयार करता है।

दिल से दिल तक

सुश्री प्रियदर्शिनी सिंह
सहायक निदेशक (रा.भा.)

हमारे साथ कुछ लोगों का रिश्ता तो कार्यालय में बनता है लेकिन धीरे-धीरे हमारी रोज़मर्रा की आदतों और सोच का हिस्सा बन जाता है। वह भी ऐसी ही थी। एक अधीनस्थ के रूप में वो मुझसे मिली परंतु कब एक भरोसेमंद साथी, एक सशक्त सहकर्मी और मेरे व्यक्तिगत जीवन का अभिन्न अंग बन गई–यह समझ ही नहीं आया।

जब इस कार्यालय में मेरा स्थानांतरण हुआ था, तब मैंने फोन पर उससे बात की थी और बहुत सारे प्रश्न पूछे थे। अपरिचित होने का एहसास कम था क्योंकि हम पहले ही इलाहाबाद के आर॰टी॰आई॰ में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में मिल चुके थे। परंतु उस दौरान हमारे बीच इतनी घनिष्ठता स्थापित नहीं हुई थी। उसे घूमना बहुत पसंद है। कभी-कभी तो लगता है कि घूमते रहना ही उसके जीवन का लक्ष्य है। उसे तो मैंने एडवेंचरस एक्सप्लोरर की कैटेगरी में रखा है। हम कभी भी कहीं जाते थे तो प्लानिंग की ज़िम्मेदारी उसी के कंधों पर होती थी। उसे हमारे दोस्तों की टोली "हमारी मैनेजर" के नाम से बुलाती है। साहसी तो इतनी की हर कठिन परिस्थिति उसके समक्ष हार मान जाए। साथ ही मुखर भी थी। किसी भी बात को कहने में कोई संकोच नहीं करती थी। जो सोचती वही करती पर सबकी बातें सुनकर ही आगे बढ़ती थी। पिछले दो वर्षों में आजतक मैंने कभी उसे किसी का निरादर करते नहीं देखा। हमेशा सबकी मदद करने में तत्पर। और यह सिलसिला ऑफिस तक ही सीमित नहीं था। वह स्वभाव से ही ऐसी है। उसके मन के अंदर जो भी चल रहा हो, परंतु उसके चेहरे पर हमेशा मुस्कान बनी रहती थी। उसे कुछ भी कह दो या कोई काम बता दो, जवाब यही मिलता- मैम हो जाएगा। उसके कारण पूरे अनुभाग में एक रौनक बनी रहती थी।

काम के मामले में भी वह उतनी ही तत्पर और परफेक्ट है। कोई भी पत्र या मेल मिलते ही वह उसके निपटान में लग जाती। कभी-कभी तो मुझे उसे कोई हिदायत ही नहीं देनी

पड़ती थी। उसे पता रहता कि उसे क्या करना है। वह अपने अधीनस्त कर्मचारियों का भी ध्यान रखती थी। उनसे अगर कोई गलती हो जाती तो उन्हें सुधार देती और जब भी उन्हें जरूरत पड़ती, उनकी मदद भी करती थी। कभी-कभी तो मुझे भी उससे अच्छी सलाह मिल जाया करती थी। उसने अपने काम तथा व्यवहार के जरिये सभी को अपना बना लिया था। उनकी आँखों में काम सीखने की जिज्ञासा थी और व्यवहार में एक सहज विनम्रता। वह कभी अपने काम को बोझ नहीं समझती थी। ऐसे कई दृष्टांत हैं जहां दूसरों के काम को भी बिना किसी शिकायत के उसने आगे बढ़कर पूरा किया है। हर ज़िम्मेदारी को उसने पूरे मन से निभाया है। कई बार लगता था कि वह खुद से ज़्यादा काम को प्राथमिकता दे रही है। एक वरिष्ठ होने के नाते यह देखकर मैं बहुत ही गर्व महसूस करती थी।

पर कभी-कभी उसकी चिंता भी होती थी। काम के दबाव वाले दिनों में मैंने उसे अक्सर कार्यालय में देर तक रुकते देखा—थकी हुई, लेकिन शिकायत किए बिना। उसकी मुस्कान के पीछे की थकान साफ़ दिखाई देती थी, पर वह हार नहीं मानती थी। कई बार शब्दों से ज़्यादा उसकी ख़ामोशी बोलती थी। उसके व्यक्तित्व में संघर्ष भी था, उम्मीद भी और खुद को साबित करने की चाह भी।

हमारे बीच की बातें केवल कार्यालय से संबंधित विषयों तक ही सीमित नहीं थे। कभी-कभी बातचीत जीवन के उन अध्यायों पर आ टिकती जिनके बारे में किसी से भी सहज रूप से बात नहीं की जा सकती। एक वर्किंग वुमन के लिए ऑफिस और घर में संतुलन बनाए रखना भी जीवन के कठिन लक्ष्यों में से एक होता है। उन कठिनाइयों पर भी बातें होती जो ऐसी महिलाएं अपने दिल के किसी कोने में छुपाए रखती हैं। ऐसे क्षणों में एहसास होता कि वह सिर्फ़ मेरी टीम का हिस्सा नहीं है, बल्कि एक मज़बूत लेकिन संवेदनशील इंसान भी है।

वह छोटी है मुझसे परंतु मैंने उससे बहुत कुछ सीखा है। उसके साथ काम करने का एक अद्भुत अनुभव रहा है। कभी ऐसा भी हुआ है कि किसी काम के डेडलाइन को लेकर मैं

चिंतित हो गई हूँ पर ऐसी परिस्थिति में वह मुझे यह विश्वास दिलाती कि- मैम, आप परेशान मत रहिए। सब ठीक से हो जाएगा। और वह काम हो भी जाता था। उसकी निडरता देखकर मैं निस्तब्ध रह जाती थी। उसने यह सिखाया कि नेतृत्व केवल आदेश देने से नहीं, बल्कि किसी की चुप्पी को समझने से भी होता है। उनसे यह साबित किया कि सच्ची मेहनत शोर नहीं करती, बस अपना काम ईमानदारी से करती है। कई बार उसके प्रयासों ने मुझे खुद पर सोचने पर मजबूर किया–क्या मैं भी उतनी ही ईमानदारी से अपने रोल को निभा पा रही हूँ?

कई बार बच्चों की तरह हठ भी करती थी और हार मानकर मुझे उसकी बात माननी पड़ती थी। कभी-कभी गुस्सा भी आता था पर उसके सामने कुछ नहीं चलता था। बड़ी ही बेबाकी से अपनी हर बात को रखती थी और गलती होने पर माफी मांगने में भी पीछे नहीं हटती थी। अपनी गलती को मानकर, उसे सुधारकर आगे बढ़ना उसे आता था। आज जब वह जा रही है तो मन में अजीब-सा खालीपन है। यह खालीपन किसी सहकर्मी के जाने का नहीं है बल्कि उस इंसान के दूर जाने का है जो रोज़ दिखता था, जिसके साथ मैंने इन दो वर्षों बहुत सारी यादें बनाई हैं। उसकी हंसी पूरे अनुभाग में गूँजती थी। कभी-कभी तो कहना पड़ता कि धीरे! उसकी जगह भले ही खाली हो जाएगी लेकिन उसकी मौजूदगी की छाप हर कोने में महसूस होगी। वह इस अनुभाग का अनंतकाल तक हिस्सा रहेगी। एक साथ काम करने का मौका शायद मुझे दोबारा नहीं मिलेगा परंतु यही आशा रहेगी कि यह रिश्ता हमेशा बना रहे।

उसके साथ इतनी घनिष्ठता हो जाएगी यह विश्वास ही नहीं होता। कुछ रिश्तों को नाम की परिभाषा में नहीं बांधा जा सकता। यह मेरे जीवन में उन्हीं में से एक है। लोग मुख्यत: अपने व्यवहार से याद रखे जाते हैं। और वह हमेशा याद रहेगी। वही थी जिसने सभी को एक धागे में पिरो कर रखा था। सरकारी कार्यालयों में "एम्प्लोई ऑफ द इयर" जैसा कुछ नहीं होता, वरना इस अवार्ड से उसे न जाने कितनी बार नवाजा गया होता।

मुझे पूरा भरोसा है कि सुकन्या तुम जहाँ भी जाओगी, वहाँ अपने इस मिलनसार स्वभाव

और मेहनत से फिर से नए कार्यालय के लोगों के दिलों में अपनी जगह बना लोगी। लेकिन यह भी सच है कि तुम्हारे साथ बिताया गया समय, तुम्हारे साथ काम करने का अनुभव, मेरे दिल में हमेशा एक ख़ास जगह रखेगा। तुम इसी तरह आगे बढ़ती रहो, अपने सपनों को साकार करती रहो, ऐसे ही हँसती रहो और दूसरों को हँसाती रहो।

सुश्री अन्नपूर्ना वर्मा
वरिष्ठ अनुवादक

सरकारी दफ्तर

दीवार की फाँकों से झाँकती पेड़ों की टहनियाँ,
उग आती हैं अन्जाने में अक्सर।
आओ, मिलते हैं इनसे,
ये हैं सरकारी दफ्तर ।।
सीढ़ियों पर जमी हुई धूल
पर पॉलिशदार चमचमाते जूते
जो भी मिले मुस्कुराकर,
एक-दूसरे का हाल पूछे।
दिन की शुरूआत ही हुई
चाय की प्यालियों में बिस्कुट डुबोकर।
आओ, मिलते हैं इनसे
ये हैं सरकारी दफ्तर ।।
पुरानी फाइलों पर गड़ी नज़रें कहीं
तो कहीं कम्प्यूटर चलाती उंगलियाँ,
केबिन के खुलते- बंद होते दरवाज़े
लगातार फोन की बजती घंटियाँ।
व्यस्त हैं सभी अपने-अपने
काम में मन-मस्त होकर।
आओ, मिलते हैं इनसे
ये हैं सरकारी दफ्तर ।।
दिन चढ़ता है और बढ़ती है काम की रफ्तार
कोई घड़ी की ओर देखे बार-बार,
समय हो गया अब अल्प विराम का,
भोजन का और आराम का।
कुछ अपना टिफिन निकाले तो कुछ ने
भूख मिटाई कैंटीन के लाइन में लगकर।
आओ, मिलते हैं इनसे
ये हैं सरकारी दफ्तर ।।

कहीं दूर कोने से आ रही
पुराने गानों की हल्की धुन,
कुछ गुनगुना रहे आहिस्ता से
तो कोई फाइलों के बीच है गुम।
सुबह का उत्साह मंद हो गया, जैसे
धीमी पड़ गई हो समय की हरकत।
आओ, मिलते हैं इनसे
ये हैं सरकारी दफ्तर ।।
दूसरे पहर में कुछ सुस्ता रहे,
कुछ फोन पर लगे बतिया रहे,
सुइयाँ थक गईं, सुबह से हो गई शाम
फाइलों को बंद कर, दिया पूर्ण विराम।
ज़िंदगी की गाड़ी बढ़ती रहती है
यूँ ही दिन भर थककर।
आओ, मिलते हैं इनसे
ये हैं सरकारी दफ्तर ।।
शनिवार, इतवार को 'फैमिली टाइम' बिताकर
फिर मिलते हैं, सोमवार को मुस्कुराकर
आओ, मिलते हैं इनसे
ये हैं सरकारी दफ्तर ।।

"समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।" - (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर।

<u>जोखिम और उसके प्रभाव</u>

श्री अर्जुन मंडल
लेखापरीक्षक

जीवन एक निरंतर यात्रा है, जिसमें हर मोड़ पर नए अवसर और चुनौतियाँ हमारा इंतज़ार करती हैं। इन अवसरों को पाने और चुनौतियों को पार करने के लिए हमें साहस और जोखिम उठाने की क्षमता की आवश्यकता होती है। यह कथन हमें यही सिखाता है कि जोखिम उठाना केवल सफलता पाने का साधन नहीं है, बल्कि यह हमें जीवन के हर अनुभव से सीखने का अवसर भी देता है। जब हम किसी नए कार्य, विचार या लक्ष्य के लिए जोखिम उठाते हैं और उसमें सफल होते हैं, तो हम न केवल अपने लिए बल्कि दूसरों के लिए भी प्रेरणा बनते हैं। सफलता हमें आत्मविश्वास देती है और हमें नेतृत्व की भूमिका निभाने योग्य बनाती है। एक सफल नेता वही होता है जो कठिन परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने का साहस रखता है। हर जोखिम में सफलता नहीं मिलती। कभी-कभी हम असफल भी होते हैं, लेकिन यह असफलता व्यर्थ नहीं जाती। असफलता हमें अनुभव, धैर्य और समझ प्रदान करती है। जब हम अपनी गलतियों से सीखते हैं, तो हम दूसरों को सही दिशा दिखाने में सक्षम होते हैं। इस तरह हम मार्गदर्शक बनकर दूसरों को वही गलतियाँ करने से बचा सकते हैं। जो लोग जोखिम लेने से डरते हैं, वे अक्सर अपनी क्षमताओं की सीमाओं में ही बंधे रह जाते हैं। जोखिम हमें अपनी सीमाओं को तोड़ने, नए अवसर खोजने और जीवन में प्रगति करने का मौका देता है। चाहे परिणाम जीत हो या हार, दोनों ही स्थितियों में हम आगे बढ़ते हैं।

विकास और नवाचार के लिए जोख़िम उठाना आवश्यक है और यह मानव स्वभाव में समाहित है। जोख़िम उठाने के महत्व को कम करके आंकना असंभव है क्योंकि वे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति के लिए आवश्यक हैं। लोग खुद को सीमा तक धकेलने, नई भूमि की खोज करने और स्थिति पर सवाल उठाने के लिए जोख़िम उठाते हैं। समाज जोख़िम उठाए बिना वैज्ञानिक, तकनीकी, कलात्मक या सामाजिक सुधारों के मामले में आगे नहीं बढ़ सकता जैसे कि राजा राम मोहन रॉय ने किया था। इसे सरल शब्दों में कहें तो जोख़िम उठाने से लचीलापन, रचनात्मकता और पूर्णता की खोज को बढ़ावा मिलता है। अनिश्चिंतता और विफलता की संभावना को स्वीकार करके, लोग और संगठन नए अवसरों का लाभ उठा सकते हैं, अमूल्य सबक सीख सकते हैं और असाधारण सफलता प्राप्त कर सकते हैं। डेनिस वेटली के अनुसार- “जीवन

स्वाभाविक रूप से जोख़िम भरा है। केवल एक बड़ा जोख़िम है जिससे आपको हर कीमत पर बचना चाहिए, और वह है कुछ न करने का जोख़िम”।

जो लोग बड़ा जोख़िम उठाने के बाद सफल होते हैं, उन्हें अक्सर नेतृत्व की भूमिका में रखा जाता है, जहाँ वे दूसरों को प्रेरित और प्रोत्साहित कर सकते हैं। भारत में “श्वेत क्रांति के जनक” माने जाने वाले डॉ. वर्गीज़ कुरियन ऐसे ही एक उदाहरण हैं। 1960 के दशक में सहकारी मॉडल बनाकर और भारत में डेयरी व्यवसाय में क्रांति लाकर, डॉ. कुरियन ने बहुत बड़ा जोख़िम उठाया। इस प्रयास में अपनी सफलता के कारण, डॉ. कुरियन एक ऐसे आंदोलन का नेतृत्व करने में सक्षम हुए जिसने ग्रामीण भारत के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को बदल दिया और लाखों किसानों को अधिक शक्ति दी। एक और बेहतरीन उदाहरण डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम का है, जिन्होंने भारत के अंतरिक्ष और मिसाइल कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी दृढ़ता और जोख़िम लेने के रवैये के कारण भारत के पहले उपग्रह का सफल प्रक्षेपण और अग्नि और पृथ्वी मिसाइलों का विकास हुआ। उनकी उपलब्धियों ने न केवल भारत को एक अजेय शक्ति के रूप में स्थापित किया, बल्कि उन्हें एक दूरदर्शी नेता और अनगिनत युवा वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और आम लोगों के लिए प्रेरणा के रूप में भी स्थापित किया। जोखिम लेना आपको ऐसे नए अवसर देता है, जिनके बारे में आपने कभी सोचा भी नहीं होगा। जब आप अपने कम्फर्ट ज़ोन से बाहर निकलते हैं, तो आपकी रचनात्मकता (Creativity) और संभावनाएँ (Possibilities) बढ़ जाती हैं।

डर हमें जकड़ कर रखता है। हम सोचते हैं कि अगर असफल हो गए तो क्या होगा? लेकिन असफलता से सीखकर ही इंसान मजबूत बनता है। जब आप जोखिम लेते हैं, तो आप अपने डर को चुनौती देते हैं और यह एहसास आपको मानसिक रूप से मजबूत बनाता है। अनुभव और शिक्षा के चश्मे से देखा जाए तो असफलता एक बहुत ही उपयोगी मार्गदर्शक उपकरण हो सकती है। जो लोग असफल होते हैं लेकिन अपनी खामियों पर विचार करते हैं वे अक्सर

व्यवहारिक मार्गदर्शक और सलाहकार बन जाते हैं। टाटा समूह के पूर्व अध्यक्ष रतन टाटा एक प्रसिद्ध उदाहरण हैं। उनके कई साहसिक कदमों में से एक रतन टाटा द्वारा हाई-एंड-वाहन निर्माता जगुआर और लैंड रोवर की खरीद थी। भले ही इन कार्यों को लेकर काफी वित्तीय कठिनाई और शुरुआती संशय था, लेकिन टाटा की इन जोखिमों को लेने की इच्छा ने उन्हें अमूल्य सबक सिखाया। सफलता और असफलता के अपने दोहरे अनुभव के कारण, अब उन्हें भावी कॉरपोरेट क्षेत्र में युवा उद्यमियों और स्टार्ट-अप के लिए एक मार्गदर्शक और सलाहकार के रूप में जाना जाता है। ऐसा ही एक और उदाहरण आनंद कुमार का है, जो वित्तीय स्थिति के कारण कैंब्रिज तक पहुँचने में असफल रहे, लेकिन आज वह युवाओं का मार्गदर्शन कर रहे हैं, जिससे वह बड़े-बड़े संस्थानों तक पहुँच रहे हैं।

"एकमात्र वास्तविक गलती वह है जिससे हम कुछ नहीं सीखते।" - हेनरी फोर्ड

लेकिन दूसरी ओर, हमें यह याद रखना चाहिए कि सभी जोखिम उपलब्धियों की ओर नहीं ले जाते। जोखिम व्यापक समग्र उद्देश्य के लिए उठाए जाने चाहिए, न केवल व्यक्तिगत अनैतिक लाभ के लिए, जैसा कि हाल ही में एन.ई.ई.टी. (NEET) पेपर, बी.पी.एस.सी. (BPSC) शिक्षक परीक्षा में पाया गया, जहां पेपर लीक करने और समाज में एक बुरा उदाहरण स्थापित करने के लिए जोखिम उठाया गया था। कुछ दिन पहले एक बार फिर बिहार में पड़रिया पुल बेहिसाब जोख़िम की मंशा में निहित था। किंगफ़िशर एयरलाइन्स का पतन उच्च-दांव जोखिमों से जुड़े खतरों की एक कठोर याद दिलाता है। इसलिए सभी जोख़िम नेतृत्व और मार्गदर्शन करने में मदद नहीं करते हैं।

उपरोक्त उदाहरण बताते हैं कि जोख़िम समाज और राष्ट्रीय लाभ के लिए उठाया जाना चाहिए और इसे वसुधैव कुंटुम्बकम् दर्शन से प्रेरित और निर्देशित किया जाना चाहिए। वर्तमान समय में जोख़िम लेने की प्रवृत्ति विकसित की जानी चाहिए। लुईस करोल ने कहा- "अंत में, हमें केवल उन अवसरों पर पछतावा होता है जिन्हें हमने नहीं लिया।" इसलिए, जोख़िम लेने की मानसिकता विकसित करना करियर और व्यक्तिगत विकास दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। एक अभिनव और प्रयोग

करने वाली संस्कृति को अपनाना आवश्यक है। वर्तमान समय में जोख़िम लेने की प्रवृत्ति को अभिनव सोच को बढ़ावा देकर, पूर्वधारणाओं पर सवाल उठाकर और कर्मचारियों, अधिकारियों और छात्रों के बीच नई अवधारणाओं को आज़माकर बढ़ावा दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए, अटल टिंकरिंग लैब एक ऐसा प्रयास है जिसे अधिक से अधिक स्कूलों में व्यापक रूप से अपनाया जाना चाहिए। उन्नयन बांका जैसी पहल को बिहार के अन्य स्कूलों जैसे प्राथमिक विद्यालयों में भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

लोगों को संसाधनों और सहायता नेटवर्क तक पहुँच प्रदान करने से उन्हें जोख़िम उठाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। प्रशिक्षण सत्र, वित्तपोषण स्रोत और सलाह कार्यक्रम भावी पेशेवरों और व्यवसाय मालिकों को वो कौशल और आत्म-विश्वास प्रदान कर सकते हैं जिनकी उन्हें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यकता है जैसा कि इसरो ने यूविका परियोजना के माध्यम से प्रयास किया है। इसके अलावा, लचीलापन विकसित करना और गलतियों से सीखना महत्वपूर्ण है। लोग गलतियों को असफलताओं के बजाय शिक्षण के अवसर के रूप में देखकर लचीलापन और अनुकूलनशीलता विकसित कर सकते हैं। नियोक्ता और शैक्षणिक संस्थान दोनों अपने पाठ्यक्रमों और व्यवसायिक विकास पहलों में लचीलापन प्रशिक्षण और विफलता प्रबंधन पाठ्यक्रम शामिल करके एक बड़ा अंतर ला सकते हैं।

जोखिम लेना आसान नहीं होता, लेकिन यह सफलता की कुंजी है। जो लोग जीवन में बड़े फैसले लेने की हिम्मत रखते हैं, वही इतिहास रचते हैं। इसलिए डर को पीछे छोड़िए, नए अवसरों को अपनाइए और अपने सपनों को साकार कीजिए। याद रखिए – जोखिम लेने वाले ही दुनिया को बदलते हैं। जोखिम उठाना जीवन का अभिन्न हिस्सा है। जीत हमें नेतृत्व की शक्ति देती है और हार हमें मार्गदर्शन की बुद्धि। इसलिए, हमें डर के बजाय साहस को अपनाना चाहिए और हर अवसर को सीखने और आगे बढ़ने का माध्यम मानना चाहिए। जोखिम उठाना नवाचार, व्यक्तिगत विकास और समाज की उन्नति के लिए आवश्यक है, जब इसे समग्र रूप से और दीर्घकालिक दृष्टिकोण से देखा जाए। जोखिम उठाने के मामले में जीतने और हारने के बीच का अंतर महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। जीतने से लोगों को नेतृत्व करने और प्रेरित करने की स्थिति में रखा जाता है, जबकि हारने से उन्हें ज्ञान और दिशा मिलती है। दोनों परिणाम ज्ञान और सामाजिक उन्नति के भंडार में वृद्धि करते हैं और अंत में यह याद रखना चाहिए-"जहाज बंदरगाह में सुरक्षित है, लेकिन जहाज इसके लिए नहीं है"।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.): मित्र या शत्रु

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.): मित्र, शत्रु, या हमारे लिए महज एक और उपकरण?

श्री शिलादित्य सिन्हा
लेखापरीक्षक

ए.आई. अब कोई भविष्य की अवधारणा नहीं रही जो केवल साइंस फिक्शन या शोध प्रयोगशालाओं तक सीमित हो। यह पहले से ही हमारे हर रोज़ के पेशेवर जीवन में इतनी सहजता से शामिल हो चुकी है कि हम इसे मुश्किल से ही महसूस कर पाते हैं। ई-मेल फ़िल्टर और सिफारिश प्रणाली से लेकर स्वचालित रिपोर्ट, चैटबॉट और पूर्वानुमान विश्लेषण तक, ए.आई. धीरे-धीरे एक सहकर्मी बन चुका है जिसे हमने औपचारिक रूप से नियुक्त नहीं किया, लेकिन अब हम दैनिक रूप से उस पर भरोसा करते हैं।

फिर भी इसकी व्यापक उपस्थिति के बावजूद, ए.आई. लगातार चर्चा, जिज्ञासा, उत्साह और भय को समान रूप से उजागर करता है। कुछ लोग इसे एक वफादार मित्र के रूप में देखते हैं - एक ऐसा सहायक जो काम को तेज, स्मार्ट और अधिक प्रभावी बनाता है। अन्य इसे एक संभावित विरोधी के रूप में देखते हैं, जो नौकरी की सुरक्षा, मानव निर्णय और नैतिक सीमाओं को चुनौती देता है। एक तीसरा दृष्टिकोण यह बताता है कि ए.आई. न तो मित्र है और न ही दुश्मन, बल्कि केवल एक उपकरण है - शक्तिशाली और तटस्थ जो पूरी तरह से इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसे कैसे उपयोग करना चुनते हैं।

तो सच्चाई क्या है? क्या ए.आई. हमारे साथ काम कर रहा है या हमारे खिलाफ या केवल हमारे लिए?

- **<u>सामान्य कामकाज में ए.आई. का उदय:</u>**

पिछली तकनीकी क्रांतियों - जो काफी शोर-शराबे और तमाशे के साथ आई थीं, इसके विपरीत ए.आई. काफी धीरे-धीरे उन्नत हुआ है। कोई एक ऐसा विशेष समय नहीं था जब संगठनों ने ए.आई को "चालू" किया हो। इसके बजाय, यह धीरे-धीरे सिस्टम में शामिल हुई - पहले ऑटोमेशन के रूप में, फिर सहायता के रूप में, और अब सहयोग के रूप में।

कई विभाग पहले से ही नियमित कार्यों के लिए ए.आई.-संचालित यंत्रों पर निर्भर हैं: आँकड़ों को व्यवस्थित करना, रुझानों की पहचान करना, परिणामों का अनुमान लगाना और दोहराए जाने वाले प्रक्रियाओं को संभालना। जो कार्य पहले घंटों लेते थे, अब मिनटों में किए जा सकते हैं। जिन्हें पहले विशेष विशेषज्ञों की आवश्यकता होती थी, अब सरल प्रॉम्प्ट्स या इंटरफेस के माध्यम से उपलब्ध है।

यह क्रमिक एकीकरण ही एक कारण है कि ए.आई. परिचित होने के साथ-साथ असहज भी लगता है। इसने रातों-रात हमारे कार्य को प्रतिस्थापित नहीं किया, लेकिन इसने निस्संदेह काम करने के तरीके को बदल दिया है। और इस बदलाव के साथ एक अपरिहार्य सवाल आता है: ए.आई.-संपन्न कार्यस्थल में हमारी भूमिका क्या है?

- **<u>मित्र के रूप में ए.आई.: मानव क्षमता को बढ़ाना :</u>**

कई पेशेवरों के लिए, ए.आई. एक लंबे समय से प्रतीक्षित साथी के समान लगता है। अपने सर्वोत्तम रूप में, ए.आई. काम से रुकावटों को दूर करता है। यह थकाऊ, दोहराए जाने वाले और मानसिक रूप से थका देने वाले कार्यों को संभालता है, जो अक्सर हमारे कीमती समय और ऊर्जा को खा जाते हैं। ऐसा करके, यह लोगों को उच्च-स्तरीय जिम्मेदारियों - रणनीति, रचनात्मकता, सहयोग और निर्णायक सोच - पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देता है।

ए.आई. एक संज्ञानात्मक साथी के रूप में भी कार्य कर सकता है। यह किसी भी इंसान से तेजी से विशाल आँकड़ों की मात्रा का विश्लेषण कर सकता है, उन पैटर्न को उजागर कर सकता है जो हमसे अनदेखा रह जाते हैं और ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है जो बेहतर निर्णय लेने में मदद करते हैं। उन विभागों में जो आँकड़ों पर भारी निर्भर रहते हैं, उनके लिये ये वरदान है। ए.आई. विशेषज्ञता की जगह नहीं लेता; यह इसे स्पष्ट, तेज़ इनपुट प्रदान करके बढ़ाता है।

ए.आई. का एक और शक्तिशाली लाभ इसकी पहुँच है। ऐसे उपकरण जो पहले उन्नत तकनीकी कौशल की आवश्यकता रखते थे, अब काफी अधिक लोगों द्वारा इस्तेमाल किए जा सकते हैं। लेखन सहायता, डेटा विज़ुअलाइज़ेशन, भाषा अनुवाद और विचार उत्पन्न करना अब अधिक समावेशी बन गया है। इस दृष्टि से, ए.आई. केवल उत्पादकता बढ़ाने का काम ही नहीं करता, बल्कि बाधाओं को भी कम करता है।

अगर इसे सावधानीपूर्वक इस्तेमाल किया जाए तो यह एक प्रतियोगी की बजाय एक सहयोगी बन जाता है। यह श्रेय नहीं लेता, थकता नहीं और न ही नीरस काम करने में आपत्ति करता है। यह कई मायनों में एक बहुत अच्छे मित्र की तरह महसूस होता है।

- **<u>ए.आई. एक दुश्मन के रूप में: चिंता, नैतिकता और नियंत्रण की हानि :</u>**

इसके फायदों के बावजूद, ए.आई. को लेकर मानव-डर को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। तकनीकी आशावाद अक्सर उस वास्तविक विघटन को अनदेखा कर देता है जो नवाचार पैदा करता है - विशेष रूप से नौकरियों, कौशल और पेशेवर पहचान पर।

सबसे अधिक व्यक्त की जाने वाली चिंता विस्थापन है। यदि ए.आई. लिख सकता है, विश्लेषण कर सकता है, भविष्यवाणी कर सकता है और अनुकूलन कर सकता है, तो उन लोगों का क्या होगा जिनकी भूमिकाएँ कभी उन कार्यों पर निर्भर थीं? जबकि इतिहास इस बात का

सुझाव देता है कि नई तकनीकें नई भूमिकाएँ बनाती हैं, संक्रमण कभी भी सहज या समान रूप से वितरित नहीं होता। व्यक्तियों और विभागों दोनों के लिए, यह अनिश्चितता खतरे की तरह महसूस हो सकती है।

यहाँ अत्यधिक निर्भरता का खतरा भी होता है। जब ए.आई. समस्या हल करने का डिफ़ॉल्ट माध्यम बन जाता है, तो मानव-कौशल कमज़ोर हो सकते हैं। अगर हम महत्वपूर्ण सोच, निर्णय क्षमता, और यहाँ तक कि रचनात्मकता का अभ्यास बंद कर दें, तो ये कमजोर हो सकते हैं। ए.आई. द्वारा उत्पन्न उत्तर तेज़ और बेहतर दिख सकते हैं, लेकिन तेज़ी हमेशा बुद्धिमानी के बराबर नहीं होती।

नैतिक चिंताएँ स्थिति को और जटिल बनाती हैं। ए.आई. सिस्टम मौजूदा आँकड़ों से सीखते हैं, जिसका मतलब है कि वे पूर्वाग्रहों को अपना सकते हैं, असमानताओं को बढ़ावा दे सकते हैं, और त्रुटिपूर्ण धारणाएँ बना सकते हैं। जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता-संचालित निर्णयों का प्रभाव भर्ती, मूल्यांकन, पहुँच या अवसर पर पड़ता है, तो ये पूर्वाग्रह गंभीर परिणाम ला सकते हैं। कई ए.आई. सिस्टम की अस्पष्टता–जिसे अक्सर "ब्लैक बॉक्स" कहा जाता है - को कठिन बनाती है। जब कुछ गलत होता है, जिम्मेदारी अस्पष्ट हो जाती है।

इस दृष्टिकोण से, ए.आई. एक सहायक मित्र के बजाय ऐसी शक्ति लगती है जिसे सावधानीपूर्वक प्रबंधित करना आवश्यक है।

- **ए.आई. सिर्फ एक उपकरण के रूप में: एक ठोस परिप्रेक्ष्य :**

शायद ए.आई. को समझने का सबसे आसान तरीका भी बिल्कुल आसान ही है: ए.आई. एक उपकरण है। एक असाधारण रूप से शक्तिशाली उपकरण, लेकिन मात्र एक उपकरण।

इतिहास इसके कई उदाहरण प्रस्तुत करता है। जैसे कि- कैलकुलेटर ने गणितीय सोच-समझ को समाप्त नहीं किया; उन्होंने उसका फोकस बदल दिया। स्प्रेडशीट ने वित्त विभागों को नष्ट नहीं किया; उन्होंने वित्तीय काम करने के तरीके को बदल दिया। इंटरनेट ने विशेषज्ञता को अप्रासंगिक नहीं बनाया; उसने सूझ-बूझ को अधिक महत्वपूर्ण बना दिया।

हर मामले में, तकनीक स्वयं तटस्थ है। इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि लोग इसे कैसे इस्तेमाल करते हैं, इसे कैसे नियंत्रित करते हैं, और उसके इस्तेमाल के लिए अपनी क्षमताओं को कैसे ढालते हैं।

इस नजरिए से देखने पर, ए.आई. मानव-निर्णय को प्रतिस्थापित नहीं करता - यह बेहतर निर्णय की माँग करता है। यह दायित्वों को खत्म नहीं करता - यह उसे स्थानांतरित करता है। पेशेवरों की कद्र केवल कार्य करने की क्षमता के लिए नहीं की जाती, बल्कि सही सवाल पूछने, परिणामों की व्याख्या करने और निर्णय लेने की क्षमता के लिए भी की जाती है।

एआई. सक्षम वातावरण में मुख्य कौशल सब कुछ जानने का नहीं है, बल्कि यह जानने का है कि विशिष्ट बुद्धिमत्ता वाले प्रणालियों के साथ कैसे काम करना है, कब उन पर भरोसा करना है, कब उन्हें चुनौती देना है, और कब मानवीय अंतर्दृष्टि पर निर्भर रहना है।

- **काम के बारे में ए.आई. जो बदलता है - और जो नहीं बदलता**

ए.आई. निःसंदेह वर्कफ़्लो, अपेक्षाओं और कौशल आवश्यकताओं को बदल देता है। गति बढ़ती है। उत्पादन बढ़ता है। पुनरावृत्ति आसान हो जाती है। लेकिन कुछ चीजें केवल मानव के लिए ही बनी रहती हैं।

ए.आई. संदर्भ को पूरी तरह से उस तरीके से नहीं समझ सकता जैसे मानव समझते हैं। यह संगठनात्मक संस्कृति, भावनात्मक बारीकियों या नैतिक अपरिभाषित क्षेत्रों को उस गहराई से नहीं समझ सकता जितनी गहराई से मानव इसे समझते हैं। यह परिणामों की जिम्मेदारी नहीं लेता। और इसकी कोई मान-प्रतिष्ठा नहीं होती - सिर्फ पैटर्न होते हैं।

इसका मतलब यह है कि मानव भूमिकाएँ गायब होने के बजाय विकसित होती हैं। संचार, नेतृत्व, नैतिक तर्क, अनुकूलन क्षमता और रचनात्मकता अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं - कम नहीं। विडंबना यह है कि जैसे-जैसे ए.आई. अधिक उन्नत होता है, उसी तरह अनोखी मानव क्षमताओं का मूल्य अधिक बढ़ जाता है।

तो असली जोखिम यह नहीं है कि ए.आई. हमें बदल देगा - बल्कि यह है कि हम उस दुनिया में जहाँ ए.आई. मौजूद है, अपने मूल्य को परिभाषित करने में असफल हो जाते हैं।

- **विभागों और संगठनों के लिए प्रभाव** :

विभागों के लिए, ए.आई. संवाद को प्रचार और भय से परे, सोच-समझ कर एकीकरण की दिशा में ले जाना चाहिए। इसमें स्पष्ट दिशानिर्देश, पारदर्शिता, और निरंतर सीखने की प्रक्रिया शामिल है। कर्मचारियों को केवल कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपकरणों तक पहुँच ही नहीं, बल्कि उनमें इसे गम्भीरतापूर्वक उपयोग करने का आत्मविश्वास और कौशल भी होना चाहिए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ सफल होने वाले संगठन वे होंगे जो इसे मानव सोच का विकल्प मानने के बजाय एक सहायक प्रणाली के रूप में देखेंगे। वे कौशल विकास में निवेश करेंगे, प्रयोग को प्रोत्साहित करेंगे, और नैतिक विचार-विमर्श के लिए स्थान बनाएंगे।

सबसे महत्वपूर्ण, वे निर्णय लेने में इंसानों को केंद्र में रखेंगे।

- **निष्कर्ष: सवाल वास्तव में हमारे बारे में है**

तो, क्या ए.आई. एक मित्र है, एक शत्रु है, या सिर्फ एक उपकरण है?

सही उत्तर है: तीनों, इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसे कैसे अपनाते हैं।

ए.आई. मित्र है जब यह हमें सशक्त बनाता है।

यह एक शत्रु है जब हम निर्णय देने से पीछे हटते हैं या परिणामों को अनदेखा करते हैं। और यह एक उपकरण है जब हम इसका उपयोग अभिप्रायपूर्वक, गंभीरतापूर्वक और उत्तरदायित्वपूर्वक करते हैं।

अंततः, कृत्रिम बुद्धिमत्ता कार्य के भविष्य को परिभाषित नहीं करता–हम करते हैं। आज हम जो निर्णय लेते हैं कि हम ए.आई. का उपयोग कैसे करते हैं, वे न केवल उत्पादकता को आकार देंगे, बल्कि हमारे पेशेवर जीवन में विश्वास, निष्पक्षता और अर्थ को भी प्रभावित करेंगे।

शायद सबसे महत्वपूर्ण यही महसूस करना है: ए.आई. हमें कम मानव बनने की बजाय अधिक मानव बनने की चुनौती देता है। अधिक गहराई से सोचने, अधिक जिम्मेदारी के साथ काम करने और अधिक समझदारी से निर्णय लेने के लिए। और इस चुनौती में उसकी सबसे बड़ी कीमत छिपी है - हमारा विकल्प बनने के बजाय, यह हमारे काम में वास्तव में महत्वपूर्ण चीजों का प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है।

"हमारी नागरी दुनिया की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है।" - राहुल सांकृत्यायन।

सीख देने वाली कविता

श्री सुबास प्रसाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पथ पर चलना होगा खुद, डर को पीछे छोड़,
हर मुश्किल का सामना कर, बढ़ते रहना जोड़।
आसमान को छूने की चाह रख, मन में एक विश्वास,
हर हार में छिपी होती है, जीत की तलाश।
गिरने से डरना नहीं, हर बार उठना सीख,
हार-जीत का खेल है जीवन, अनुभवों को लिख।
हिम्मत हो अगर दिल में, पहाड़ भी झुक जाएगा,
जो खुद पर रखे भरोसा, समय भी रुक जाएगा।
सपनों को हकीकत कर, मेहनत की मशाल जलाओ,
हर रुकावट से लड़कर, अपनी मंज़िल पाओ।
जीवन है गुरु, हर पल सिखाए,
जो सीखेगा वही आगे बढ़ पाए।
हौसले की उड़ान भरो, उम्मीद का दीप जलाओ,
हर बाधा को पार कर, अपना जीवन सजाओ।
सपनों का पीछा करो, न हार मानो,
जीवन के हर पल में, खुद को पहचानो।
ऊँचा रखो नजरिया, मंज़िल को पाना है,
हर रुकावट को तोड़कर, आगे बढ़ जाना है।
हिम्मत और जुनून से, अपने पंख फैलाओ,
जीत तुम्हारी होगी, बस खुद पर ऐतबार लाओ।

उड़ान

श्री प्रमोद कुमार दास
कनिष्ठ अनुवादक

धूल का स्वभाव ही है कि वह हवा का सहारा पाकर उड़े, जितनी तेज हवा उतनी ऊँचाई तक धूल उड़ सकती है, हवा के वेग के साथ कदम से कदम मिलाकर वह दौड़ती है, हवा के साथ अठखेलियां करती है, इतराती है, इठलाती है और फिर.... फिर क्या हवा का बहना बंद होते ही औंधे मुंह गिरती है और धरती उसे अपनी गोद में सहारा देती है। भला धूल कभी स्वंय उड़ कर आसमान की ऊंचाई को छू सकी है क्या जो वसुधा छू पाती? इन्हीं विचारों से घिरी हुई वसुधा के मोबाइल में किसी अनजान नंबर से कॉल आया, कॉल रिसीव करने में उसने तनिक भी देर नहीं की।

उसे अनजान नंबर से किसी पूर्व परिचित की आवाज सुनाई दी।

"क्या तुम वसुधा हो? मैं अनिल, पहचाना क्या? हम आदर्श विद्या भवन में 10वीं तक साथ पढ़े थे।"

वसुधा ने कहा- "हां, तुम्हें कौन भूल सकता है। तुम इतने बदमाश ही थे कि टीचर तुमसे हमेशा क्रोधित ही रहते थे, लेकिन 10वीं की परीक्षा के बाद तुम दिखाई नहीं दिए। पढ़ाई कर रहे हो या छोड़ दी?"

अनिल ने कहा- "मैंने स्वभाव और असुविधा से त्रस्त होकर घर त्याग दिया था। लेकिन कुछ खास कर भी नहीं पाया। अभी एक कंपनी में काम कर रहा हूँ।"

"क्या काम कर रहे हो?"- वसुधा ने पूछा।

"काम के बारे में बताऊंगा तो तुम्हें समझ में नहीं आएगा।"

"बताओ, जरा मैं भी सुनू तो।"

"मजेदार काम है। आराम से पंखे के नीचे बैठकर ट्रेनिंग देनी है और मजेदार बात तो यह है कि यहां रहना और खाना भी फ्री है।"

"ऐसा क्या!"

"हाँ जी, बिल्कुल, ऐसा ही है।"

"अच्छा है, तुम और अच्छे से मन लगाकर काम करो और तरक्की करो। मेरा क्या है, न कोई सपना, न कुछ करने की इच्छा। यह कहते हुए वसुधा ने गहरी साँस ली।"

क्षणभर की खामोशी के बाद अनिल ने कहा- "तुम यहां आ जाओ। कुछ काम करोगी तो मन अच्छा रहेगा और कुछ आमदनी भी हो जाएगी।"

वसुधा ने पूछा - "तो उसके लिए क्या क्वालिफिकेशन लगता है और कौन सी परीक्षा देनी होती है?"

अनिल ने बताया - "इसके लिए जो योग्यता चाहिए, वह है तुम्हारे पास; और परीक्षा देने की जरूरत नहीं है, मैं सब कुछ देख लूंगा। हां, काम शुरु करने के पहले तुम्हें एक ट्रेनिंग लेनी पड़ेगी, जो छः महीनें की है और जिसमें कुल मिला कर तीस हजार रूपये का खर्च है। बस उसके बाद काम करो और हर महीने चेक मिलता रहेगा।"

वसुधा बोली- "अच्छा सोच कर बताऊँगी।" और कॉल काट दिया।

नदी की धीमी धारा की भांति वसुधा की जिंदगी अपने रास्ते पर बह रही थी। परंतु धारा के बीच अवरोध आने पर जल प्रवाह की गति कभी बाधित होती तो कभी जल-प्रपात की भांति किसी ऊंचे पर्वत से अचानक नीचे गिरने से उसकी गति अनियंत्रित हो जाती है। दिन बीतता गया। वसुधा के चेहरे की उदासी भी बढ़ती गई। एक दिन उसकी माँ ने पूछा- "क्या बात है वसुधा, आज-कल बहुत चुप-सी रहती हो। न किसी से बात करती हो, न ढंग के कपड़े पहनती हो और न ही खाना सही से खा रही हो। कोई बात हो तो बताओ।"

वसुधा ने कहा - "मैं कुछ काम करना चाहती हूँ। लेकिन वहां जा कर पहले ट्रेनिंग लेनी होगी।"

"कैसी ट्रेनिंग?"

"मेरा एक दोस्त जो 10वीं कक्षा में मेरे साथ ही पढ़ाई करता था, एक ट्रेनिंग करके अब मजे से कमा रहा है। वह कहता है कि वहां उसे कंपनी की तरफ से ही रहना-खाना सब मिलता है।"

"ठीक है। मेरी उनसे बात करवाना।"

अगले दिन सूर्योदय की भांति उसके जीवन में भी सूर्योदय हुआ। लेकिन धूप में वैसा तेज नहीं था। वह अनिल को कॉल करती है। अनिल से बात करके वह संतुष्ट नहीं होती। तब अनिल

ने फोन अपने सीनियर को दिया। सीनियर ने खुद को शॉर्क कंपनी में जॉब कंसल्टेंट, विक्रम सिंह बताया। उसने वसुधा को समझाते हुए कहा - “हमारे पास टॉप कंपनियों के साथ टाइ-अप है। ट्रेनिंग के बाद आपको 5 हजार रुपये का पहला चेक मिलेगा। आप एक बड़े शहर में रहेंगी, और आपके माता-पिता को भी आप पर गर्व होगा। और हाँ, ट्रेनिंग के दौरान आपको अपने नीचे तीन और कैंडिडेट को जोड़ना होगा, जिससे आपको अतिरिक्त बोनस भी मिलेगा।”

विक्रम सिंह का घोटाला एक घोस्ट पाइप पौधे की तरह था, जो अपनी खास बनावट और रंग से जीवों को अपनी ओर आकर्षित करता है और उन्हें अपना शिकार बनाता है। वसुधा उस मासूम जीव की भांति उस चमक-धमक में फंसती गई। उसने अपने माता-पिता को बताया। उन्होंने अपने खेत को बेचकर 30,000 रुपये का इंतजाम किया। वसुधा ने पैसे जमा कर दिए। कुछ दिनों बाद एक “ट्रेनिंग प्रोग्राम” का पत्र उसे मिला। पत्र को हाथ में थामें वसुधा भविष्य के सुनहरे स्वप्न में खोने लगी। अब सब कुछ अपने मन का होगा, अपनी सैलरी, अपना सम्मान, सहेलियों के बीच काफी इज्जत मिलेगी। अब किसी चीज के लिए मम्मी-पापा के सामने हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा......आदि।

अगली सुबह वसुधा बैग पैक करती हुई अपनी मम्मी से कहती है, “अरी मां! तुम क्यों परेशान होती हो, मैं अपना ख्याल रख सकती हूँ और पापा से कहो कि चिंता न करें।”

“हाँ, हाँ, क्यों नहीं! तुम अब नानी जो हो गई। खैर, तुम पापा की बात मानो, और देर रात तक बाहर मत रहना, समय पर हॉस्टल आ जाना, रूम में आकर रोज फोन करना। और यहां की चिंता मत करना।”

इतने में पापा आवाज लगाते हैं, “तुम लोगों की बात हो गई हो तो बाहर आ जाओ, रिक्शावाला कब से आकर इंतजार कर रहा है।”

रिक्शा पर बिठाकर मम्मी-पापा दोनों वसुधा को विदा करते हैं। वसुधा की नई यात्रा शुरू हो गई। बस स्टैंड पर उतर कर उसने जल्दी से बस का टिकट लिया। पीछे से रिक्शावाला बोलता है, “दीदी रिक्शा का किराया देना भूल गईं क्या?”

वसुधा बोलती है, “नहीं, नहीं, मेरे पास छुट्टे नहीं थे, ये लीजिए अपना किराया।”

किराया देकर वह बस पर बैठी। बस धीरे-धीरे गतिमान हुई। बस की गति के साथ उसके हृदय की गति भी हर पल बढ़ती जा रही थी। वह लगातार अपने अतीत के पन्नों को जल्दी से पलटने की कोशिश कर रही थी ताकि जगमगाते भविष्य का पन्ना जल्दी से नजदीक आए।

आज वसुधा का प्रथम ट्रेनिंग क्लास है और वह देर होना नहीं चाहती है। अपना नियमित कार्य जल्दी से समाप्त कर के वह जल्द से जल्द क्लास पहुँच जाना चाहती है, लेकिन फिर भी थोड़ी देर हो जाती है। वसुधा जब पहली बार ट्रेनिंग क्लास में प्रवेश करती है तो उस समय ट्रेनिंग क्लास चल रही होती है। क्लास में सभी के पहनावे देखकर उसे आश्चर्य होता है।

विक्रम सिंह सभी से पूछता है - क्या तुम सब नहीं चाहते कि तुम्हारे माता-पिता तुम पर गर्व करें?

सभी एक साथ कहते हैं- "हाँ, चाहते हैं।"

विक्रम सिंह फिर सभी से पूछते हैं- क्या तुम्हारे माता-पिता एक बेहतर जीवन, बेहतर कपड़े, बेहतर खाना, बेहतर घर, बेहतर इलाज, बेहतर सुविधाएं इस उम्र में भी पाने के अधिकारी नहीं हैं?

"यस सर, हम चाहते हैं"- सभी का एक साथ जवाब आया।

विक्रम सिंह आगे कहते हैं- यह सब तभी संभव है जब तुम सफल होगे, और तुम्हारी सफलता तुम्हारे मेहनत पर निर्भर करती है। इसलिए मन लगाकर ट्रेनिंग पूरी करो और अपने मित्रों को भी अपने साथ इस उन्नति की राह पर लेकर आओ। तुम चाहते हो न कि वे भी अमीर बनें?

"यस सर" जवाब आया।

यदि तुम्हारा पूरा परिवार, तुम्हारे दोस्त सभी एक साथ बी.एम.ड्ब्ल्यू. से उतरते हुए नजर आएंगे तो कैसा नजारा होगा?

"बहुत अच्छा"

उनका प्रश्न ऐसा ही रहता था कि न चाहते हुए भी सभी को उत्तर में "हाँ" अथवा "ना" ही कहना पड़ता था। ट्रेनिंग में चाहे कुछ हो, न हो, सभी को अच्छे कपड़े पहनना सीखा दिया।

"तो सभी कल से नहीं, अभी से यहां से जाकर फोन करने में लग जाओ। गेम खेलने या रिल्स देखने में नहीं लगना बल्कि अपने दोस्तों से बात करो और यहां बुलाओ, कंपनी जॉइन कराओ। जो जितनी जल्दी यह टारगेट पूरा करेगा, उसे चेक मिलना शुरू हो जाएगा।"- विक्रम ने आदेश के लहजे से कहा।

इसी बीच विक्रम के फोन की रिंग बज उठती है। वह इस बात से अनजान कि माइक ऑन है, कहता है कि वह फाइव स्टार होटल में अभी ट्रेनिंग दे रहा है, हर क्लास के पांच हजार रूपये मिलते हैं और हर दिन एक क्लास लेनी पड़ती है। तुरंत उसे समझ में आता है, तो माइक ऑफ कर देता है। इस तरह क्लास समाप्त हो जाती है।

वसुधा ट्रेनिंग क्लास नियमित रुप से करती थी। लेकिन ट्रेनिंग क्लास उसे कुछ अटपटी-सी लगी। ट्रेनिंग में कुछ खास सिखाया भी नहीं जाता था जो कि किसी भी काम का हो। हाँ, मोटिवेट तो इतना किया जाता था कि उसने भी अपने नीचे 2 लड़कियों को कंपनी जॉइन करवा दिया।

दिन-प्रतिदिन वसुधा की सेहत गिरती जा रही थी। खाने के नाम पर सुबह चाय और पावरोटी, दोपहर में चावल, दाल और आलू-मटर की सब्जी, तथा रात को रोटी या चावल और आलू-मटर की सब्जी या घूघनी मिलती थी। इस तरह चार महीने बीत गए और एक हरा-भरा पौधा सूखने के कगार पर आ गया।

समय कभी भी एक जैसा नहीं रहता है। रात भले ही कितनी अंधेरी हो, सूरज की रोशनी के साथ एक-एक परत हटती जाती है और अंततः दिन के उजाले की भांति सब कुछ साफ दिखाई देने लगता है। वसुधा अब बिल्कुल भी किसी संशय में नहीं थी। जिस हवा की गति में वह आसमान में उड़ जाना चाहती थी, वह हवा, असल में तूफ़ान था जो अपने साथ उड़ा कर ले जाने वाले को तहस-नहस कर देता है। वह समझ चुकी थी कि उसने अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली है। अगले दिन वह अपना सामान पैक करती है और उस पैकिंग के साथ आसमान में उड़ने का ख्वाब भी धूमिल होता जाता है।

वसुधा अपना बैग लेकर बस स्टॉप पर बस के इंतजार में खड़ी है। उसे बस स्टॉप तक छोड़ने आई दोनों लड़कियों की आंखें नम हैं। वह दोनों न कुछ कह पा रही हैं और न समझ पा रही हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए। बस आती है, वसुधा बस में सवार होती है। कुछ ही पल में बस उन दोनों की आंखों से ओझल हो जाती है।

अरावली

श्री धर्मेंद्र कुमार
डी.ई.ओ.

अरावली भारत के पश्चिमी भाग राजस्थान में स्थित एक पर्वतमाला है। इसे राजस्थान में आडावाला पर्वत के नाम से भी जाना जाता है। भारत की भौगोलिक संरचना में अरावली प्राचीनतम पर्वत श्रेणी है, जो गोडवाना लैंड का अवशेष है। यह संसार की सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखला है। लेकिन आज यह अपने अस्तित्व को बचाने के लिए जद्दोजहद कर रही है। कुछ लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए इसके आस्तित्व को खतरे में डाल दिया है।

हमने भूगोल में पढ़ा है कि अरावली पर्वतमाला उस समय की है जब दुनिया कुछ भी नहीं थी। ऐसा माना जाता है कि अरावली का निर्माण अवसादीकरण से हुआ है। अरावली पर्वत श्रृंखला

की अनुमानित आयु 570 मिलियन वर्ष है। इसकी उत्पत्ति प्रीकैम्ब्रियन युग में हुई। इसका मतलब यह है कि यह संसार की सबसे प्राचीन पर्वतमालाओं में से एक है। भारत की भौगोलिक संरचना में अरावली प्राचीनतम पर्वत श्रेणी है, जो गोंडवाना लैंड का अवशेष है। हमने ये भी पढ़ा है कि किसी भी भू -भाग की ऊँचाई समुद्र तल से मापी जाती है। किन्तु बहुत शर्म की बात है की कुछ लोगों ने अपने लालच की वजह से इसके माप की परिभाषा दी है, ताकि इससे उन्हें अनुचित लाभ मिले। यह पर्वत दिल्ली, हरियाणा और राजस्थान को अनेक अनदेखे प्राकृतिक प्रकोपों से बचाता है। यदि अरावली पर्वत नहीं रहा तो राजस्थान से चलने वाली रेतीली हवा सीधे दिल्ली में प्रवेश करेगी, जिससे दिल्ली का तापमान भी बढ़ेगा साथ ही वहाँ का वातावरण भी दूषित होगा।

यह रेतीली हवा धीरे-धीरे दिल्ली से आगे बढ़कर हिमालय के हिम पर गिरेगी। जब धूप हिमालय के हिम पर पड़ती है, तो हिम की सफेदी के कारण ये धूप को परवर्तित कर देती है । बर्फ के धीरे-धीरे पिघलने से कई नदियों का उद्गम होता है, किन्तु जब ये रेत इन बर्फ पर पड़ेगी तो ये धूप को अवशोषित कर लेगी और रेत के गर्म होने से यह बर्फ तेजी से पिघलने लगेगी जिससे कई नदियों में अचानक पानी बढ़ जाएगा, जिससे बिहार और उत्तर प्रदेश में बाढ़ जैसा संकट पैदा हो सकते हैं।

अनेक प्रमुख नदियों- बनास, लूनी, साखी एवं साबरमती नदियों का जन्म इसी पर्वतमाला से होता है। ये नदियाँ मुख्य रूप से राजस्थान, गुजरात और दिल्ली में बहती हैं। अगर ये नदियाँ नहीं रहेगीं तो इन पर आश्रित जन जीवन अस्त-व्यस्त हो जाएगा। इसके अलावा इस पर आश्रित कृषि भी नष्ट हो जाएगी। इसके अलावा यह मरुभूमि के विस्तार को भी रोकती है। इसलिए अरावली हरियाणा, गुजरात, दिल्ली और राजस्थान के लिए एक अनमोल तोहफा है, जो

प्रकृति ने इन्हें प्रदान किया है। प्रकृति ने हमें बहुत सारे अनमोल तोहफे दिए हैं वो भी बिना किसी शर्त के।

अरावली पर्वतमाला प्राकृतिक संसाधनों (एवं खनिज़) से परिपूर्ण है। अरावली पर्वतमाला, जो मुख्य रूप से राजस्थान में विस्तृत है, बेशकीमती पत्थरों और खनिजों का एक प्रमुख स्रोत है। यहां मिलने वाले सबसे मूल्यवान पत्थरों में पन्ना (Emerald) सबसे प्रमुख है, जो अपनी हरियाली के लिए प्रसिद्ध है । इसके अलावा, यहां प्रसिद्ध मकराना संगमरमर, विभिन्न प्रकार के बलुआ पत्थर, ग्रेनाइट, अभ्रक, और जिप्सम जैसे औद्योगिक पत्थर भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इन सब कारणों से मुनाफाखोर अपने लालच की वजह से इसको नुकसान पहुँचा रहे हैं। अरावली

पर्वतमाला में अंधाधुंध और अवैध खनन (खनन माफिया/मुनाफाखोरी) पारिस्थितिक तंत्र के लिए एक गंभीर खतरा बन गया है। बारूद से विस्फोट करके चट्टानें तोड़ी जा रही हैं, जिससे जंगल और जल स्रोत नष्ट हो रहे हैं और वायु प्रदूषण बढ़ रहा है। क्रशर संचालक अवैध रूप से सुरंगें खोदकर, कानूनी मानकों की अनदेखी कर पहाड़ियों को नष्ट कर रहे हैं। अत्यधिक खनन से अरावली की जैव विविधता नष्ट हो रही है, और यह मरुस्थलीकरण को रोकने वाली प्राकृतिक दीवार को कमजोर कर रही है।

सर्वोच्च न्यायालय ने इस अवैध गतिविधि पर रोक लगाई है, किन्तु ये मुनाफाखोर कानूनी मानकों की अनदेखी कर पहाड़ियों को नष्ट कर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने खनन पर रोक (2009) लगाई और 2024 में नए पट्टों पर भी रोक लगाई है, लेकिन माइन माफिया इसे जारी रखे हुए हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि अब आम नागरिक इसके प्रति जागरूक हो गए हैं।

अरावली पर्वतमाला की नई परिभाषा के अनुसार, केवल वही पहाड़ियाँ या भू-आकृतियाँ 'अरावली' मानी जाएंगी, जिनकी ऊंचाई आसपास के मैदानी या जमीनी स्तर से 100 मीटर या उससे अधिक हो। इस परिभाषा का मुख्य उद्देश्य चार राज्यों (दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, गुजरात) में अरावली के संरक्षण के लिए एक समान कानूनी मानक (uniform definition) स्थापित करना है, जो राजस्थान में 2003 से लागू है। पर्यावरणविदों का मानना है कि इस नियम से 100 मीटर से छोटी कई अरावली पहाड़ियाँ संरक्षण के दायरे से बाहर हो जाएंगी, जिससे खनन और निर्माण गतिविधियों के कारण पारिस्थितिक तंत्र को नुकसान पहुँच सकता है। अरावली पर्वतमाला को खनन, रियल एस्टेट, और अवैध अतिक्रमण से बचाने के लिए स्थानीय निवासियों, पर्यावरणविदों और नागरिकों द्वारा 'अरावली बचाओ नागरिक आंदोलन' (Aravalli Bachao Citizens'

Movement) चलाया जा रहा है। यह जन आंदोलन मुख्य रूप से हरियाणा और राजस्थान के उन

क्षेत्रों में सक्रिय है, जहाँ 100 मीटर की ऊँचाई के नियम के बाद अवैध खनन और विकास परियोजनाओं के कारण पारिस्थितिक तंत्र पर खतरा मंडरा रहा है।

अभी फिलहाल जन आंदोलन के कारण इसके अवैध खनन पर रोक लगी हुई है। इसके अलावे हमें इसके संरक्षण के लिए हमेशा तत्पर रहना होगा तथा जिन क्षेत्रों में पर्वत का कटाव हुआ है, वहाँ हमे पेड़ों को लगाकर पुनः उस क्षेत्र को हरा भरा करना होगा। नई परिभाषा जो 100 मीटर की गई है उसके अलावा भी हमें उन पर्वतों का संरक्षण करना होगा जो 100 मीटर से नीचे हैं तभी हम अरावली का संरक्षण कर पाएंगे । अरावली पर्वतमाला को बचाने के लिए अवैध खनन पर पूर्ण प्रतिबंध, बड़े पैमाने पर वनीकरण (अरावली ग्रीन वॉल प्रोजेक्ट), और कड़े कानूनी उपायों की आवश्यकता है। अरावली ग्रीन वॉल प्रोजेक्ट एक महत्वाकांक्षी योजना है जो चार राज्यों (दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात) में 1,400 किमी लंबी और 5 किमी चौड़ी हरित पट्टी बनाकर मरुस्थलीकरण को रोकने का प्रयास कर रही है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के अनुसार, अरावली क्षेत्र में अवैध खनन को रोकने के लिए सतत प्रबंधन योजना (MPSM) लागू करना आवश्यक है, जो संवेदनशील क्षेत्रों की सुरक्षा करेगी। अरावली के वनों के आसपास के क्षेत्रों को इको-सेंसिटिव जोन घोषित किया जाना चाहिए, ताकि वहां कंस्ट्रक्शन और शहरीकरण को सीमित किया जा सके।

"इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं।" - पं. राहुल सांकृत्यायन।

देश की विविधता में एकता

श्री अयन दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हमारे देश भारतवर्ष की विविधता में एकता अनूठा और विश्व प्रसिद्ध सिद्धान्त है जो दर्शाता है कि विभिन्न धर्मों, भाषाओं, संस्कृतियों और पहनावे के बावजूद पूरा देश एक सूत्र में बंधा है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक या असम से केरल तक, मणिपुर से पंजाब तक या उड़ीसा से महाराष्ट्र तक पहनावे, खान-पान और बोलियों में भिन्नता होने के बावजूद सभी भारतीय राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान और देशभक्ति के साझा मूल्यों के तहत एकजुट हैं। ऐसे में राज्यों की भौगोलिक स्थिति के भिन्नता होने के बाद भी दीपावली, ईद, क्रिसमस, पोंगल, दुर्गापूजा, दशहरा, बैशाखी, ओणम, गुरूपर्व जैसे त्यौहार सभी देशवासियों को एकजुट करते हैं। यह अनूठी संस्कृति और विविधता राष्ट्र को समृद्ध एवं मज़बूत बनाती है।

यह एक ऐसी अवधारणा है जो भारत की सांस्कृतिक, भाषाई और धार्मिक विविधता को दर्शाती है जो कि एक अटूट धागे में बंधी हुई है। यह एक अनोखी विशेषता है जो भारत को एक राष्ट्र के रूप में जोड़ती है। इसका अर्थ यह है कि अलग-अलग मान्यताओं, खान-पान और बोलियों के बावजूद सभी लोग एक साथ मिलकर रहते हैं। यही हमारे देश की सबसे बड़ी विशेषता और पूंजी है।

हमारे देश की भौगोलिक स्थिति भी मानो विविधता से परिपूर्ण है। कभी कश्मीर घाटी में बर्फ की चादरों में लिपटी पर्वतों की चोटियाँ हों या कन्याकुमारी की समुद्री लहरें, राजस्थान के रेगिस्तान की तपती रेत हो या केरल और तमिलनाडु के नारियल पेड़ों के झुंड का तटीय किनारा। गंगा नदी की बहती जलधारा द्वारा विभिन्न राज्यों का परिक्रमण हो या उड़ीसा की समुद्री लहरें। देश के मैदानी इलाकों में लहराती हुई फसलें या फलों से लदे पेड़ हों या फूलों की क्यारियों से भरे बगीचे- ऐसी ही विविधता देश के चारों ओर देखने को मिलती है।

यहाँ हिन्दू, इस्लाम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन जैसे कई धर्मों का सह-अस्तित्व है और सभी का सम्मान ही भारतीय संस्कृति की पहचान है। संयुक्त परिवार प्रणाली, बड़ों का सम्मान और सामुदायिक भावना यहाँ के सामाजिक ताने-बाने का आधार हैं। विभिन्न त्यौहारों

को मनाने के जरिये सामाजिक मेल-जोल और भाईचारे की भावना को बढ़ावा दिया जाता है। भारत में सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। हमारे भारतीय संविधान में भी 22 भाषाओं को मान्यता दी गई है। इसके अलावे देश में विभिन्न क्षेत्रीय भाषा और बोलियों से भी देश एकता के सूत्र में बंधा है।

संस्कृति के रूप में हर राज्य का अपना विशिष्ट नृत्य, संगीत, पहनावा और खान-पान है। शास्त्रीय नृत्य जैसे भरतनाट्यम, कथक, कुचीपुड़ी, ओडिसी, कथकली, मणिपुरी, छाऊ आदि देश के विभिन्न प्रांतों की पहचान हैं। भारत की चित्रकला और वास्तुकला का भंडार तो विश्व प्रसिद्ध है। रीति-रिवाज के तहत योग, ध्यान, गुरु-शिष्य परंपरा, विवाह संस्कार और जन्म-मृत्यु के अनुष्ठान दैनिक जीवन का हिस्सा हैं। विभिन्न धर्मों, जातियों और क्षेत्रों के लोग एक साथ मिलकर रहते हैं जो हमारे देश की सबसे बड़ी शक्ति है।

विविधता के क्रम में हमारे देश के संसाधनों, परिवहनों, कृषि क्षेत्र, कारखानों, शिक्षा-संस्थानों, सांस्कृतिक मंचों तथा खेल-कूद की दुनिया में भी एकता झलकती है। देश का सबसे महत्वपूर्ण साधन भारतीय रेल है जो प्रतिदिन भारत के एक राज्य से गुजरते हुये अनेकों शहर, गाँव, कस्बे को चूमती हुई हजारों किलोमीटर की दूरी तय करती है। इन रेलों में हमारे देश के भिन्न-भिन्न प्रांत के लोग अपने पहनावे और बोलियों से एक-दूसरे के संग यात्रा पूरी करते हैं। हज़ारों महिला, पुरुष रेल का उपयोग करते हुये रोज अपने शहर, गाँव से दूसरे शहर में रोजगार के लिए आवागमन करते हैं जो कि हमारे देश की एकता का पहचान है। इसी क्रम में हम देखें तो लंबी दूरियाँ तय करने वाली अनेकों राज्यों से गुजरती हुई रेल अपने गंतव्य स्थल पर यात्रियों को पहुंचाती है जो कि अपने आप में एकता की मिसाल है। रेल के डिब्बे में बैठे देश के विभिन्न प्रान्तों के लोग एक-दूसरे से मिलजुल कर सफर तय करते हैं।

देश के तीर्थ स्थानों में भी देश के सभी कोनों से पुरुष, महिला, बच्चे एक साथ एक भाव से भ्रमण करते हैं, चाहे प्रयागराज का कुम्भ मेला हो या गंगा सागर का मेला हो, पुरी का जगन्नाथ मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर हो या तिरुपति मंदिर के दर्शन, उज्जैन में महाकालेश्वर दर्शन हो या वाराणसी में बाबा भोलेनाथ का मंदिर, संकटमोचन मंदिर हो या गंगा किनारे नाव विहार हो। हर जगह देश के अलग प्रान्तों के लोग एक-दूसरे के साथ श्रद्धापूर्वक पूजा दर्शन करते हैं। मानो देश को एक मजबूत माला में पिरोया हो। हमारे देश के विभिन्न

राज्यों में ऐसे तीर्थ स्थलों में ऐसा ही नज़ारा देखने को मिलता है। विविधता में भी देश के लोग भेदभाव भूलकर एक साथ तीर्थ स्थानों का भ्रमण करते हैं।

औद्योगिक क्षेत्र में भी देश के अलग-अलग राज्यों से लोग एक साथ मिलकर काम करते हैं। हमारे देश में उद्योग विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है। चाहे विनिर्माण उद्योग हो, कृषि या खनन विनिर्माण और प्रसंस्करण उद्योग या फिर सेवा क्षेत्र जैसे बैंकिंग, पर्यटन या आईटी हो- इन कार्य क्षेत्रों में हमें देश का सांस्कृतिक/सामाजिक बंधन देखने को मिलता है। सभी कर्मचारी एकता के साथ अपने-अपने कार्यों को निभाते हैं। चाहे प्रतिष्ठान किसी भी राज्य में स्थित क्यों न हो। हमें कार्य करने वाले अपनी-अपनी पहचान बनाए रखते हुये एक साथ अलग-अलग राज्यों के नागरिक मिलेंगे जो कि देश की एकता का प्रतीक दर्शाता है। देश की अखंडता इसी से देखने को मिलती है कि एक राज्य के निवासी दूसरे राज्यों के सभी लोगों के साथ मिलजुल कर काम करके अपना गुज़ारा करते हैं।

शिक्षण क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने या चिकित्सा क्षेत्र में देश की भावी पीढ़ी एक राज्य से दूसरे राज्य में जाने के उपरांत सेवा में जुट जाते हैं। अपने राज्य में या देश में चारों तरफ फैले हुए विश्वविद्यालयों, मेडिकल प्रतिष्ठानों या उच्च शिक्षा संस्थानों के परिसरों में विद्यार्थियों के झुंड में हमारे देश की एकता और सामाजिक झलकी नजर आती है। हर परिसर में विभिन्न पहनावों, बोलियों या खान-पान के बावजूद सभी विद्यार्थी एक दूसरे की तकलीफ को या समस्याओं को सुलझाने में एकजुट होते हैं। यही हमारे देश की संस्कृति है और संस्कार भी।

सांस्कृतिक मंच हो या कला क्षेत्र, यहाँ भी कलाकार विभिन्न धर्मों, राज्यों से होने के बावजूद एक-साथ अपने विचारों, भावनाओं को उजागर करते हुए प्रस्तुति करते हैं। देश के कोने-कोने में कलाकार गोष्ठी अपनी कला का मंचन करते हैं जिसमें भिन्न-भिन्न राज्यों के कलाकार एक-साथ मिलकर एकता को चरितार्थ करते हैं। इसी प्रकार कला क्षेत्र में भिन्न राज्यों, बोलियों के कलाकार अपनी कला की प्रदर्शनी करते हैं जिससे उनकी कला को परखा जा सके और कलाकार अपने हुनर को और ऊँचाइयों तक पहुँचा सकें। संगीत के क्षेत्र में भी कई कलाकारों का समूह एक-साथ एक ही सुर, ताल में मिलकर प्रस्तुति करते हैं। भिन्न रागों में सुर साधते हुये कलाकार अपनी-अपनी भाषाओं, बोलियों की सीमा पार करते हुए भारत की एकता को प्रस्तुत करते हैं। चलचित्र क्षेत्र में भी हमें देश के अलग-अलग प्रान्तों, भाषाओं के सिनेमा राज्यों की सीमा को लांघते हुए दूसरे राज्यों या कहें तो पूरे देश के लोगों के हृदय में स्थान रखते हैं। इनकी प्रस्तुति के पीछे सैकड़ों लोगों का योगदान है जो अलग-अलग राज्यों से आकर इस व्यवसाय में जुड़ गए हैं, यह भी विविधता में एकता का प्रतीक है। कलाकारों का कोई धर्म,

राज्य, भाषा नहीं होती। सिर्फ कला के प्रति निष्ठा ही उनकी पहचान, उनका धर्म होता है। तभी तो देशवासी चाहे किसी भी कोने का हो, वे कलाकार की कृति की तारीफ करते हैं। यानि कलाकार भारतवर्ष का है न कि किसी राज्य से बंधा हुआ। यही कला की सांस्कृतिक विरासत ही देश की अटूट शक्ति है और एकता का प्रतीक भी।

खेल-कूद से जुड़े खिलाड़ी जब राष्ट्रीय या क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित खेलों में हिस्सा लेते हैं तो मानो उस मैदान में भारत का प्रत्येक राज्य उतर आता है। चाहे किसी भी प्रतियोगिता का आयोजन हो- फुटबॉल, हॉकी, क्रिकेट, कबड्डी, बॉलीबॉल या तैराकी या अन्य कोई खेल। मैदान में खिलाड़ी अपनी बोली, राज्य को अलग रखते हुये एक समूह के रूप में उभरते हैं और जब वही खिलाड़ी आगे अंतर्राष्ट्रीय मंच पर प्रदर्शन करते हैं तब उनका ध्यान अपनी लगन और मेहनत पर रहता है। वे अपने हृदय में तिरंगा समेटे रहते हैं। जब भी राष्ट्रीय खेल-कूद का आयोजन होता है तब मैदान में अलग-अलग राज्यों के खिलाड़ी एक भातवर्ष का रूप प्रस्तुत करते हैं। वे अपने साथी के साथ मिलकर विपक्ष के खिलाड़ियों, जो बेशक अन्य राज्य के हों, अलग भाषा बोलने वाले हों, खेल के मैदान में खेल भावना के अलावा और कुछ नहीं रहता। मानो एक ही बगिया में रंग-बिरंगे फूलों का मेला लगा हो। यही हमारे देश के लोगों की विशेषता है। चाहे कोई भी रंग या रूप हो, भाषा अलग हो या पहनावा, जब हम एक-दूसरे के साथ मिलते हैं तो हम एक हैं, सिर्फ भारतवासी, इसके अलावा और कुछ नहीं। यही सोच, संकल्प हमें एक डोर में बांधे रखता है और यही हमारे विविधता में एकता को दर्शाता है। बेशक हमलोग अलग-अलग राज्यों के निवासी हों, बोली, खान-पान, संस्कृति सभी में अलग हों, लेकिन जब हम मिलते हैं या कहीं तीर्थ करने जाते हैं या त्योहारों को एक-साथ मनाते हैं तो हम सब एक हैं- भारतवासी। यह एकता ही हमारे देश की शांति, प्रगति और खुशहाली की ओर का रास्ता है। इसे बनाए रखना हम सभी की ज़िम्मेदारी है। जय हिन्द।

श्री अभय कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रगति की परछाई

जगमग नगरों की लौ में जब मन की लौ बुझ जाती है,
शब्दों की भीड़ में अक्सर आत्मा मौन रह जाती है।
सुन, हे मानव! किस ओर चल पड़ा तू धन के अभिमान में?
क्या खो गया तू स्वत्व छोड़, उपभोक्तावादी संसार में?

पद, प्रतिष्ठा, सत्ता, वैभव – सब पर तेरी दृष्टि है,
पर अंतर की शांति कहाँ? यह कैसी दुष्क्रांति है?
तू भाग रहा उस रेखा की ओर जो स्वयं भ्रमजाल है,
हर कण में है तू अकेला, हर भीड़ तेरा काल है।

मशीनों से बाँध चुका तू अपने जीवन की हर सांस,
पर खटखट करता है भीतर वह भूला हुआ विश्वास।
जहाँ नदी के तट पर बैठ तुने बचपन में गीत गाया था,
वहीं अब तू वाई-फाई ढूँढे वह रिश्ता कब मर गया था?

सोच – कब माँ की ममता को तूने 'रीचार्ज' से तोला था?
कब पिता की चुप हँसी को प्रमोशन से तोला था?
जो समय मिला अपनों को, वह 'डेडलाइन' में खो गया,
जो दिल से रिश्ता था कभी, अब वह नेटवर्क हो गया।

नदियों ने पूछा है तुझसे – क्यों तू विष बोता जाता है?
पेड़ों ने तेरे कानों में मौन विलाप सुनाया है।
धरती ने काँप-काँप कर कहा – “रुको, यह विनाश है!”
पर तू व्यस्त अपने शेयरों में – खो गया तेरा विश्वास है।

ध्यान, योग, सादगी, मौन – क्या ये तेरे शत्रु थे?
क्या आत्मबोध के दीपक अंधकार से कमतर थे?
गांधी के देश में तू अब सुख को पैसों से मापता है,
सीता के त्याग की धरती, अब बंगलों में साँसें गिनती है।

पर अभी भी समय है तेरे पास, हे मानव! रुक जा!
जहाँ भौतिकता की सीमा है, वहीं से मुड़ जा।

तू कर सकता है सामंजस्य – प्रगति में भी सत्व रख,
बाहर जितना हो चमकदार, अंदर उतना शांत रख।

बना घर, पर उसमें गूँजती रहे हँसी की बांसुरी,
रख साधन, पर न खो इंसानियत की मूल धुरी।
भौतिक सुख साधन हों, साध्य न बन जाए जीवन का,
मानवता की लौ बचे – यही संदेश हो अंतर्मन का।

जय हो उस मानव की, जो दौड़ता है पर दिशा जानता है,
जो संपत्ति कमाता है, पर संतोष भी पहचानता है।
जो तकनीक को साधन माने, पर साध्यता को आधार,
जिसके जीवन में हो शांति और उन्नति भी हो अपार।

"जीवन के छोटे से छोटे क्षेत्र में हिंदी अपना दायित्व निभाने में समर्थ है।"

- पुरुषोत्तमदास टंडन।

वो बचपन के दिन

श्री किशन राम
कनिष्ठ अनुवादक

'बचपन' यह शब्द सुनते ही हम एक गहरी यादों की गलियों में खो जाते हैं। ऐसा क्यों होता है कि बचपन किसी का कैसा भी हो उसे ज़िंदगीभर याद रह जाता है। बचपन जीवन का सबसे छोटा कालखंड होता है क्योंकि बचपन हमारे भावनात्मक रूप से लगभग 12 साल तक का माना जा सकता है पर यह बाकी के पूरे जीवन के कालखंड पर भारी पड़ जाता है। हम आज भी किसी बड़े व्यक्ति को शरारत करते देखते हैं तो कहते है कि देखो बचपन चला गया पर बचपना नहीं। कहने का मतलब है कि बचपना खुशी, मासूमियत, शरारत, पल भर में झगड़ जाना और अगले ही पल फिर से मिल जाना इन भावनाओं से मिलकर बना एक ऐसी अनुभूति है, जो जीवनभर कभी नहीं मिटती। हम सभी को किसी भी मोड़ पर अपने जीवन में पीछे जाने का अवसर मिले तो हममें से अधिकतर अपने जीवन के उसी समय पर जाना पसंद करेंगे जहां हममें बेफिक्री, नटखटपना, शरारत, नादानी आदि थीं, जिसे बचपन कहा गया है। मनुष्य के जीवन का सबसे मनोरम, सुंदर, निश्छल और यादगार समय होता है बचपन। यह वह अवस्था है जब हृदय मासूम भावनाओं से भरा होता है और दुनिया रंग-बिरंगी सपनों से सजी लगती है। बचपन के दिन हँसी, खेल, जिज्ञासा और नई चीज़ें सीखने के उत्साह से परिपूर्ण होते हैं। यही वह समय है जब बच्चों के व्यक्तित्व का निर्माण होता है और उसके संस्कार, आदतें और व्यक्तित्व की नींव रखी जाती है। परिवार का प्यार, दुलार, स्नेह, माता-पिता का मार्गदर्शन और शिक्षकों की सीख जीवनभर साथ रहती है। बचपन में छोटी-छोटी बातों में भी अपार खुशी मिलती है, चाहे वह दोस्तों के साथ खेलना हो, स्कूल की शरारतें हों या त्योहारों की रौनक। बचपन जीवन का वह मौसम है, जो भले ही कैलेंडर के पन्नों में पीछे छूट जाता है, लेकिन दिल के आँगन में हमेशा हरा-भरा रहता है, जो जीवन भर मन को सुकून देता है। उम्र के साथ हम बड़े होते जाते हैं, जिम्मेदारियाँ बढ़ती जाती हैं, सपनों का आकार बदलता जाता है, लेकिन बचपन की यादें वैसी ही रहती है - मासूम, सच्ची और दिल को सुकून देने वाली। जब भी जिंदगी की दौड़ थका देती है, मन अपने आप उन्हीं पुरानी गलियों में लौट जाता है, जहाँ धूल उड़ती थी, लेकिन मन साफ रहता था, जहाँ जेबें खाली थीं, लेकिन दिल भरे हुए थे। यह लेख उसी बचपन की दुनिया की यात्रा है - एक ऐसी दुनिया, जहाँ छोटी-छोटी बातों में बड़ी खुशियाँ छिपी थीं।

मुझे तो लगता है कि बचपन की सुबह भी अलग होती थी, आज की सुबहों जैसी नहीं जहां सुबह उठने के लिए अलार्म लगाना पड़ता है। तब हम रात में समय पर ही सो जाते थे और सुबह हमें पक्षियों के चहचहाने की आवाज़ जगाया करती थी, इनका साथ देने सूरज की किरणें भी खिड़की से या रोशनदान से प्रवेश कर हमारे चेहरे पर पड़ती तो कभी आँखों की पलकों पर पड़ कर शरारतें कर हमें उठाती। नहीं उठने पर माँ की चिंता भरी आवाज़ हमें उठाने में लग जाती और कोई तब भी न उठता

तो पिताजी की भारी आवाज़ से तो उठना ही था। सुबह उठने के बाद माँ हमें स्कूल भेजने के लिए हमें झटपट तैयार करती वहीं दूसरी तरफ पिताजी के किसी वस्तु के खो जाने पर ऑफिस जाने में देर होती फिर माँ की खिट-पिट शुरु होती और उस समय हममें से कोई अधिक शरारत कर दे तो उसे मार पड़ना लाज़मी था। हमें उस समय डर नहीं बल्कि पिताजी की बातों और माँ की हड़बड़ी पर हंसी आती जैसे कि माँ ही स्कूल जा रहीं हो या ऑफिस जाना हो। पर एक बात तो थी कि माँ की ज़िम्मेदारियाँ अधिक थी और यहां मैं सारी बातें अपने ऊपर बीती घटनाओं से ही नहीं बल्कि आमतौर पर भारतीय महिलाओं (माँओं) पर घटित होने वाली घटनाओं को आधार बना कर कह रहा हूँ। समय चाहे कैसा भी हो महिलाएँ तब से लेकर आजतक किसी भी घर की नींव है दूसरे शब्दों में यदि परिवार शरीर है तो वो रीढ़ की हड्डी।

बहरहाल, स्कूल हमारे लिए सिर्फ पढ़ने की जगह नहीं था, वह हमारी दुनिया थी। वहाँ हम सिर्फ किताबों का ज्ञान नहीं, बल्कि रिश्तों की अहमियत, अनुशासन, दोस्ती और प्रतिस्पर्धा का अर्थ भी सीखते थे। ऐसा नहीं है कि हम सभी पढ़ने में अव्वल होते हैं परंतु स्कूल हममें किसी चीज़ को रोज करने की आदत डाल देता है और यह सिखाता है कि किसी चीज़ का प्रतिदिन अभ्यास किया जाए तो हम दिमागी तौर पर कितना भी मजबूत अथवा कमज़ोर हों, हममें सुधार और निखार आता है और हम दिन-प्रतिदिन बेहतर होते जाते हैं। चाहे वह गणित के न सुलझने वाले सवाल हों या हिंदी की कविता को याद कर बेहतर ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास या किसी भी विषय वस्तु की बेहतरी के लिए स्कूल ही वह जगह है जहां हम इन सभी विषयों का अध्ययन कर अपने व्यक्तित्व के निर्माण का आरम्भ करते हैं। स्कूल में सुबह की प्रार्थना में लाइन से खड़े होना, राष्ट्रीय गान गाना और फिर क्लास में जाकर अपनी जगह ढूँढना यह सब रोज़ का हिस्सा था। टीचर का ब्लैकबोर्ड पर चॉक से लिखना और हमें ध्यान से सुनने की हिदायतें देना कई बार हम सच में सुनते थे, और कई बार खिड़की के बाहर उड़ते पक्षियों को देखते तो कभी बारिश की बूंदों को। टिफिन का समय सबसे खास होता था। घंटी बजते ही जैसे आज़ादी मिल जाती थी। अपना डिब्बा खोलने से पहले ही दोस्तों का डिब्बा देखने

की उत्सुकता रहती थी। कोई आलू के पराठे लाता कोई हलवा-पूरी, तो कोई रोटी-सब्जी। लेकिन हम सब मिल-बाँटकर खाते थे। उस समय स्वाद खाने में कम और साथ रहने में ज्यादा होता था। कई बार शरारतें भी होती थीं। क्लास में हँसना, पीछे बैठकर बातें करना, या टीचर के जाते ही शोर मचाना फिर पकड़े जाने पर पूरी क्लास को सज़ा मिलना। लेकिन आज जब पीछे मुड़कर देखते हैं, तो वही शरारतें सबसे प्यारी लगती हैं।

बचपन की दोस्ती कितनी प्यारी और सच्ची होती है। उसमें न कोई स्वार्थ होता है, न कोई फायदा। सिर्फ साथ रहने की खुशी होती है। हम दोस्त के घर बिना बताए पहुँच जाते थे और उसके परिवार वाले भी हमें अपने बच्चे जैसा ही समझते थे। ऐसा कई बार हुआ है कि मैं स्कूल के बाद अपने दोस्त के घर बैग रखकर खाना खाकर दोस्तों के साथ खेलने चला जाता था। हमारे बचपन में खेल का मतलब मैदान था, न कि मोबाइल स्क्रीन। गली क्रिकेट, कबड्डी, खो-खो, पिट्ठू, छिपम-छिपायी ये सब हमारे जीवन का हिस्सा थे। शाम होते ही गली में बच्चों की आवाज गूंजने लगती थी। कोई बैट लेकर आता, कोई गेंद और कोई सिर्फ खेलने का उत्साह। कई बार टूटे हुए बल्ले से भी खेल लेते थे। आउट होने पर बहस होती थी, लेकिन खेल जारी रहता था। बारिश के दिनों में कीचड़ में फिसलना, फुटबॉल खेलना और सर्दियों में धूप में बैठकर खेलना इन सबमें एक अलग ही आनंद था। घर से आवाज आती थी "अब अंदर आ जाओ!" लेकिन हम कहते "बस पाँच मिनट और।" वह पाँच मिनट ही हमारी असली खुशी थी। पहले छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा हो जाता था - किसने पहले बैटिंग की, किसने चीटिंग की, किसकी बारी है आदि। लेकिन वह झगड़ा ज्यादा देर नहीं चलता था। पाँच-दस मिनट में सब भूलकर फिर साथ खेलने लगते थे। आज जब बड़े होकर रिश्तों में दूरी और औपचारिकता आ जाती है, तब बचपन की वह सादगी याद आती है। तब "सॉरी" और "थैंक यू" शब्दों की जरूरत नहीं पड़ती थी, क्योंकि मन साफ होते थे।

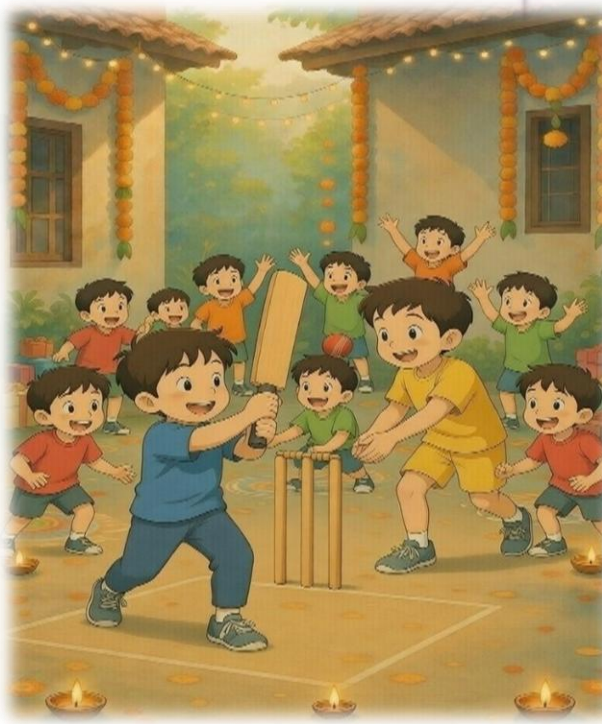

त्योहार हम सभी में एक अलग तरह का उत्साह भर देता और बचपन में तो त्योहार हमारे जीवन में खुशियों का मौसम लेकर आता था। दीपावली पर घर की सफाई, रंगोली बनाना, दीये जलाना हर काम में उत्साह होता था। नए कपड़े पहनने की खुशी अलग ही होती थी। पटाखों की आवाज से डर भी लगता था, लेकिन रोमांच ज्यादा होता था। होली में रंगों से खेलना, दोस्तों के घर जाकर गुजिया खाना और शाम तक थक जाना, वह मस्ती आज भी याद है। ईद पर सेवइयाँ, रक्षाबंधन पर राखी, और मकर संक्रांति पर पतंग हर त्योहार में एक अपनापन था। कोलकाता में तो दुर्गा पूजा बड़े धूम-

धाम से मनाया जाता है और हमारी खुशियों का कोई ठिकाना नहीं होता। हम तीन-चार दिन बिना किसी चीज़ की परवाह किये अपने मौज में रहते थे। घर से भी थोड़ी छूट मिलती थी। तब त्योहारों में दिखावा नहीं था। खुशियाँ सादगी में थी और लोग दिल से जुड़ते थे। स्कूल बंद होने पर हम अपने मामा घर जाते वहां हमें और भी ज्यादा प्यार मिलता। नाना-नानी, मामा-मामी सभी हमें बहुत आदर करते और अपने भाई-बहनों के साथ हम दिन-रात खेलते जब तक कि हमें डांट न पड़े या हम थक न जाए। वो भी क्या दिन थे जब रात को खाना खाने के बाद दादा-दादी के पास बैठना एक आदत थी। उनकी कहानियाँ हमें एक अलग दुनिया में ले जाती थीं- राजा-रानी, परियाँ, जंगल, जादू और नैतिक शिक्षा। मुझे आज भी याद है कि मैंने रामायण की कहानी सबसे पहले अपने दादा जी के मुँह से सुनी थी और उनका कहानी बताने का तरीका भी बिल्कुल अलग था। वो अपनी कहानियों से हमें कल्पना करने पर बाध्य कर देते और इसी तरह कहानियाँ हमारे मन-मस्तिष्क में बैठ जातीं। उनकी आवाज में ऐसा अपनापन होता था कि हम मंत्रमुग्ध होकर सुनते थे। कई बार कहानी अधूरी रह जाती थी और हम अगले दिन का इंतजार करते थे। आज समझ आता है कि वे कहानियाँ सिर्फ मनोरंजन नहीं थीं। उनमें जीवन के मूल्य छिपे थे। सच बोलना, बड़ों का सम्मान करना, मेहनत करना और दूसरों की मदद करना ये सारी बातें उनकी कहानियों में निहित हुआ करती थीं। बचपन में खुश रहने के लिए ज्यादा कुछ नहीं चाहिए था। नई पेंसिल मिल जाना, अच्छे नंबर आ जाना या मेले में झूला झूल लेना बस इतना ही काफी था। मेले में गुब्बारा खरीदना, आइसक्रीम खाना और खिलौने की जिद करना- ये सब यादें आज भी ताजा हैं। कई बार मनचाहा खिलौना नहीं मिलता था तो रोना भी आता था। लेकिन थोड़ी देर बाद सब ठीक हो जाता था। आज जब हम बड़ी-बड़ी चीजें पाने की कोशिश में लगे रहते हैं, तब समझ आता है कि असली खुशी तो उन छोटी-छोटी बातों में थी। बचपन में परिवार ही हमारी पूरी दुनिया होती थी। माँ की ममता, पिता की सख्ती में छिपा प्यार, भाई-बहनों की नोक-झोंक - ये सब हमारे जीवन के आधार थे। बीमार पड़ने पर माँ का रात भर जागना, पिता का डॉक्टर के पास ले जाना ये सब हमें सुरक्षा का एहसास देते थे। परिवार ने हमें सिखाया कि जीवन में चाहे कितनी भी मुश्किलें आएँ, अगर अपने साथ हों तो सब आसान हो जाता है। पहले परिवार भी बड़ा हुआ करता था। दादा-दादी, बड़े पिताजी - बड़ी माँ उनके बच्चे, चाचा-चाची उनके बच्चे, हम और हमारे माँ और पिताजी। कुल मिलाकर घर में इतने लोग रहते थे कि किसी दूसरे की कमी कभी खलती नहीं थी और मुसीबत आने पर सब एक जुट हो जाया करते थे। इससे हमने बचपन में ही एकता में बल का पाठ पढ़ लिया।

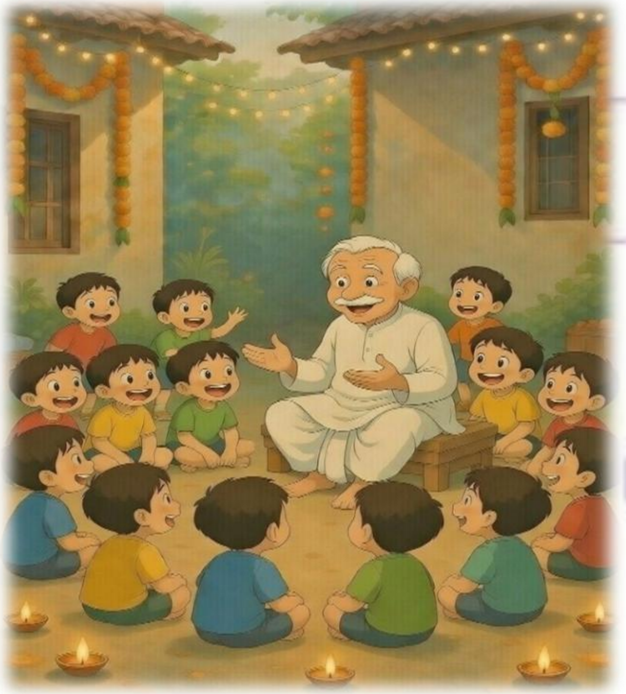

आज जब हम बड़े हो गए हैं, तो जिंदगी की रफ्तार तेज हो गई है। मोबाइल, इंटरनेट, ऑफिस की जिम्मेदारियाँ सब कुछ बदल गया है। लेकिन जब भी कोई पुराना फोटो एलबम हाथ में आता है या बचपन का कोई दोस्त अचानक मिल जाता है, तो मन फिर उसी समय में लौट जाता है। कभी-कभी लगता है कि हमने बहुत कुछ पा लिया, लेकिन कहीं न कहीं वह मासूमियत खो दी। बचपन हमें सिखाता है कि जीवन को हल्के में लेना भी जरूरी है। हर बात पर चिंता करना जरूरी नहीं। हँसना, खेलना, गिरना और फिर उठ जाना यही असली जीवन है। बचपन की यादें हमें यह एहसास कराती हैं कि सादगी में भी सुंदरता होती है। रिश्तों की अहमियत सबसे ज्यादा होती है। और समय बहुत कीमती है। बचपन भले ही बीत जाता है, लेकिन उसकी यादें कभी पुरानी नहीं होतीं। वे हमारे जीवन का आधार बनती हैं। जब भी हम थक जाते हैं, निराश हो जाते हैं, तो वही यादें हमें ताकत देती हैं। शायद हम फिर से बच्चे नहीं बन सकते, लेकिन बचपन की मासूमियत, सादगी और सच्चाई को अपने जीवन में बनाए रख सकते हैं। अगर हम छोटी-छोटी खुशियों में आनंद ढूँढना सीख लें, तो जीवन हमेशा खूबसूरत रहेगा। बचपन कोई उम्र नहीं, बल्कि एक अनुभूति है जो हम सभी के भीतर हमेशा जिंदा रहती है।

"भाषा के उत्थान में एक भाषा का होना आवश्यक है, इसलिये हिंदी सबकी साझा भाषा है।"

- पं. कृ. रंगनाथ पिल्लयार

देख ऐसा लगता है

श्री अमरेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हर युग की अपनी एक पहचान होती है और उस युग में जन्म लेने वाली पीढ़ी ही उस युग की दिशा तय करती है। सामान्यतः सन् 1997 से 2012 के बीच जन्मे बच्चों को Gen Z कहा जाता है।

इस पीढ़ी के लोगों की सकारात्मक सोच, इंटरनेट, स्मार्टफोन, तकनीक का ज्ञान, अन्याय को सहन न करने की क्षमता, आत्मनिर्भर बनने की क्षमता, क्रांतिकारी सोच, परंपरा को बदलने की क्षमता देख एक बात याद आती है:-

'हम ही हम हैं तो क्या हम हैं,
तुम ही तुम हो तो क्या तुम हो,
यह आज का Gen Z है और,
यही सभी पीढ़ीयों में सर्वोत्तम है।'

वहीं दूसरी ओर, इन पीढ़ियों द्वारा कई ऐसे कृत्य किए जा रहे हैं जो समाज के लिए, उनके अपने लिए तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए खतरनाक है। इन Gen Z को शॉर्टकट में वायरल होने की चाहत, सोशल मीडिया की लत, लोगों में संवेदना की कमी, पर्यावरण एवं पृथ्वी के प्रति निष्ठुरता, नशाखोरी, अश्लीलता तथा जघन्य अपराधों में संलिप्त होता देख ऐसा लगता है:-

"हम इन बच्चों के लिए पेड़-पानी, ग्लेशियर बचा रहे हैं
पिघल जाने दो और डुब जाने दो पूरी सृष्टी को"

यह Gen Z बदलती दुनिया के लिए जितना कारगर है उतना ही उन्हें अपने आप को सुधारने की जरूरत है ताकि हमारी सभ्यता, संस्कृति के साथ-साथ पृथ्वी और पर्यावरण भी

बचे रहें। Gen Z के सकारात्मक तथा नकारात्मक पहलुओं पर विचार किया जा सकता है जो इस प्रकार हैं:-

- **सकारात्मक पहलू**

(i) खुले विचार एवं वैश्विक सोच - आज की पीढ़ी खुले विचार एवं वैश्विक सोच में विश्वास रखती है। अन्याय को न सहन करने के लिए किसी भी हद तक जाने से नहीं डरती है। यह पीढ़ी सरकार से सवाल पूछती है, बदलाव की माँग करती है, रूढ़िवादी विचारधारा को न अपनाकर खुले मन से लोगों से मिलती है और जरूरत पड़ने पर अपने हक के लिए आंदोलन/धरना तक करती है।

(ii) रचनात्मक एवं नवाचार विचारधारा - आज की Gen Z को इंटरनेट, सोशल मीडिया, तकनीक का अच्छा ज्ञान होने के साथ-साथ इन्हें इसका सही उपयोग करना भी आता है। आज लोग हार्ड वर्क से ज्यादा स्मार्ट वर्क में विश्वास करते हैं। तरह-तरह के AI टूल का निर्माण किया जा रहा है। लोग पारंपरिक पढ़ाई तथा अवसर से इतर अपने-आप को coding, AI टूल जैसी पढ़ाई और अवसर ढूँढने में लगे हैं। इस पीढ़ी के लोग खुद कंटेंट क्रियेटर, सोशल इंफ्लुयेंशर जैसे गैर पारंपरिक अवसर को अपना कर आत्मनिर्भर बन रहे हैं और निःसंदेह यह पीढ़ी भारत को आगे ले जाने में सक्षम है।

(iii) गैर पारंपरिक अवसर को बढ़ावा देना - इस पीढ़ी के लोग न केवल पारंपरिक कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास कर रहे हैं बल्कि गैर पारंपरिक अवसर भी पैदा कर रहे हैं जिससे नये रोजगार का सृजन हो रहा है। लोग कैरियर के रूप में सोशल कंटेंट, क्रियेटर, ब्लॉगर, राइटर चुन रहे हैं।

(iv) नई पीढ़ियों के लिए सीख - आने वाली पीढ़ी इस नई Gen Z से कई चीजें सीख सकती हैं। यह आने वाली पीढ़ी के लिए मिसाल बन सकती है, जैसे - सवाल करने की क्षमता, अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना, तकनीक का सही प्रयोग करना, आत्मनिर्भर बनना और अपने कैरियर के साथ-साथ देश का नाम आगे ले जाना।

नकारात्मक पहलू:-

(i) इंटरनेट और सोशल मीडिया की लत - Gen Z इंटरनेट के साथ पली-बढ़ी पीढ़ी है, जिससे इस पीढ़ी का ज्यादातर हिस्सा इसका उपयोग करने में सहज है लेकिन इस पीढ़ी का बड़ा हिस्सा सोशल मीडिया के लत से जूझ रहा है। आप लोगों का स्क्रीन टाइम 16-16 घंटा है जिससे उसके मानसिक स्वास्थ्य से लेकर शारीरिक स्वास्थ पर भी काफी बुरा असर देखने को मिल रहा है।

(ii) <u>नशा एवं ड्रग्स की लत -</u> Gen Z में नशा एवं ड्रग्स का प्रचलन ज्यादा है। इसमें महिलायें भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। लोगों को ये सब करना गर्व की बात महसूस होती है और वे अपने आप को काफी cool समझते हैं। साथ ही साथ यह पीढ़ी आनेवाली पीढ़ी को भी ये सब कार्यों में लिप्त होकर बर्बाद करने में लगी है।

(iii) <u>धैर्य की कमी -</u> Gen Z को शॉर्ट कट ज्यादा पसंद है। सभी को फेमस/वायरल होने की चाहत रहती है। लोग वायरल होने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। कई तो अपनी जान तक गँवा बैठते हैं। लोगों को मेहनत करने की आदत कम हो गई हैं और सफलता मिलने में कमी या देर हो जाय तो लोग डिप्रेशन में चले जाते हैं और आत्महत्या करने तक का कदम उठा लेते हैं।

(iv) <u>संवेदना की कमी -</u> Gen Z निश्चित ही काफी जागरुक एवं चेतना वाली पीढ़ी है लेकिन कुछ लोगों में संवेदना की कमी है। लोग तकनीक का प्रयोग करके किसी की फोटो/वीडियो वायरल कर देते हैं, साइबर फ्रॉड कर देते हैं, यहाँ तक कि किसी को ब्लैकमेल करके उसे आत्महत्या करने पर मजबूर कर देते हैं।

(v) <u>पर्यावरण एवं पृथ्वी के प्रति निष्ठुरता -</u> Gen Z हमारे पर्यावरण एवं पृथ्वी के प्रति निष्ठुर है। इसे प्राकृतिक संसाधन जैसी चीजों का सदुपयोग करना नहीं आता है। इन्हें देखकर ऐसा लगता है यह अपने आने वाली पीढ़ी के लिए कुछ नहीं बचाना चाहते हैं। यह पर्यावरण और पृथ्वी को इस तरह नष्ट कर रहें हैं जैसे यह पीढ़ी पृथ्वी पर अंतिम पीढ़ी है।

इस प्रकार Gen Z बदलाव चाहती है, सवाल करती है और बेहतर भविष्य का सपना देखती है लेकिन कई चुनौतियों का सामना भी कर रही है।

Gen Z वास्तव में भविष्य की नींव है। जरूरत है उसे समझने, स्वीकारने तथा सही मार्गदर्शन करने की, ताकि समाज के साथ-साथ पृथ्वी और पर्यावरण का भी कल्याण हो सके।

"हिंदी ने राष्ट्रभाषा के पद पर सिंहानसारूढ़ होने पर अपने ऊपर एक गौरवमय एवं गुरुतर उत्तरदायित्व लिया है।" - गोविंदबल्लभ पंत

बदलाव, जीवन और संतुलन

श्री रवि पासवान
कनिष्ठ अनुवादक

कोई इंसान परफेक्ट नहीं होता है, उसके अंदर कुछ खामियाँ अवश्य होती हैं। उसके लिए अपनी कमियों को पहचानना, उसे स्वीकार करना और उन कमियों को दूर करना बहुत ही कठिन कार्य है। कमियाँ हमारे ही अंदर निहित होती हैं, पर ये कमियाँ हमें नजर नहीं आती और हम इसका दोष दूसरों पर देते हैं। दूसरों को कहने से अच्छा है हम अपनी कमियों को सही से पहचानें और उसमें बदलाव लाने की कोशिश करें।

यह संसार परिवर्तनशील है। यह पल-पल परिवर्तित हो रहा है। इस परिवर्तन के कारण कल तक जो नया था वह आज पुराना हो जाता है। कुछ ही वर्षों के बाद दुनिया का बदला रूप नज़र आने लगता है। इस परिवर्तन से हमारे जीवन मूल्य भी अछूते नहीं हैं। इन जीवन मूल्यों में बदलाव आता जा रहा है। इससे व्यक्ति का दृष्टिकोण बदल रहा है। यह बदलाव व्यक्ति के व्यवहार में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। विज्ञान की खोजों के कारण हर क्षेत्र में बदलाव आ गया है। पैदल और बैलगाड़ी से सफ़र करने वाला मनुष्य वातानुकूलित रेलगाड़ियों और तीव्रगामी विमानों से सफ़र कर रहा है। हरकोर और कबूतरों से संदेश भेजने वाला मनुष्य आज टेलीफ़ोन और तार की दुनिया से भी आगे आकर मोबाइल फ़ोन पर आमने-सामने बातें करने लगा है।

लोग आपके कपड़ों, रहन-सहन या पैसों इत्यादि से आपकी पहचान नहीं करते हैं बल्कि वो आपकी सोच, आपके काम और अन्य सामाजिक गतिविधियों को महत्व देते हैं। हमारे अंदर का सकारात्मक विचार और हमारा खुद पर भरोसा ही हमें हमारी पहचान दिलाता है और यह सब हमारे खुद के अंदर ही निहित होता है। एक वक्त था जब इंटरनेट नहीं था, स्मार्ट सिर्फ इंसान हुआ करते थे न कि फोन और सोशल मीडीया। मिलनसार लोगों को कहा जाता था, न कि मीडिया को। किसी करीबी को बधाई देनी होती थी या उसकी याद आती थी तब हम उनसे पत्रों के माध्यम से सम्पर्क करते थे और आज देखिए पूरा डाक-विभाग बंद होने की कगार पर है।

इस आधुनिक बदलाव ने ज़िंदगी को जरूर आसान बनाया है लेकिन कहीं न कहीं ये जीवन की छोटी-छोटी खुशियों को नदारद कर रही है। बदलाव की शुरुआत हमें खुद से करनी चाहिए, अगर हम खुद में बदलाव ला सकते हैं तभी हम इस दुनिया को बदल सकते हैं। एक कहावत के अनुसार "हर बदलाव की शुरुआत कर, तू खुद को बदलकर। ज़माने को बदलना चाहता है, तो खुद से पहल कर।"

सोशल मीडिया का चलन पिछले कुछ सालों में ऐसा बढ़ा है कि इंसान को ही एंटी-सोशल बना

रहा है। वार्तालाप करना तो जैसे आज की युवा पीढ़ी को आता ही नहीं। सुबह से शाम वो बस अपने स्मार्ट फोन से ही जुड़े रहते हैं। हजारों मील दूर उनके दोस्त ने नाश्ते में क्या खाया वो पता है लेकिन घर पर क्या बनने वाला है उसका पता नहीं। ऐसी आदतें सेहत के लिहाज से भी अच्छी नहीं हैं ।

जिधर देखो बच्चे सर झुकाए चल रहे हैं। नहीं-नहीं शर्म से नहीं उनकी आंखें गढ़ी हैं- फोन की छोटी सी स्क्रीन पर। ट्विटर का तो क्या कहना। नामी लोग इसका इस्तेमाल करते हैं अपना प्रचार करने के लिए और हम नासमझ इसे आज का फैशन समझ बैठे। कम अक्षरों में बहुत कुछ कहने को कहते हैं ट्विटर Twitter – तो हम किसी से कम नहीं। लिखना भी भूलते जा रहे हैं और काट-पीट कर अपनी बात कह दिया। ये बात तो पीछे रह गई कि ट्विटर के नामचीन उपभोक्ता तो अपनी ब्रांड वैल्यू बढ़ा रहे हैं और हम अगर कुछ बढ़ा रहे हैं तो वो है - अपने फोन का बिल।

स्मार्ट फोन ने कैमरा क्या अपने साथ जोड़ दिया - खाने से ज्यादा तो हम अब खाने की तस्वीर खींचने में रुचि रखते हैं। इसमें काम आसान हुआ किसी का तो वो हैं रेस्टोरेंट के मालिक का। अच्छे स्वाद से ज्यादा अब जरूरत है सिर्फ खाने के सुंदर रूप की। भले खाना ठंडा क्यों न हो जाए, हम तो उसकी तस्वीर खींच अपने सोशल मीडिया पेज पर पोस्ट करेंगे। जब हम घर के बाहर जाते हैं तब भी अपने घरवालों और दोस्तों से बातें शेयर करने के बजाय हम फेसबुक पर शेयर करने में रुचि रखते हैं। ज़रा याद कीजिए जब पिछली बार रेस्टोरेंट गए थे, आपने अपने खाने और शाम की चर्चा वर्चुअल दुनिया में ज्यादा की थी या असली दुनिया में? क्या स्मार्ट फोन स्मार्ट की बजाय कहीं हमें डम्ब तो नहीं बना रहे? क्या ये सिर्फ एक महंगा खिलौना रह कर तो सीमित नहीं होते जा रहे?

आज अगर जरूरत है किसी चीज की तो वो है संतुलन। स्कूलों को जहाँ ये सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे कम्प्यूटर के बारे में सब जानें तो वहीं खेल-कूद के साथ-साथ कला और संस्कृति से भी जुड़े रहें। इन चीज़ों में तकनीक का इस्तेमाल कैसे किया जा सकता है। इस अनुभव को बच्चों के लिए और कैसे दिलचस्प बनाया जा सकता है। पुस्तकालयों ने इस राह में एक बड़ा कदम बढ़ाया है। आज कई पुस्तकें ई-रीडर और इलेकट्रॉनिक रूप में भी उपलब्ध हैं। दूसरे के जीवन पर हमारा अधिकार नहीं। हमारे पास एक ही विकल्प है, और वो है अपने जीवन को बदलना। इस बदलाव में आपके साथ आपके सिवाय कोई नहीं हो सकता। खुद आपको ही रास्ता खोजना है और उस पर चलना भी है। ये ज्यादा मुश्किल है भी नहीं। बस एक ही चीज़ समझनी है कि अब तक जिस रास्ते पर चलकर दुःख, पीड़ा, कष्ट झेल रहे थे अब उस ओर से मुँह फेर लेना है। केवल अपने रास्ते बदल लेने हैं। चल तो ऐसे भी रहे थे, अब बस दिशा बदल देनी है। शुरू में थोड़ी मुश्किल तो होगी, पर धीरे-धीरे आसान होने लगेगा। फिर आप दूसरे आदमी होंगे। दुनिया तो वैसी की वैसी ही रहेगी लेकिन आप बदल गये होंगे। आपकी सोच में अंतर आने लगेगा। भीतर एक संकल्प का जन्म शुरू होगा। जीवन आनंद से भरने लगेगा।

माँ-बाप पर ये भी जिम्म्दारी पड़ती है कि वो अपने बच्चों को इस ढंग से बड़ा करें कि वो अपना वक्त बिताने के लिए केवल टी.वी. और कम्प्यूटर पर ही निर्भर न रहें। उनके शौक में खेलकूद, किताबें पढ़ना और अपनों से बातें करना जरूर शामिल होना चाहिए। आप सोचेंगे अपनों से बातें करना क्या अब ये शौक बन गया है? जरा सोचिए तो सही कि आपके अपनों ने आप से आखिरी बार कब दिल खोल कर बात की थी?

दुर्भाग्य से हमारे जीवन मूल्य इस प्रगति में पीछे छूटते गए। कल तक दूसरों के लिए त्याग करने वाला, अपना सर्वस्व दान देनेवाला मनुष्य आज दूसरों का माल छीनकर अपना कर लेना चाहता है। परोपकार, उदारता, मित्रता, परदुखकातरता, सहानुभूति, दया, क्षमा, साहस जैसे मूल्य जाने कहाँ छूटते जा रहे हैं। हम स्वार्थी और आत्मकेंद्रित होते जा रहे हैं।

जीवन में कुछ अच्छा न होने पर आप दूसरों को दोष देते हैं, लेकिन वास्तव में यह आपकी केवल एक सोच है। किसी भी चीज में गलती दूसरे की नहीं आपकी ही होती है। इसलिए हमें अपने सोच को बदलने की आवश्यकता है। हमें हमेशा सकारात्मक पहलुओं पर ही ध्यान देने की आवश्यकता है न की नकारात्मक पहलुओं पर। नकारात्मक पहलू हमारे जीवन के अनेक कार्यों को और उलझा सकती है और यह हमारे जीवन को और कठिन बना सकती है। किसी भी कार्य को सकारात्मकता के साथ करने से हर पहलू धीरे-धीरे हल होता जाएगा और यह आपको खुद को बदलने में सहायता करेगी।

सकारात्मक सोच आपके जीवन के हर चीज को आसान बना देगी और इससे आप अपने आसपास के लोगों की सोच को भी प्रभावित कर सकते हैं। इस प्रकार आपकी सोच दुनिया को बदलने में सहायक सिद्ध होगी।

आपकी सोच पूरी दुनिया को बदल सकती है, इस बात को ठोस रूप में नहीं कहा जा सकता है परंतु आपका यह प्रयास लोगों की सोच को अवश्य ही बदल सकता है। आपकी सकारात्मक सोच आपके जीवन के विभिन्न पहलुओं में बदलाव लाने में सहायक सिद्ध हो सकती है, जिससे कि आप किसी भी कार्य को उत्साह और विश्वास के साथ कर सकते हैं। इससे आपकी सामाजिक दृष्टि को भी बढ़ावा मिलेगा।

आपकी सकारात्मक सोच आपके आस-पास रहने वाले लोगों के लिए एक प्रेरणा के रूप में हो सकती है, जिसे वो अपने जीवन में अपना कर अपने जीवन में बदलाव ला सकते हैं। इस प्रकार हम अपनी सोच से दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं। हमारी सोच से हम खुद के व्यवहार, शब्दावली, दूसरों के प्रति सम्मान आदि का बदलाव अपने जीवन में ला सकते हैं। ये सारी चीजें

दूसरों की सोच को भी बदल सकती हैं और जीवन को सरल बना सकती हैं। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि खुद को बदलकर हम दुनिया में बदलाव ला सकते हैं।

हम खुद में बदलाव लाकर खुद के जीवन के साथ-साथ अपने आस-पास के लोगों को भी प्रभावित कर सकते हैं और उनके लिए एक प्रेरणा का स्रोत बन सकते हैं। दूसरों को दोष देने के बजाय हमें अपनी गलतियों को ठीक करने, उन्हें समझने और सकारात्मकता के साथ आगे बढ़ने की आवश्यकता है। यही सकारात्मक सोच और खुद पर यकीन हमारे जीवन को सरल और सफल बनाएगा और दुनिया हमें स्वयं ही अच्छी लगने लगेगी।

ज़माना युवा शक्ति का है। आज की पीढ़ी मेहनती और हिम्मती है। जरूरत है तो उनको राह दिखाने की। नयापन जीवन का एक हिस्सा है। जीवन में बदलाव होना जरूरी है। इससे इंसान कभी खुद को भगवान के रूप मे देखने से घबराता है। जो इंसान जीवन की ऊंचाइयों को छू रहा है, आने वाले समय में जीवन के बदलाव के कारण वह सड़क पर भी आ सकता है। इसी कारण इंसान की जिजीविषा बनी रहती है। वरना इंसान दुख में टूट कर आत्महत्या करने लगे। उसकी उम्मीद भगवान और भविष्य पर हमेशा बनी हुई है इसीलिए दुनिया चल रही है।

"हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य को सर्वांगसुंदर बनाना हमारा कर्त्तव्य है।"

- डॉ. राजेंद्रप्रसाद

जीवन: असफलता और सीख

सुश्री अस्मिता तिवारी
लेखापरीक्षक

मानव जीवन में खुशी और सफलता जितनी महत्वपूर्ण है, उससे कहीं अधिक, संघर्ष और असफलता महत्वपूर्ण है। यह एक सत्य है कि सबसे अच्छे और गहरे सबक सुखद क्षणों से नहीं, बल्कि कड़वे अनुभवों से ही सीखे जाते हैं। सुख हमें आराम देता है, लेकिन संघर्ष हमें जीना सिखाता है, कठिनाइयों का डटकर सामना करना, मानसिक दृढ़ता, आत्म-विश्वास और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना सिखाता है। यह विपरीत परिस्थितियों में न केवल टिके रहना, बल्कि उनसे सीखकर आगे बढ़ना और भविष्य की चुनौतियों के लिए आत्म-शक्ति को मजबूत करना भी सिखाता है। यह आत्म-जागरूकता, समस्या-समाधान कौशल और सामाजिक सहयोग को बढ़ाता है। यह चरित्र को निखारता है और व्यक्ति को अधिक दृढ़ बनाता है।

जीवन एक पुस्तक की भाँति है जिसमें प्रत्येक अध्याय हमें कुछ ना कुछ नया सिखाते हैं। सुख और सफलताएँ हमें आत्मविश्वास देते हैं। परंतु असफलताएँ और कठिनाइयाँ ही हमें जीवन का असली पाठ पढ़ाती हैं। कहा भी गया है हार ही जीत की जननी है। वास्तव में कड़वे अनुभव हमारे चरित्र को मजबूत करते हैं तथा हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। कभी-कभी मनुष्य अपने निर्णयों में भूल कर बैठता है। वह भूल ही उसे सही और गलत का अंतर समझाती है। जिस प्रकार कोई बालक आग को छूकर ही उसकी जलन को समझ पाता है। उसी प्रकार मनुष्य भी कठिनाइयों का सामना करके ही अनुभव प्राप्त करता है। यही अनुभव आगे चलकर उसके जीवन में मार्गदर्शन करते हैं। कड़वा सच हमारी कमजोरियों को उजागर करता है, जिससे हम खुद को बेहतर बना सकते हैं।

दिल टूटना व्यक्ति को भावनात्मक कमियों और अनुकूलता की ज़रूरतों के बारे में सिखाता है। अस्वीकृति का दर्द रिश्ते में अपनी भूमिका की जाँच करने और साथी के बारे में बेहतर निर्णय लेने के लिए प्रेरित करता है। ये सबक कष्टों के माध्यम से सीखे जाते हैं। अक्सर सुखद रिश्ते भविष्य में खुशहाल जीवन की ओर ले जाते हैं। कोई व्यक्ति जिसने कभी भी रिश्तों में कठिनाइयों का अनुभव नहीं किया हो, वह सहानुभूति, समझौता, या मानव स्वभाव के बारे में अपेक्षाओं के साथ संघर्ष कर सकता है।

कहते हैं बादाम खाने से उतनी अकल नहीं आती जितनी धोखा खाने से या कड़े अनुभव से सीखी जाती। कई हद तक यह सत्य भी है। आज भारत की आजादी और वैश्विक स्तर पर एक शक्तिशाली राष्ट्र बनने की राह इसके निरंतर सही होने से नहीं बल्कि बलिदान, स्वतंत्रता संग्राम और भारत के कड़े अनुभवों से ही है। जीवन अनुभवों का एक जटिल ताना-बाना है, जिसमें सुख और दुख,

सफलता और असफलता दोनों शामिल हैं। अक्सर, हम सुखद क्षणों को सहेजते हैं और संघर्ष से बचना चाहते हैं। हालाँकि, यह संघर्ष और कठिनाइयाँ ही हैं जो हमें जीवन के सबसे गहरे और स्थायी सबक सिखाते हैं। ये अनुभव हमें अपनी सीमाओं, लचीलेपन और क्षमताओं से परिचित कराते हैं, जिससे हम व्यक्तिगत विकास की ओर बढ़ते हैं। ये हमें विनम्रता, धैर्य और दृढ़ता जैसे गुणों से लैस करते हैं, जो हमें जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करते हैं। असफलता और कठिन समय में धैर्य न केवल एक दार्शनिक सत्य है, बल्कि मानव इतिहास और विकास का एक अभिन्न अंग भी है जो व्यक्ति और समाज दोनों के लिए मार्गदर्शक प्रकाश का काम करता है।

जीवन एक पाठशाला है जहाँ अनुभव सबसे बड़े शिक्षक हैं। अक्सर हम सफलता और सुख की कामना करते हैं, लेकिन Personal Growth तब होता है जब हम कठिनाइयों का सामना करते हैं। जैसा कि कहा जाता है, शांत समुद्र एक कुशल नाविक नहीं बना सकता, वैसे ही सुखद जीवन इंसान को मजबूती नहीं सिखाती। कड़वे अनुभव हमें अहंकार, अति-आत्मविश्वास और अज्ञानता के जाल से बाहर निकालते हैं। असफलता यह सिखाती है कि हमारी रणनीति में कमी कहाँ थी। यह हमें फिर से प्रयास करने की प्रेरणा और विनम्रता सिखाती है, जो सफलता के लिए अनिवार्य है।

कड़वे अनुभव अपने आप ज्ञान नहीं बन जाते। इसके लिए आत्म-चिंतन और सकारात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। यदि हम उन अनुभवों से भागते हैं, तो हम केवल दुखी होंगे। लेकिन, यदि हम यह पूछते हैं कि "यह स्थिति मुझे क्या सिखा सकती है?", तो वही कड़वाहट एक अमूल्य पाठ बन जाती है।

इतिहास साक्षी है कि महापुरुषों ने विपरीत परिस्थितियों से ही महानता प्राप्त की। महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में भेदभाव का कटु अनुभव सहा। उसी ने उन्हें सत्याग्रह तथा अहिंसा का मार्ग अपनाने की प्रेरणा दी। अब्राहम लिंकन ने अनेक असफलताओं का सामना किया। किंतु उन्हीं अनुभवों से संघर्ष व धैर्य का महत्व सीखा और अमेरिका के सफल राष्ट्रपति बने। हमारे दैनिक जीवन में भी कड़वे अनुभव हमें परिपक्व बनाते हैं। एक असफल परीक्षा हमें अधिक मेहनत करने की प्रेरणा देता है। एक टूटा हुआ संबंध हमें सच्चे रिश्तों की अहमियत सिखाता है। जीवन के कठिन और कड़वे अनुभव ही हमें सही मायने में मजबूत, धैर्यवान, और समझदार बनाते हैं। इन्हीं अनुभवों से हम वह सीख प्राप्त करते हैं। परिश्रम व्यक्ति के चरित्र और व्यक्तित्व को गहरा करता है। यह व्यक्ति को अधिक आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर बनाता है, चुनौतियों का सामना करने के लिए मानसिक रूप से मजबूत बनाता है, जीवन के प्रति अधिक परिपक्व और संतुलित दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है।

सम्राट अशोक मात्र एक राजा थे किंतु कलिंग युद्ध ने उनको इस प्रकार आहत किया कि युद्ध का मार्ग छोड़ कर उन्होंने धर्म की नीति का अनुसरण किया और अहिंसा का मार्ग अपना लिया। आवश्यक नहीं है कि कड़वे अनुभव हमेशा सही मार्ग चुनने को विवश करते हैं। बल्कि कभी-कभी नासमझी, अज्ञानता या फिर जानबूझकर भी एक व्यक्ति शत्रुता को शत्रुता से और हिंसा को हिंसा से समाप्त करना चाहता है। मनुष्य की सोच ही उसके लिए सबसे बड़ा शिक्षक है। यदि सोच सकारात्मक है, तो जीवन के प्रति दृष्टिकोण भी सकारात्मक होगा और सफलता मिलेगी। लेकिन, यदि सोच विपरीत हो जाए, तो वह व्यक्ति के विनाश का कारण बन जाती है।

गौतम बुद्ध राजमहलों की सुख-सुविधा में रहते हुए जीवन का सत्य न जान पाए। किंतु जब उन्होंने वृद्धावस्था, रोग और मृत्यु का दर्शन किया तो वे कड़वे अनुभव उन्हें वैराग्य की ओर ले गए और अंततः समस्त मानवता के लिए करुणा और मध्यम मार्ग का संदेश बन गए। यदि पीड़ा हमें केवल निराश करे, तो उसका कोई मूल्य नहीं; किंतु यदि वही पीड़ा आत्मचिंतन को जन्म दे, तो वही जीवन का मोड़ बन जाती है। जैसे किसान भूमि को जोतता है– मिट्टी टूटती है, उलट-पुलट होती है, तब जाकर उसमें बीज अंकुरित होता है; उसी तरह कष्ट और संघर्ष जीवन की कठोर मिट्टी को तैयार करते हैं, जिसमें ज्ञान और परिपक्वता का बीज पनपता है।

जीवन में जब हम असफल होते हैं, तो वह कड़वाहट हमारे अंदर की छिपी हुई शक्ति को उजागर करती है। हमें पता चलता है कि हम कितने मजबूत हैं और क्या हासिल कर सकते हैं। यह हमें आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाती है। संघर्ष हमें यह भी सिखाता है कि सफलता के लिए लगातार प्रयास करना और हार न मानना कितना जरूरी है। संघर्ष हमें सिखाते हैं कि मुसीबतें हमें तोड़ती नहीं, बल्कि उन्हें झेलकर हम और भी निखर जाते हैं। वे हमें लचीलापन सिखाते हैं जो हमें जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए मजबूत बनाता है। संघर्ष को अक्सर जीवन का दूसरा नाम कहा जाता है क्योंकि बिना मेहनत के सफलता हासिल करना कठिन होता है। यह हमें सिखाता है कि जो कुछ भी होता है, वह एक कारण से होता है और हर स्थिति से कुछ सीखा जा सकता है।

असफलता जीवन की कठोर शिक्षक है। वे हमें केवल गलतियों का बोध ही नहीं कराते, बल्कि साहस, धैर्य, नैतिकता और दूरदर्शिता भी प्रदान करते हैं। प्रशासनिक सेवाओं में जहाँ हर निर्णय व्यापक जनसमूह पर प्रभाव डालता है, वहाँ असफलताओं से सीखना और भी आवश्यक हो जाता है। कड़वे

अनुभव जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है, जो हमें एक बेहतर, अधिक समझदार और दयालु इंसान बनने में मदद करते हैं। हमें इन अनुभवों को एक बोझ के रूप में नहीं, बल्कि जीवन के एक सच्चे शिक्षक के रूप में स्वीकार करना चाहिए। जो लोग इन अनुभवों को अपनाते हैं और उनसे सीखते हैं, वे न केवल जीवन की चुनौतियों का सामना कर पाते हैं, बल्कि वे सफलता और ज्ञान के शिखर तक भी पहुँच सकते हैं, क्योंकि कड़वा अनुभव ही ज्ञान की ओर ले जाता है।

किन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कड़वे अनुभव केवल तभी फलदायी बनते हैं, जब उन्हें स्वीकार कर आत्मसात किया जाए। यदि हम अतीत की चोटों में ही डूबे रहें, तो वे हमें कुंठा और प्रतिशोध की ओर ले जाती है। जबकि यदि उन्हें शिक्षक मानकर आगे बढ़ें, तो वे हमारे व्यक्तित्व का सर्वश्रेष्ठ निर्माण करती हैं। यही कारण है कि महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के अपमान को आत्मबल में बदलकर सत्याग्रह का मार्ग खोजा, जो अंततः विश्व के लिए अहिंसा का सबसे बड़ा सबक बना।

आज की प्रतिस्पर्धी और अनिश्चित दुनिया में यह शिक्षा और भी प्रासंगिक हो उठी है। असफलताएँ और कष्ट अवश्य आएँगे, परंतु यदि हम उनमें अवसर तलाशना सीख लें, तो वही हमारे जीवन की दिशा बदल देंगे। असल में, अनुभव की कसौटी पर परखे बिना कोई भी ज्ञान पूर्ण नहीं होता।

निस्संदेह, जीवन के सबसे अच्छे सबक कड़े अनुभवों से ही सीखे जाते हैं। ये अनुभव हमें केवल समस्याओं से निपटना नहीं सिखाते, बल्कि हमें एक बेहतर इंसान बनने की राह भी दिखाते हैं। वे हमारी आंतरिक शक्ति को उजागर करते हैं, हमें विनम्रता सिखाते हैं और हमें दूसरों के प्रति अधिक सहानुभूतिपूर्ण बनाते हैं। जबकि हम सभी सुखद अनुभवों की कामना करते हैं, हमें यह समझना चाहिए कि कठिनाइयाँ और असफलताएँ विकास के लिए आवश्यक हैं। इन अनुभवों को स्वीकार करके और उनसे सीखकर ही हम जीवन की चुनौतियों का सामना अधिक दृढ़ता, बुद्धिमत्ता और अनुग्रह के साथ कर सकते हैं, जिससे हमारा व्यक्तिगत और सामूहिक भविष्य अधिक उज्ज्वल होगा। हालाँकि हम मानव अस्तित्व से दुखों को समाप्त नहीं कर सकते, लेकिन हम विनाशकारी क्षमता को कम करते हुए कठिन अनुभवों से ज्ञान प्राप्त करने के लिए ढाँचे विकसित कर सकते हैं। इसमें लचीलापन विकसित करना, सहायक समुदाय बनाना और अर्थ-निर्माण प्रणालियाँ विकसित करना शामिल है जो दर्द को विकास में बदलने में मदद करते हैं। कड़वे अनुभवों से ही सर्वोत्तम सबक मिल सकते हैं, लेकिन केवल तभी जब हमारे पास उनसे सीखने के लिए आवश्यक उपकरण और समर्थन हो। कष्ट और संघर्ष को यदि हम शत्रु न मानकर गुरु मानें, तो जीवन की हर कठिनाई हमारे व्यक्तित्व को निखारते हुए सफलता और संतोष की ओर ले जाएगी।

यदि तुम

श्री शुभजीत राय
लेखापरीक्षक

यदि तुम न आकर भी
करीब आ जाते हो...
यदि कुछ कहे बिना भी
बहुत कुछ कह जाते हो,
यदि पुरानी यादों को
नए रंग और नए रूप में
तुम एक नया आकार देकर
सजा जाते हो...
यदि तुम नई धुन में, नए स्वर में
नया गीत बना जाते हो,
तो क्या तुम इस “यदि” को
“अभी” में बदलना चाहोगे?
पंक्षियों का सामुहिक कलरव
यदि फिर से नए गीत की रचना करे,
अंबर से धरती तक
एक नए संसार की सृष्टि करे,
तो क्या तुम पुरानी बातें भुलकर,
मेरे साथ, मेरे पास
एक नए रुप में जुड़ पाओगे?

"मेरी पहली तैनाती: एक अविस्मरणीय यात्रा"

श्री राहुल चौधरी
कनिष्ठ अनुवादक

जीवन में कुछ यात्राएँ केवल स्थान बदलने तक सीमित नहीं होतीं, वे मनुष्य के भीतर एक गहरा परिवर्तन कर देती हैं। मेरी पहली तैनाती भी ऐसी ही एक यात्रा थी—जहाँ सूटकेस में कपड़ों के साथ-साथ सपने, आशंकाएँ, उम्मीदें और अनगिनत प्रश्न भरे थे। वह दिन आज भी स्मृतियों में उसी ताजगी के साथ जीवित है, जब बैंक ऑफ इंडिया में 'राजभाषा हिंदी सेवा' की नियुक्ति आदेश हाथ में लेकर मैं अपने जीवन के एक नए अध्याय की दहलीज़ पर खड़ा था। यह केवल घर से दूर किसी नए स्थान तक पहुँचने की बात नहीं थी, बल्कि उस भाषा के प्रति उत्तरदायित्व निभाने की शुरुआत थी, जो मेरी पहचान, मेरी सोच और मेरी संवेदना का मूल आधार रही है।

जीवन में कुछ पड़ाव ऐसे आते हैं जो केवल समय का एक हिस्सा नहीं होते, बल्कि व्यक्तित्व को गढ़ने वाली कार्यशाला बन जाते हैं। मेरी पहली तैनाती राजकोट में हुई—एक ऐसा अनुभव जिसने मुझे पेशेवर जीवन की वास्तविकता से परिचित कराया और आत्मविश्वास, धैर्य तथा जिम्मेदारी का सही अर्थ समझाया।

जब मुझे पहली बार तैनाती का आदेश मिला और पता चला कि कार्यस्थल राजकोट होगा, तो मन में उत्सुकता और जिज्ञासा दोनों थीं। एक ओर नई जगह देखने का रोमांच था, तो दूसरी ओर यह चिंता भी कि नया माहौल कैसा होगा, लोग कैसे होंगे और कार्य का स्वरूप कितना चुनौतीपूर्ण रहेगा।

राजकोट पहुँचने का अनुभव आज भी स्मृतियों में ताज़ा है। हवाई अड्डा से बाहर निकलते ही शहर की स्वच्छता, व्यवस्थित यातायात और शांत वातावरण ने स्वागत किया। यह शहर न तो अत्यधिक भागदौड़ वाला लगा और न ही अत्यधिक धीमा—मानो संतुलन का एक सुंदर उदाहरण हो।

पहले दिन कार्यालय जाते समय मन में कई प्रश्न थे–क्या मैं अपेक्षाओं पर खरा उतर पाऊँगा? क्या मैं नई जिम्मेदारियों को सही ढंग से निभा पाऊँगा? लेकिन जैसे ही कार्यालय पहुँचा, सहकर्मियों के आत्मीय व्यवहार ने सारी आशंकाएँ काफी हद तक दूर कर दी।

कार्यालय का पहला दिन किसी विद्यार्थी के पहले स्कूल दिवस जैसा होता है–नई जगह, नए चेहरे और सीखने की उत्सुकता। उस दिन मुझे कार्यप्रणाली, विभागीय नियमों और जिम्मेदारियों के बारे में बताया गया।

शुरुआती दिनों में हर कार्य नया लगता था। फाइलों का प्रबंधन, समय सीमा का पालन, आधिकारिक संवाद–इन सभी को समझने में समय लगा। कभी-कभी छोटी-छोटी गलतियाँ भी हुईं, लेकिन वरिष्ठ अधिकारियों ने मार्गदर्शन देकर सीखने का अवसर दिया।

धीरे-धीरे मुझे यह समझ आने लगा कि सरकारी सेवा या किसी भी पेशे में केवल ज्ञान ही पर्याप्त नहीं होता, बल्कि व्यवहार, धैर्य और टीम भावना भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है।

पहली तैनाती का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यही होता है कि व्यक्ति पहली बार वास्तविक चुनौतियों का सामना करता है। मेरे सामने भी कई परिस्थितियाँ आईं–

- कार्यभार का दबाव
- समय सीमा में काम पूरा करना
- विभिन्न स्तरों के अधिकारियों के साथ समन्वय
- नियमों और प्रक्रियाओं की गहराई से समझ

इन चुनौतियों ने मुझे मानसिक रूप से मजबूत बनाया। मैंने सीखा कि समस्या चाहे कितनी भी जटिल क्यों न हो, शांत मन और व्यवस्थित दृष्टिकोण से उसका समाधान निकाला जा सकता है।

समय के साथ आत्मविश्वास बढ़ता गया और कार्य में दक्षता आने लगी। हर दिन एक नई सीख लेकर आता था और यही सीख धीरे-धीरे अनुभव में बदलती गई।

राजकोट में कार्यस्थल का वातावरण सहयोगात्मक और सकारात्मक था। सहकर्मियों के बीच आपसी सम्मान और टीमवर्क की भावना स्पष्ट दिखाई देती थी।

जब भी किसी कठिन कार्य का सामना होता, सभी मिलकर समाधान खोजते। इस सहयोगात्मक संस्कृति ने मुझे यह सिखाया कि किसी भी संस्था की सफलता केवल व्यक्तिगत प्रयासों से नहीं, बल्कि सामूहिक सहयोग से संभव होती है।

कार्यालय धीरे-धीरे मेरे लिए केवल काम की जगह नहीं रहा, बल्कि एक परिवार जैसा बन गया, जहाँ हर व्यक्ति एक-दूसरे की प्रगति में योगदान देता है।

राजकोट में रहते हुए मुझे स्थानीय संस्कृति को करीब से देखने और समझने का अवसर मिला। यहाँ के लोग सरल, मेहनती और मिलनसार हैं।

त्योहारों के समय शहर की रौनक देखते ही बनती है—हर जगह उत्साह, रंग और उल्लास का वातावरण होता है। स्थानीय भोजन की सादगी और स्वाद ने भी मुझे प्रभावित किया।

यहाँ की जीवनशैली ने मुझे सिखाया कि संतुलित जीवन ही वास्तविक सुख का आधार है। काम के साथ-साथ मानसिक शांति और सामाजिक जुड़ाव भी उतना ही आवश्यक है।

पहली तैनाती केवल पेशेवर विकास तक सीमित नहीं रहती, बल्कि व्यक्ति के भीतर भी कई सकारात्मक परिवर्तन लाती है।

राजकोट में बिताए समय ने मुझे—

- आत्मनिर्भर बनना सिखाया
- निर्णय लेने की क्षमता विकसित की
- समय प्रबंधन का महत्व समझाया
- जिम्मेदारियों के प्रति सजग बनाया

इन अनुभवों ने मेरे आत्मविश्वास को नई ऊँचाई दी। अब मैं परिस्थितियों का सामना अधिक परिपक्वता और सकारात्मक दृष्टिकोण से करने लगा था।

समय बीतने के साथ यह शहर केवल कार्यस्थल नहीं रहा, बल्कि भावनाओं का हिस्सा बन गया।

पहली सफलता की खुशी, पहली गलती से मिली सीख और कठिन समय में मिला सहयोग—ये सभी स्मृतियाँ इस शहर से जुड़ गईं।

कभी-कभी शाम को शहर की सड़कों पर चलते हुए यह एहसास होता था कि यह जगह अब अनजानी नहीं रही; यह मेरे जीवन की कहानी का महत्वपूर्ण अध्याय बन चुकी है।

हर पहली तैनाती कुछ खास यादें छोड़ जाती हैं।

- पहला सफल प्रोजेक्ट
- वरिष्ठों से मिली सराहना
- टीम के साथ साझा किए गए अनुभव
- नई जगह को अपनाने की प्रक्रिया

ये सभी क्षण आज भी प्रेरणा देते हैं और आगे बढ़ने का उत्साह बनाए रखते हैं।

राजकोट में मिली सीख ने मेरे पूरे करियर की नींव मजबूत कर दी। यहाँ सीखे गए मूल्य–ईमानदारी, अनुशासन और सहयोग–आगे के हर कार्य में मार्गदर्शक बने।

यह अनुभव मुझे हमेशा याद दिलाता है कि किसी भी नई शुरुआत से डरने के बजाय उसे सीखने के अवसर के रूप में अपनाना चाहिए।

मेरी पहली तैनाती राजकोट में हुई यह यात्रा वास्तव में अविस्मरणीय है। इसने मुझे न केवल पेशेवर रूप से सक्षम बनाया, बल्कि जीवन के प्रति एक सकारात्मक और परिपक्व दृष्टिकोण भी दिया।

आज जब पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो लगता है कि वही समय मेरे आत्मविश्वास और व्यक्तित्व निर्माण का आधार था।

सच ही कहा गया है - **पहली तैनाती केवल एक नियुक्ति नहीं होती, बल्कि जीवन की दिशा तय करने वाला अनुभव होता है।**

"हिंदी विश्व की महान भाषा है।" - राहुल सांकृत्यायन।

रिटायरमेंट

श्री विवेक कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक

रिटायरमेंट शब्द से ही आप लोग समझ गये होगें कि मैं किस रिटायरमेंट की बात कर रहा हूँ क्योंकि रिटायरमेंट बहुत तरह के होते हैं। कोई फिल्मी जगत से रिटायरमेंट लेता है तो कोई क्रिकेट जगत से लेकिन मैं यहाँ उन दोनों की बात नहीं कर रहा हूँ, मैं यहाँ सरकारी कार्यालय से रिटायरमेंट की बात कर रहा हूँ। रिटायरमेंट अच्छी होती है या बुरी और इसका दैनिक जीवन में क्या प्रभाव पड़ता है? रिटायरमेंट की सही उम्र क्या होनी चाहिए? क्या व्यक्ति को सचमुच उसके जिम्मेदारियों से रिटायरमेंट मिलती है? क्या रिटायरमेंट के बाद परिवार में व्यक्ति की महत्ता वही रहती है जो रिटायरमेंट से पहले थी? कहीं रिटायरमेंट की सही उम्र मृत्यु तो नहीं? ऐसे ही कई अनगिनत सवाल इस एक शब्द में छुपे हैं जिनका जवाब शायद हमलोगों के पास भी नहीं।

किसी भी व्यक्ति के जीवन में रिटायरमेंट एक महत्वपूर्ण और भावनात्मक पड़ाव होता है। यह वह समय होता है जब एक कर्मचारी वर्षों तक अपनी सेवाएं देने के बाद अपने पद से विदा लेता है। सरकारी कार्यालयों में एक न एक दिन सभी को रिटायर होना पड़ता है पर क्या वे सचमुच चाहते हैं रिटायर होना या वे सिर्फ नियमों का पालन करते हैं? रिटायरमेंट के बाद आप क्या-क्या कर सकते हो या क्या-क्या करना चाहोगे ये भी एक बहुत बड़ा प्रश्न है जिसका जवाब सभी लोग रिटायरमेंट से पहले सोच लेते हैं लेकिन रिटायरमेंट के बाद क्या वे सभी सोची हुई बातों पर अमल कर पाते हैं? आइए, इन्हीं सब बातों से जुड़ी एक छोटी सी घटना आपके सामने प्रस्तुत करता हूँ।

गोपाल बाबू हमारे ऑफिस की जान थे। उनका पूरा नाम रामगोपाल बाबू था। नाम से ही आप उनके व्यक्तित्व की पहचान कर सकते हैं। सीधे, सरल, सिर पर सफेद और काले बालों का मिश्रण, गोरा मुख, आँखों में चश्मा, छोटा कद और ढलती उम्र के साथ हमारे ऑफिस के ऑलराउंडर। क्या गुण नहीं थे उनमें ये पूछिए, गुणों के खान थे गोपाल बाबू। हमारे ऑफिस की शान थे गोपाल बाबू। उनके चेहरे पर हर समय हंसी-खुशी साफ झलकती थी। मानो वे इस ऑफिस में खुशियाँ ही बाँटने आये हों। ऑफिस में वे बड़े-छोटे सबका हाल पूछते थे। ऐसा कोई भी दिन न हो, जो वे आये हों और किसी से बात न किया हो। वे ऑफिस में किसी की कोई भी समस्या हो, तुरन्त उसके पास पहुँच जाते थे। उनका मानना था कि अगर हम समस्या का समाधान चाहते हैं तो हमें समस्या के पास जाना होगा तभी हम जल्द से जल्द उसका समाधान ढूँढ पायेंगे और वे उसका समाधान ढूँढ भी लेते थे।

अक्सर ऑफिस के सारे अनुष्ठान उनके ही कंधों पर होते थे। उन्हें पूजा के सारे मंत्र ज्ञात थे। वे खुशी-खुशी कार्यालय के सभी कर्मचारियों के अनुष्ठानों में हिस्सा लेते थे। उन्हें इसके अलावा बहुत सारी भाषाओं का भी ज्ञान था जैसे- बंगाली, गुजराती, तमिल, तेलगू और अँग्रेजी। वे ज्यादातर सभी कर्मचारियों से उन्हीं की भाषा में बातचीत करते थे ताकि उनसे भाईचारा और मित्रता स्थापित कर सकें। मैं ऑफिस में नया-नया आया ही था कि मुझे उनके रिटायरमेंट के बारे में पता चला। ऑफिस का एक भी कर्मचारी ऐसा नहीं होगा जिनकी आँखें उनकी रिटायरमेंट की खबर पाकर गिली न हुई हों। सभी लोग उनके रिटायरमेंट से काफी ज्यादा भावुक थे क्यों कि वे केवल एक सहकर्मी ही नहीं बल्कि हम सबके मार्गदर्शक भी थे। हमारे अधिकारी ने भी मुख्य प्रशासनिक अधिकारी से इस विषय में बात की कि क्या उनके रिटायरमेंट की अवधि बढ़ाई नहीं जा सकती, लेकिन सर ने कहा ये नियम के विरुद्ध होगा, हम कुछ भी नहीं कर सकते। फिर एक दिन आया, वो दिन जो शायद ऑफिस का कोई भी कर्मचारी नहीं चाहता होगा कि वो दिन आये, गोपाल बाबू के रिटायरमेंट का दिन। उनके रिटायरमेंट के उपलक्ष्य में ऑफिस में छोटे से कार्यक्रम का आयोजन किया गया था ताकि उन्हें उनके अमूल्य योगदान के लिए सम्मानित किया जाये। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और स्वागत भाषण से हुई। इसके बाद सभी सहकर्मियों ने मंच पर आकर गोपाल बाबू के साथ बिताए अपने अनुभव साझा किए। ऑफिस के सभी कर्मचारियों ने पहली बार सर की आँखों में आँसू देखे। सबको हँसाने वाले जैसे खुद फूट-फूट कर रो रहे हों। उन्हें देखने से ऐसा लग रहा था जैसे उनका कोई अपना उनसे छूट रहा हो। उनके एक-एक शब्द पर तालियों की गड़गड़ाहट पूरे हॉल में गूंज रही थी। उस दिन मैंने अपने जीवन में किसी को रिटायरमेंट होते हुए बड़े

करीब से देखा और उसके महत्व को भी समझा। सारे कर्मचारियों ने गोपाल बाबू की प्रशंसा करते हुए कहा कि किसी भी संस्था की सफलता उनके कर्मचारियों की मेहनत और ईमानदारी पर निर्भर करती है और गोपाल बाबू ऐसे ही समर्पित कर्मचारियों में से एक थे। सभी कर्मचारियों ने तालियों से उनका अभिनंदन किया तथा अपने पैसे से सर के लिए गिफ्ट की व्यवस्था की ताकि हम सबकी याद उनके दिल में बनी रही। अंत में गोपाल बाबू ने भी हम सभी को अपना स्नेह और आशीर्वाद दिया।

उनको देखकर मैंने यही सीखा कि आप किसी भी कार्यालय में कितने दिन कार्य करते हैं और किस पद पर कार्य करते हैं, कितना कार्य करते हैं और क्या कार्य करते है, ये महत्व नहीं रखता। महत्व ये रखता है कि आपने ऑफिस के सदस्यों के साथ कैसा व्यवहार किया ताकि आप उस कार्यालय में रहें या न रहें, लोग आपको हर समय अपनी बातों में याद करें तभी आप एक सफल कर्मचारी बन पाते हैं। गोपाल बाबू को देखकर ऐसा ही लगता था कि ऑफिस के एक क्लर्क होने के बावजूद हमारे दिल में उनका सम्मान बड़े-बड़े अधिकारियों से काफी ऊँचा था। व्यक्ति केवल अपने वचनों से नहीं बल्कि कर्मों से बड़ा होता है।

मक्खन नहीं, मेहनत से मान बढ़ाएँ हम

श्री संदीप कुमार
सहायक पर्यवेक्षक

चमचागिरी की दुनिया छोड़ें,
ईमानदारी से काम चलाएँ
जो सही है, उसको सही बोलें हम
मक्खन नहीं, मेहनत से मान बढ़ाएँ हम ।।

शब्दों की चाशनी में मत बहो,
कर्मों की खुशबू पहचानो तुम
न बिकें, थोड़ा-सा लाभ के लिए हम
मक्खन नहीं, मेहनत से मान बढ़ाएँ हम ।।

चरण चुम्बक-सा चिपकना छोड़ें,
स्वाभिमान का दीप जलाएँ
झूठी शोहरत से अच्छा पसीने की रोटी खाएँ हम
मक्खन नहीं, मेहनत से मान बढ़ाएँ हम ।।

चापलूसी कर काम न निकालें,
सच का रास्ता आज अपनाएँ
इंसान हैं, इंसान रहें हम
मक्खन नहीं, मेहनत से मान बढ़ाएँ हम ।।

"भाषा की एकता जाति की एकता को कायम रखती है।"

- राहुल सांकृत्यायन

कामकाजी महिला के लिए कार्य-जीवन संतुलन का महत्व

सुश्री प्रिया साव
कनिष्ठ अनुवादक

आज के समय में समाज में महिलाओं की भूमिका बहुआयामी हो गई है। वह केवल गृहिणी ही नहीं, बल्कि शिक्षिका, प्रशासक, चिकित्सक, उद्यमी और विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्वकर्ता के रूप में अपनी पहचान बना रही है। ऐसी परिस्थिति में उसके सामने सबसे बड़ी चुनौती होती है–कार्य और निजी जीवन के बीच संतुलन स्थापित करना। आज के समय में महिलाएँ घर और ऑफ़िस दोनों क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वे एक ओर अपने परिवार का ध्यान रखती हैं तो दूसरी तरफ ऑफ़िस में अपनी प्रतिभा और नेतृत्व क्षमता का परिचय दे रही हैं। ऐसी स्थिति में कार्य और जीवन के बीच संतुलन बनाए रखना उनके शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। हालांकि, पुरुष समकक्षों की तुलना में उन पर दोहरी जिम्मेदारी का बोझ होता है, जो कार्य-जीवन संतुलन को चुनौतीपूर्ण बनाता है। क्योंकि उनपर ऑफ़िस के कार्य के अतिरिक्त घर की भी जिम्मेदारी होती है। परिवार के लिए खाना बनाने,घर के सदस्यों के बीमार पड़ने पर उनका देखभाल करने,घर के बजट का ध्यान रखना भी उनकी जिम्मेदारी होती है। ऐसी स्थिति में कई बार उन्हें मानसिक एवं शारीरिक रुप से थकान के कारण चिड़चिड़ापन आ जाता है।

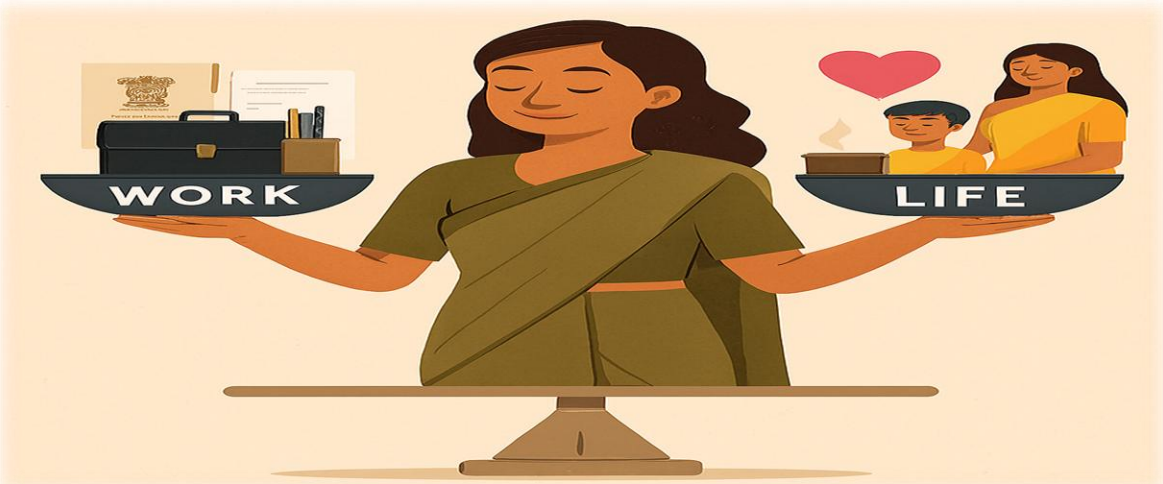

1. मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य

घर एवं कार्यालय में लगातार काम का दबाव, घर की जिम्मेदारियाँ महिलाओं पर अतिरिक्त बोझ डाल डाल देती हैं। कार्य और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन न होने पर तनाव, थकान और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। कार्य और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन बनाए रखने से तनाव कम होता है, स्वास्थ्य सुधरता है और पारिवारिक संबंध मजबूत होते हैं, जिससे शारीरिक व्यायाम और शौक के लिए समय मिलता है। परिवार में खुशी बढ़ती है और करियर में प्रगति होती है। जब महिला को स्वयं के लिए समय मिलता है, तो वह

अपने खान-पान और व्यायाम पर ध्यान दे पाती है, जिससे वह मानसिक एवं शारीरिक रुप से स्वस्थ्य होती है।

2. परिवार के बीच सामंजस्य बनाए रखना

कार्य-जीवन संतुलन से पारिवारिक संबंध मजबूत होते हैं। वर्तमान समय में महिलाएं परिवार को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ-साथ अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन भी करती हैं। ऐसे में परिवार के बीच सामंजस्य बनाए रखना उनके लिए चुनौतीपूर्ण हो जाता है। इसके लिए, सबसे पहले, समय का संतुलित प्रबंधन आवश्यक है। कार्यालयीन कार्यों के साथ-साथ परिवार के लिए निश्चित समय निर्धारित करना पारिवारिक रिश्तों को मजबूत बनाता है। इसके अतिरिक्त, बातचीत और पारदर्शिता पारिवारिक सामंजस्य को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कामकाजी महिलाएं यदि अपने कार्यस्थल की चुनौतियों और उपलब्धियों को परिवार के साथ साझा करती हैं, तो परिवार के सदस्य उसकी परिस्थितियों को बेहतर समझ पाते हैं। कई बार समय की कमी या व्यस्तता के कारण गलत धारणाएँ बन जाती हैं। बातचीत से ये भ्रम तुरंत खत्म हो जाते हैं, जिससे विवाद बढ़ने से पहले ही समाप्त हो जाते हैं। इसके अलावा, जिम्मेदारियों का साझा वितरण भी आवश्यक है। परिवार के अन्य सदस्यों का सहयोग, चाहे वह जीवनसाथी हो या बच्चे, घरेलू कार्यों के संतुलन में सहायक होता है। घर से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णय–जैसे बच्चों की शिक्षा, आर्थिक योजना या पारिवारिक कार्यक्रम–यदि आपसी चर्चा से लिए जाएँ, तो सभी को सम्मान और महत्व का अनुभव होता है। इससे सामूहिक जिम्मेदारी की भावना बढ़ती है।

3. कार्यक्षमता में वृद्धि

वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक युग में कार्यक्षमता किसी भी पेशेवर सफलता का महत्वपूर्ण आधार है। कामकाजी महिला के लिए यह और भी अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है, क्योंकि उसे घर और कार्यालय–दोनों क्षेत्रों की जिम्मेदारियों का संतुलन बनाए रखना होता है। सही योजना और प्राथमिकताओं का निर्धारण कार्यक्षमता बढ़ाने का पहला कदम है। दैनिक कार्यों की सूची बनाना, महत्वपूर्ण कार्यों को पहले पूरा करना एक महिला को अधिक संगठित और प्रभावी बनाता है। इसके साथ ही मानसिक शांति कार्यक्षमता को सीधे प्रभावित करते हैं। यदि महिला तनावमुक्त और सकारात्मक रहती है, तो वह बेहतर निर्णय ले पाती है और चुनौतियों का समाधान अधिक कुशलता से कर सकती है। नई तकनीकों और कार्यप्रणालियों को सीखना कार्यकुशलता में वृद्धि करता है। प्रशिक्षण, कार्यशालाओं और अध्ययन के माध्यम से स्वयं को अद्यतन रखना करियर में उन्नति में सहायक होता है।

4. आत्मविकास का अवसर

आज के समय में कामकाजी महिला केवल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं, बल्कि अपने व्यक्तित्व विकास की दिशा में भी अग्रसर है। कार्यक्षेत्र में सक्रिय भागीदारी उसे आत्मविकास के अनेक अवसर प्रदान करती है। यह अवसर केवल पदोन्नति या वेतन वृद्धि तक सीमित नहीं, बल्कि उसके आत्मविश्वास और ज्ञान में वृद्धि से भी जुड़ा होता है। जब महिला अपने कार्यक्षेत्र में उपलब्धियाँ प्राप्त करती है, तो उसका आत्मविश्वास बढ़ता है। यह आत्मविश्वास उसे नई चुनौतियों को स्वीकार करने और कठिन परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति प्रदान करता है। कार्यालयीन अनुभव, प्रशिक्षण कार्यक्रम और नई तकनीकों के बारे में जानना महिलाओं के ज्ञान में वृद्धि करते हैं। स्वावलंबन और कार्यकुशलता के कारण महिलाओं को समाज में सम्मान और पहचान मिलती है। यह पहचान उसके व्यक्तित्व को और अधिक सशक्त बनाती है।

5. सामाजिक सशक्तिकरण

वर्तमान युग में कामकाजी महिला समाज की प्रगति और विकास की प्रमुख शक्ति बनकर उभरी है। शिक्षा, रोजगार और आत्मनिर्भरता के माध्यम से वह न केवल अपने जीवन को सशक्त बना रही है, बल्कि सामाजिक संरचना में भी सकारात्मक परिवर्तन ला रही है। रोजगार के माध्यम से प्राप्त आय महिला को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाती है। आर्थिक आत्मनिर्भरता से उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और वह अपने तथा परिवार के हित में स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम होती है। कार्यस्थल पर सफलता और जिम्मेदारियों का निर्वहन महिला को समाज में प्रतिष्ठा दिलाता है। उसकी उपलब्धियाँ अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनती हैं और समानता की भावना को सुदृढ़ करती हैं। कामकाजी महिला अपनी क्षमता और प्रतिभा के माध्यम से उन सामाजिक धारणाओं को चुनौती देती है, जो महिलाओं को सीमित भूमिका तक बाँधती हैं। इसके साथ ही जब बच्चे अपनी माता को कार्य और परिवार दोनों में संतुलित एवं सफल देखते हैं, तो उनमें समानता और परिश्रम के मूल्य विकसित होते हैं। कामकाजी महिला का सामाजिक सशक्तिकरण केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि समाज के समग्र विकास का संकेत है। जब महिलाएँ आत्मनिर्भर, सम्मानित और निर्णय लेने में सक्षम होंगी, तभी एक समतामूलक और प्रगतिशील समाज की स्थापना संभव होगी।

महिलाओं के लिए कार्य और जीवन के बीच संतुलन बहुत ही आवश्यक है। यह संतुलन उनके शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति और पारिवारिक सुख-शांति का आधार बनता है। जब महिलाएँ संतुलित और सशक्त होंगी, तभी समाज और राष्ट्र की प्रगति संभव होगी। साथ ही कार्यक्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन तभी संभव है जब घर का वातावरण सहयोगपूर्ण और समझदारी से भरा हो।

आई.सी.सी. महिला क्रिकेट टीम वर्ल्ड कप फाइनल 2025

सुश्री गुंजा कुमारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने विश्व कप 2025 का फाइनल जीत लिया। हरमनप्रीत कौर की कप्तानी वाली टीम इंडिया ने अपना पहला आईसीसी खिताब जीतकर इतिहास रच दिया है। डीवाई पाटिल स्टेडियम में खेले गए फाइनल में भारतीय टीम दक्षिण अफ्रीका को 52 रन से हराकर विश्व चैंपियन बनी।

क्रिकेट वर्ल्ड कप का सेमीफ़ाइनल मुक़ाबला और सामने सात बार की चैम्पियन ऑस्ट्रेलिया की टीम ने 338 रनों का विशाल स्कोर बनाया। लेकिन भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने वर्ल्ड कप के इतिहास में सबसे सफ़ल चेज़ कर दिखाया। ऑस्ट्रेलिया की ओर से मिले मुश्किल लक्ष्य 339 रन को भारतीय टीम ने 48.3 ओवर में पांच विकेट गंवाकर हासिल कर लिया। सेमीफ़ाइनल मुक़ाबले में शेफ़ाली वर्मा और स्मृति मंधाना के रूप में शुरुआती झटकों के बाद बिखरती दिख रही टीम इंडिया को संभाला जेमिमा रॉड्रिग्स और कप्तान हरमनप्रीत कौर ने। भारत की जीत की हीरो जेमिमा रहीं, जिन्होंने 127 रन की नाबाद पारी खेली। भारत की ओर से कप्तान हरमनप्रीत कौर ने 89 रन की पारी खेली। श्री चरणी और दीप्ति शर्मा ने दो-दो विकेट लिए। ऑस्ट्रेलिया 2025 महिला क्रिकेट विश्व कप के ग्रुप चरण में अपराजित रही, हालांकि सेमीफाइनल में अंततः चैंपियन बनी भारत ने 338 रनों के रिकॉर्ड लक्ष्य का पीछा करते हुए टूर्नामेंट से बाहर कर दिया। भारत ने विश्व कप के नॉकआउट इतिहास में सबसे शानदार प्रदर्शनों में से एक करते हुए ऑस्ट्रेलिया को चौंका दिया और फाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली।

अब फाइनल के लिए भारत और दक्षिण अफ्रिका की टीमें थीं। दोनों ही टीमों ने अब तक एक बार भी वलर्ड कप का फाइनल नहीं जीता था । यानी महिला क्रिकेट विश्व कप को एक नया चैम्पियन मिलना तय था।

2025 **आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप फाइनल** महिला एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच था जो 2 नवंबर 2025 को डीवाई पाटिल स्टेडियम, नवी मुंबई में खेला गया था ताकि 2025 महिला क्रिकेट विश्व कप का विजेता तय किया जा सके। यह मेज़बान देश भारत और दक्षिण

अफ्रीका के बीच खेला गया था। यह 2013 के बाद दूसरी बार मुंबई महानगर क्षेत्र में महिला क्रिकेट विश्व कप फाइनल आयोजित किया गया था और नवी मुंबई में पहली बार।

टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी टीम इंडिया ने निर्धारित 50 ओवरों में 298/7 रन का मजबुत स्कोर खड़ा किया, जो महिला विश्व कप फाइनल का दुसरा बड़ा स्कोर था। शेफाली वर्मा ने शानदार अंदाज में खलते हुए 78 गेंदो पर 87 रन की पारी खेली। यह उनका वन डे करियर का सर्वोच स्कोर था। भारत ने तेज शुरुआत की, जिसमें शेफाली वर्मा और स्मृति मंधाना ने पहले विकेट के लिए 100 रन की साझेदारी की।

शानदार लय में दिख रही मंधाना अर्धशतक से कुछ ही पीछे रह गईं, लेकिन वर्मा ने पारी को स्थिर बनाए रखा।

स्मृति मंधाना ने 45, हरमनप्रीत कौर ने 20, जेमिंमा ने 24, रिचा घोष ने 34 रनों का महत्वपूर्णँ योगदान दिया। दीप्ति शर्मा ने शानदार स्पेल से भारत के लिए पासा पलट दिया और तीन महत्वपूर्ण विकेट लिए,जिनमें दक्षिण अफ्रिका कप्तान लॉरा वोल्वार्डट का विकेट भी शामिल था। दीप्ति शर्मा एवं शेफाली वर्मा के फाइनल में शानदार प्रर्दशन से भारत ने महिला विश्व कप 52 रन से जीत लिया।

शेफाली वर्मा को उनके विस्फोटक अर्धशतक के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया जबकि दीप्ति को टूर्नामेंट की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया। यह भारत की पहली महिला विश्व कप खिताब जीत थी। भारत को आईसीसी से पुरस्कार राशि के रूप में रिकॉर्ड 6.58 मिलियन डॉलर और दक्षिण अफ्रीका को 3.24 मिलियन डॉलर प्राप्त हुए।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर पोस्ट करते हुए लिखा, "आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप 2025 के फाइनल में भारतीय टीम की शानदार जीत ! फाइनल में उनका प्रदर्शन अद्‌भुत कौशल और आत्मविश्वास से भरा रहा। टीम ने पूरे टूर्नामेंट में असाधारण टीम वर्क और दृढ़ता दिखाई। हमारी खिलाड़ियों को हार्दिक बधाई। यह ऐतिहासिक जीत भविष्य की चैंपियन खिलाड़ियों को खेलों में भाग लेने के लिए प्रेरित करेगी।"

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने अपनी बधाई संदेश में कहा, “विश्व विजेता टीम इंडिया को सलाम! यह राष्ट्र के लिए गर्व का क्षण है, जब हमारी बेटियों ने आईसीसी महिला विश्व कप 2025 अपने नाम किया है। आपकी शानदार क्रिकेट प्रतिभा ने लाखों लड़कियों के लिए प्रेरणा का मार्ग प्रशस्त किया है।”

कैबिनेट मिनिस्टर नितिन गडकरी ने लिखा, "हमारी अद्भुत लड़कियों ने ताक़तकवर ऑस्ट्रेलिया को हराकर फ़ाइनल में जगह बना ली। ये जीत उनके हौसले, जज़्बे और हुनर को दिखाती है। पूरी टीम को बहुत बहुत बधाई।"

क्रिकेट जगत की जानी-मानी हस्तियों ने भी भारत की जीत पर टीम और खिलाड़ियों को लगातार बधाइयाँ दी।

भारत की ऐतिहासिक जीत के बाद बीसीसीआई ने खिलाड़ियों, कोचिंग स्टाफ और सहायक कर्मचारियों के लिए ₹51 करोड़ के नकद पुरस्कार की घोषणा की। बाद में, 5 नवंबर 2025 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली स्थित अपने आवास पर टीम इंडिया को सम्मानित किया । 6 नवंबर 2025 को भारतीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन में टीम को सम्मानित किया । 4 नवंबर 2025 को टीम दिल्ली पहुंची और दिल्ली के ताज पैलेस में बस से पहुंची, जहां ढोल , नृत्य और केक काटकर दक्षिण अफ्रीका पर जीत का जश्न मनाया गया। उसी रात टीम ने नई दिल्ली में नरेंद्र मोदी से मुलाकात की और टीम के लिए एक विशेष स्टार एयर चार्टर फ्लाइट से उन्हें मुंबई से दिल्ली लाया गया।

2025 में भारतीय टीम ने पहली बार विश्व विजेता बनकर न सिर्फ खेल जगत बल्कि पूरे देश को गौरवान्वित कर दिया है। यह ऐतिहासिक जीत अब आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा का प्रतीक बन चुकी है।

<u>शतरंज का रोमांच</u>

श्री रौनक रॉय
लेखापरीक्षक

वैसे तो हम सब बहुत से खेल जानते हैं और खेलते आये हैं, परन्तु शतरंज एक ऐसा खेल है जिसे हर आयु और क्षेत्र के लोग बड़ी रूचि के साथ खेलते आए हैं। शतरंज एक बेहतरीन खेल है और इसकी शुरुआत भारत से मानी जाती है।

इस खेल को खेलने के कुछ नियम और तरीके होते हैं, जिसके आधार पर हम कोई भी खेल खेलते हैं। शतरंज एक चौकोर तख़्त पर खेला जाता है, जिस पर काले और सफेद रंग के 64 खाने बने होते हैं, इसे एक बार में दो लोग खेल सकते हैं और इस खेल में ढेर सारे मोहरे होते हैं जैसे कि हाथी, घोड़े, राजा, ऊँट आदि। इन सब की चालें भी पूर्व निर्धारित होती हैं जैसे कि-

(1) **राजा-** जो कि इस खेल का बहुत ही अहम भाग होता है और यह किसी भी दिशा में केवल एक कदम चलता है।

(2) **घोड़ा-** घोड़ा किसी भी दिशा मे 2 1/2 कदम चल सकता है।

(3) **सिपाही-** यह सदैव आगे कि ओर चलता है। कभी पीछे नहीं हटता और सामान्यतः यह एक कदम सीधा चलता है परंतु परिस्थिति के अनुसार इसके चाल में परिवर्तन आ जाता है जैसे कि काटना हो तो तिरछे में चल सकता है।

(4) **बिशप (ऊँट) -** यह हमेशा तिरछा चलता है, चाहे कोई भी दिशा हो।

(5) **हाथी-** यह हमेशा सीधी दिशा में चलता है।

(6) **रानी (वजीर)-** स्थान खाली होने पर यह किसी भी दिशा में चल सकता है।

इस खेल का मुख्य लक्ष्य विपक्ष को मात देना होता है। जिसके राजा कि मृत्यु पहले हो जाती है, वह खेल हार जाता है। यूं तो हर कोई इसे खेलता है, परंतु विश्वनाथन आनंद भारत के अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी हैं, जो कई बार विश्व विजेता रह चुके हैं। हाल ही में डी. गुकेश दिसंबर 2024 में फिडे शतरंज चैंपियनशीप जीतकर सबसे कम उम्र के विश्व शतरंज चैंपियन बने। हमारे देश के कुछ प्रसिद्ध शतरंज खिलाड़ियों में विश्वनाथन आनंद, डी. गुकेश, आर प्रग्नानंद, कोनेरु हंपी आदि शामिल हैं।

शतरंज एक ऐसा खेल है जिसमें भरपूर बुद्धि का उपयोग होता है। जितना ज्यादा आप अपने मस्तिष्क का उपयोग करेंगे उतना ही अधिक हमारे मस्तिष्क का विकास होता है। आजकल स्कूलों में शतरंज को स्पोर्ट्स डे के रूप में बड़े जोरों से बढ़ावा दिया जा रहा है।

"हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।"

- माखनलाल चतुर्वेदी

कार्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की कुछ झलकियां

आई.ए.एवं ए.डी. इंटर जोनल क्रिकेट टूर्नामेंट 2025-2026 के उद्घाटन समारोह की कुछ तस्वीरें।

आई.ए.एवं ए.डी. इंटर जोनल क्रिकेट टूर्नामेंट 2025-2026 की कुछ तस्वीरें।

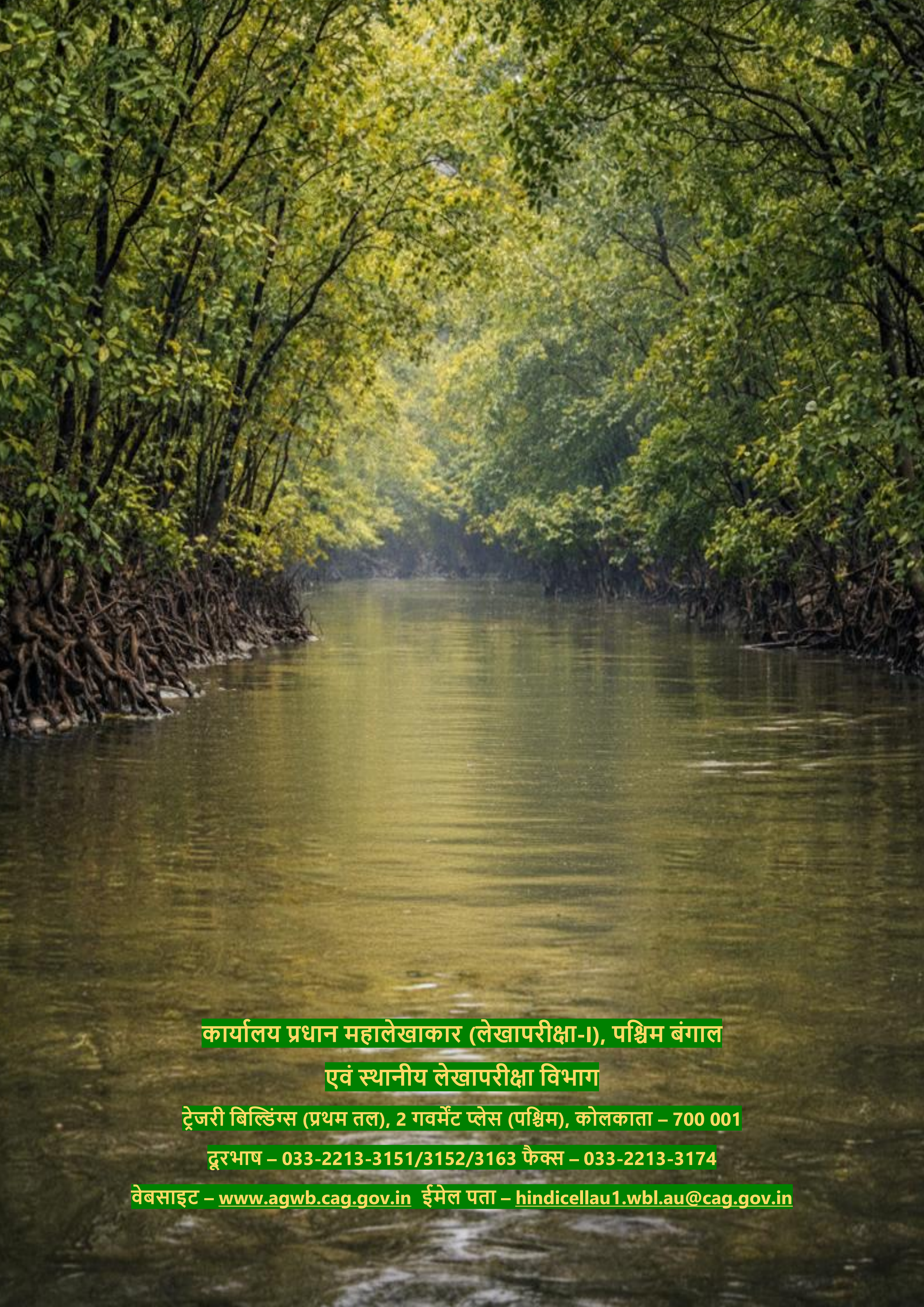

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल

एवं स्थानीय लेखापरीक्षा विभाग

ट्रेजरी बिल्डिंग्स (प्रथम तल), 2 गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता – 700 001

दूरभाष – 033-2213-3151/3152/3163 फैक्स – 033-2213-3174

वेबसाइट – www.agwb.cag.gov.in ईमेल पता – hindicellau1.wbl.au@cag.gov.in